CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कीर्त्ति कान्तः

ओ३म्

अष्टाध्यायी-प्रवेश

आर्षविद्यापुनरुद्धारकव्याकरणसूर्यगुरुवरस्वामिविरजानन्दाय
समर्प्यतेऽयं ग्रन्थः ।

आचार्यो बलदेवो नैष्ठिकः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

K.R.Sharma

ओ३म्

अष्टाध्यायी-प्रवेश

सम्मत्यर्थ

लेखक :
आचार्य बलदेव नैष्ठिक
आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा
जीन्द (हरयाणा)

प्रथमं संस्करणम् } श्रावणी २०४१ वि० { मूल्यम्
२००० } ११ अगस्त १९८४ ई० { पञ्च रूप्यकम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक—
आचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय
कालवा (जीन्द)

मूल्य ५-००

मुद्रक—
वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
दयानन्दमठ, रोहतक
फ़ोन : २८७४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथन

लगभग २६ वर्ष पूर्व १९५८ में मैं गुरुकुल झज्जर में सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य के रूप में कार्य कर रहा था तब ब्रह्मचारी बलदेव जी विद्युद्विभाग पंजाब की सेवा में झज्जर नगर में नियुक्त थे। अपने पूर्व प्रबल संकारों के कारण आपका मन सरकारी नौकरी से हट चुका था और आप त्यागपत्र देकर गुरुकुल झज्जर में आगये। आप गुरुकुल की सेवा के साथ-साथ अध्ययन तथा जीवन निर्माण का कार्य भी निरन्तर करते रहे। कुछ वर्ष गुरुकुल झज्जर से बाहर रहकर भी अध्ययन किया और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर १९६४ में पुनः गुरुकुल झज्जर में आकर मुख्याध्यापक का कार्यभार सम्भाल लिया। आपके साथ ब्र० इन्द्रदेव जी भी थे।

आप धुन के धनी, परिश्रमी तथा निष्ठावान् ब्रह्मचारी हैं। बी० ए० तक कालेज में पढ़ने के पश्चात् युवावस्था में आर्ष पथ के पथिक बने हैं और उस पर निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ते रहें यही मेरी कामना है।

'अष्टाध्यायी प्रवेश' पुस्तक से पूर्व आपने 'संस्कृत प्रवेश' पुस्तक भी लिखी थी और इसी प्रकार महाभाष्य प्रवेश पुस्तक लिखने का भी विचार रखते हैं। इस पुस्तक को पढ़कर विज्ञजन आपके पाण्डित्य तथा अनुभव का स्वयं अनुमान कर लेंगे। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं समझता।

अष्टाध्यायी प्रवेश के मुद्रण तथा प्रूफ संशोधन का कार्य मैंने यथाशक्ति यथामति ठीक करने का प्रयत्न किया है पुनरपि—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

आचार्य वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
दयानन्दमठ, रोहतक

श्रावणी २०४१ वि०
११ अगस्त १९८४ ई०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तावना

":अष्टाध्यायी प्रवेश" ग्रन्थ का प्रकाशन होते हुए देख हम सभी अध्ययनार्थियों को भारी हर्ष है। यह ग्रन्थ उन सभी छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी होगा जो महर्षि पाणिनि की सर्वोत्तम शैली से संस्कृत आर्ष व्याकरण शास्त्र के जिज्ञासु हैं। तपोनिष्ठ बाल ब्रह्मचारी पूज्य गुरुदेव आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक की पाणिनीय व्याकरण पढ़ाने की अद्भुत ही शैली है। यह ग्रन्थ उनके अनेक वर्ष पठनपाठनानुभव के परिणामस्वरूप फलीभूत हुआ है। इसके प्रकाशन में कई समस्यायें थीं। प्रथम तो पूज्याचार्य जी का जीवन इतना व्यस्त है कि जिसे देखते हुए इस ग्रन्थ का लेखन हो सकेगा ऐसा असम्भव सा लगता था। समस्त संसार से तटस्थ रहते हुए आचार्य जी ने आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन को ही अपना परम धर्म बनाया हुआ है। प्रातः सूर्योदय से लेकर रात्रि शयन पर्यन्त छात्रों को अष्टाध्यायी, महाभाष्य निरुक्तादि पढ़ाते रहना पूज्याचार्य जी की मुख्य दिनचर्या है। छात्रों के पाठ में न्यूनता करके अन्य किसी कार्य को करना आचार्य जी महापाप समझते हैं। ऐसी स्थिति में इस ग्रन्थ का लेखन बड़ा कठिन कार्य था। आगे ईश्वर कृपा से पूज्याचार्य जी का तप फलीभूत हुआ और उन्हीं के पढ़ाए कुछ सुयोग्य नैष्ठिक ब्रह्मचारियों का अध्यापनादि कार्यों में सहयोग प्राप्त होने लगा। पूज्याचार्य जी ने अपने अवकाश के एक एक क्षण को इस पुनीत कार्य में सुप्रयुक्त किया। तथा मैंने आचार्य जी द्वारा लिखित रफ कापी को देखकर उसके शुद्ध लेखन कार्य को प्रारम्भ किया। इस प्रकार यह कार्य कुछ समय में पूर्ण हो गया। तत्पश्चात् मैं कारणवश कुछ समय के लिये दिल्ली गया। इधर पूज्याचार्य जी ने संशोधित कापी का पुनः एक बार अवलोकन करके संशुद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय पश्चात् मेरे पास गुरुकुल के सुयोग्य ब्रह्मचारी ज्ञानचन्द जी का यह पत्र आया कि आचार्य जी इस ग्रन्थ का प्रकाशन शीघ्र करना चाहते हैं। अतः आप जब तक दिल्ली में हैं इसके लिये धन का प्रबन्ध करें। मैंने इसकी चर्चा अपने प्रिय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भक्त श्री जवाहरलाल जी कपूर से की। इन्होंने इस कार्य में बड़ी रुचि दिखाई तथा मेरा पर्याप्त उत्साह बढ़ाया। स्वयं इस ग्रन्थ के प्रकाशन में १२००) रु० का सात्विक दान दिया तथा अपने अन्य भी कुछ इष्ट मित्रों से सहयोग कराया। आप एक अत्यन्त उदार एवं धर्मनिष्ठ आर्य हैं। ऐसे ही उदारात्माओं से देश जाति एवं संस्कृति की रक्षा होती आ रही है। आप जहां दिल्ली वेद संस्थान का संरक्षण करते हैं वहां आर्ष गुरुकुल कालवा के प्रति भी आपकी अनन्य निष्ठा है। आगे हमने अपने जिस भी परिचित व्यक्ति से इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु सहयोग को कहा उसी ने ५००) या हजार रुपये के दान से सहयोग किया। अर्थ का कार्य इतनी शीघ्रता से पूर्ण हो जाएगा, इसके विषय में हमने सोचा भी नहीं था। वस्तुतः इस कार्य की सफलता में पूज्याचार्य जी के तप की ही प्रधानता है। धन का कार्य पूर्ण होते ही मैंने गुरुकुल में आचार्य जी के नाम पत्र भेजा कि अब ग्रन्थ की शीघ्र ही प्रेस कापी तैयार कराई जाये। पूज्याचार्य जी ने एक वार पुनः ग्रन्थ का सूक्ष्मावलोकन प्रारम्भ किया तथा गुरुकुल के सुयोग्य ब्रह्मचारी अखिलेश जी ने प्रेस कापी का लेखनकार्य प्रारम्भ किया। ब्रह्मचारी जी ने अपने उत्तम परामर्श से भी ग्रन्थ के सौंदर्य का वर्धन किया। इस विषयक ब्रह्मचारी अखिलेश जी का सहयोग सराहनीय है। इसके साथ ही गुरुकुल झज्जर के योग्यतम स्नातक पं० धर्मदेव जी मनीषी तथा गुरुकुल के अन्यान्य छात्र ब्र० विश्वदेव जी, ब्र० पूर्णानन्द जी ब्र० ज्ञानचन्द जी, ब्र० कृष्णदेव जी एवं सुद्युम्न जी आदि ब्रह्मचारियों ने भी अपने उत्तम परामर्श से इस बहुमूल्य ग्रन्थ के निर्माण में सहयोग किया। तदर्थ इन सभी सहयोगी महानुभावों एवं दानी जनों का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

जिस प्रकार अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं तथैव इस पुस्तक में आठ प्रकरणों द्वारा पाणिनीय व्याकरण शास्त्र में प्रवेश कराया गया है। प्रत्याहार, विभक्ति, समास, सूत्रार्थ प्रक्रिया, सिद्धि, वाच्य स्वरादि का ज्ञान अत्यन्त सरल सुष्ठु सुगम भाषा में स्पष्ट किया गया है। पुस्तक को केवल ध्यान देकर पढ़ने की आवश्यकता है। कारण व्याकरण ऐसा विषय है कि यदि पीछे का पाठ अपक्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है तो आगे प्रगति नहीं होगी। सामान्यतया पाणिनीय प्रवेश में छात्रों को कई मास लग जाते हैं, जैसा कि हमारा भी अपना कटु अनुभव है। परन्तु इस ग्रन्थ के पठन से अध्ययनार्थी संज्ञासूत्र, समास, विभक्ति, सिद्धि प्रक्रिया एवं अर्थादि करने की शैली से सम्यक् अवगत होकर शीघ्र ही व्याकरण में प्रविष्ट हो जायेगा। यद्यपि पाणिनीय प्रवेश आदि विषयक कई पुस्तकें मेरे दृष्टिपथ पर आईं, परन्तु अष्टाध्यायी प्रवेश विषयक इस शैली का कोई भी ग्रन्थ दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अतः हमारी दृष्टि में यह ग्रन्थ अभूतपूर्व है। इसके महत्त्व को पाणिनीय छात्र स्वयं समझ लेंगे। मेरी यह कामना है कि संस्कृत पठन-पाठन की प्रकृष्ट पाणिनीय पद्धति पुनः पुष्पित पल्लवित हो तथा संस्कृत भाषा अपने गौरव के अनुरूप पुनः विश्वभाषा बने। पाणिनीय संस्कृत व्याकरण की यह विशेषता है कि इसके परिश्रम पूर्वक अध्ययन से मनुष्य लौकिक एवं वैदिक दोनों ही शब्दों का पण्डित बन जाता है। इसी लिये विश्वगुरु महर्षि दयानन्द जी ने इसके पठन-पाठन पर अत्यधिक बल दिया। अनृषिकृत व्याकरणों के अध्ययन से मनुष्य लौकिक संस्कृत का भी पूर्ण पण्डित नहीं बन पाता। आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार से भूमण्डल में विलुप्त वेदविद्या का पुनः प्रखर प्रकाश प्रज्वलित हो उठे। जिसके शुभ्रतम दिव्यालोक से आलोकित हुए विश्व में पुनः सर्वतापनाशक प्राणिमात्र के पोषक आर्य चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य का अभ्युदय हो। अन्त में पुनः इस प्रकृष्ट ग्रन्थ के महान् लेखक पदवाक्यप्रमाणज्ञ महावैयाकरण पूज्याचार्य बलदेव जी नैष्ठिक के प्रति आभार प्रकट करते हैं। जिन्होंने इस ग्रन्थ के लेखन व निरीक्षण परीक्षण में घोर परिश्रम करके हम सभी संस्कृत जिज्ञासुओं पर अमित उपकार किया है। ओ३म् शम्।

वैशाख शुक्ल ३ शुक्र
वि० सं० २०४१
दिनांक : ४-५-१९८४ ई०

स्वामी श्रेयोनन्द
आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा
जीन्द (हरयाणा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सम्मति

मैंने श्री आचार्य बलदेव जी द्वारा रचित 'अष्टाध्यावी प्रवेश' नामक पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा है। पुस्तकस्थ विषयों में जो सरलीकरण दृष्टिगोचर होता है वह वस्तुतः सराहनीय है। श्री आचार्य प्रवर ने इस पुस्तक की रचना कर प्रकृष्ट एवं प्राच्य संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी पढ़ने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए एक बड़ा उपकार का कार्य किया है। वर्तमान में ऐसी पुस्तक की महती आवश्यता थी। जैसे अन्य भाषाविद् उस भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए उस भाषा में प्रवेश सम्बन्धी नित्य नई पुस्तकें लिखते हैं ऐसा ही प्रयास श्री आचार्य प्रवर का है जिन्होंने 'अष्टाध्यायी प्रवेश' नामक पुस्तक लिखकर इस दिशा में स्तुत्य कार्य किया है। वर्षों से अध्यापन अनुभव के आधार पर रचित इस पुस्तक के अध्ययन से पाठक पाणिनीय अष्टाध्यायी में सुगमता से प्रवेश पा जायेगा ऐसा पूर्ण विश्वास है।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
(भूतपूर्व पं० देवमित्र शास्त्री
संन्यास आश्रम, गाजियाबाद

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र
वि० सं० २०४१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सम्मति

श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक ने "अष्टाध्यायी प्रवेश" ग्रन्थ संस्कृत व्याकरण अध्येताओं के लिए अत्यधिक परिश्रम पूर्वक मनोवैज्ञानिक रीति से लिखा है। पूज्य आचार्य जी व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी, काशिका, महाभाष्यादि का १० वर्ष गुरुकुल झज्जर तथा यहाँ गुरुकुल कालवा में १३ वर्षों से अध्यापन कर रहे हैं। इतने लम्बे समय में श्रद्धेय आचार्य जी ने जो अनुभव प्राप्त किये हैं उसका इस ग्रन्थ में सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है। आचार्य जी महाराज से निवेदन है कि इसी प्रकार आगे भी व्याकरण का सरलीकरण करते रहें। जिससे छात्रगण पाणिनीय व्याकरण को सुगमता से शीघ्रातिशीघ्र हृदयङ्गम कर सकें। अन्त में भगवान् से प्रार्थना है आपकी आयु "भूयश्च शरदः शतात्"।

होलिकोत्सव — पं० धर्मदेव "मनीषी" व्याकरणाचार्य

दिनाङ्क १६-३-१९८४ — स्नातक—गुरुकुल झज्जर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

जिस प्रकार सुदृढ़ आधार पर न बना हुआ पर्याप्त दीर्घ ऊंचा एवं सुन्दर भवन भी जीवन के लिए संशयात्मक ही रहता है। इसी प्रकार मूलभूत व्याकरण के तत्वों को पूर्व जाने विना प्रथमावृत्ति से महाभाष्य तक का अध्ययन विद्यार्थी के लिए निराशाजनक ही रहता है। विद्यार्थियों की इस कठिनता को अनुभव करके "अष्टाध्यायी प्रवेश" पुस्तक लिखी है। पुस्तक कितनी लाभदायक है इसको स्वयं पाठक जान सकेंगे।

पुस्तक में निम्न बातों का ध्यान रखा गया है :—

१) प्रवेश सुन्दर हो। क्योंकि—Well begun half done. अर्थात् अच्छे आरम्भ होने से आधा कार्य समाप्त हो जाता है।

२) सरल भाषा में लिखने का यत्न किया है।

३) बीच-बीच में सरल उदाहरणों के द्वारा भी समझाया है।

४) जिन शब्दों या सिद्धान्तों को पूर्व जनाया है उन्हीं को आगे लिखा है

५) ऐसा यत्न किया है कि अध्यापक को कम परिश्रम करना पड़े एवं। प्रवीण विद्यार्थी स्वयं भी समझ जाए।

६) यदि अध्यापक इसे पूर्व पढ़ाकर "वृद्धिरादैच्" सूत्र से पढ़ाना आरम्भ करेंगे तो शीघ्र गति तथा समय व शक्ति की बचत होगी।

७) ऐसा यत्न किया है कि प्रवीण विद्यार्थी स्वयं समझ सके अथवा अध्यापक के थोड़े से संकेत से।

विद्यार्थी निम्न बातों का ध्यान रखे :—

१) आरम्भ में विद्यार्थी शीघ्रता न करें।

२) समझकर तथा स्मरण करके ही आगे बढ़े।

३) अध्यापक के निर्देश में प्रतिदिन पठित पाठ को सुनाता रहे।

४) पूर्व अपनी सञ्चिका में लिखे पुनः समझे या पढ़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृतज्ञता प्रकाशन

(१) स्वामी ओमानन्द जी महाराज—जिस तपोमूर्ति ने जीवन की धारा को मोड़कर मुझे इस रूप में खड़ा किया।

(२) पं० सुदर्शनदेव जी—जिस विद्यानिधि ने बातचीत में ही प्रत्याहार सूत्र पढ़ाकर एवं व्याकरण का महत्त्व दर्शाकर व्याकरण के लिए प्रवृत्त किया। आगे भी आपका सहयोग मिलता रहा।

(३) आचार्य देवमुनि जी, गुरु शंकरदेव जी एवं पं० राजवीर जी—जिन आचार्यों की कृपा से प्रथमावृत्ति से महाभाष्य तक का सफल अध्ययन किया।

(४) पं० महावीर जी मीमांसक—जिस दार्शनिक बुद्धि ने न्यायादि दर्शनों को पढ़ाया।

(५) आचार्य रामप्रसाद जी एवं स्वामी ब्रह्ममुनि जी—जिन सत्करणीय विद्वानों से निरुक्त पढ़ा एवं वेदार्थ सम्बन्ध में प्रकाश प्राप्त किया।

(६) भक्त बृजमोहनलाल जी—जिस विद्याप्रिय महात्मा ने पढ़ते समय पूर्ण आर्थिक व्यवस्था की।

(७) भक्त दरयावसिंह जी—जिस परोपकारप्रिय ने जीप यान शिक्षा के साथ साथ पर्याप्त अनुभव सामग्री भी प्रदान की।

इन सभी उपकारकर्त्ताओं एवं अन्य सभी अलिखित सहयोगियों के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

बलदेव नैष्ठिक
आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा
जीन्द (हरयाणा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकरण सूचीपत्रम्

प्रकरण	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम प्रकरणम्	सामान्य प्रकरणम्	१
द्वितीय प्रकरणम्	प्रत्याहार प्रकरणम्	३
तृतीय प्रकरणम्	अनुवृत्ति, पदच्छेद, विभक्ति प्रकरणम्	११
चतुर्थ प्रकरणम्	समास प्रकरणम्	२७
पञ्चम प्रकरणम्	अर्थ प्रकरणम् (संज्ञाविषय)	३६
षष्ठ प्रकरणम्	सिद्धिप्रकरणम् (प्रथमद्वितीयभागः)	६१
सप्तम प्रकरणम्	वाच्य प्रकरणम्	६८
अष्टम प्रकरणम्	स्वर प्रकरणम्	१००
	संज्ञा सूचीपत्रम्	१०४
	शुद्धि सूचीपत्रम्	१०६
	दान सूचीपत्रम्	१०७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में दान देने वाले सहयोगी महानुभावों की नामावली

१- श्री जवाहरलाल जी कपूर कोषाध्यक्ष वेदसंस्थान नई दिल्ली ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में १२००) रु०

२- साधनामयी माता कैलाशवती ओहरी धर्मपत्नी श्री शंकरदास ओहरी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में १०००) रु०

३- ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम में अनेक वर्षों से साधनारत तपोमयी माता शकुन्तला आनन्द ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में ५००) रु०

४- यज्ञ एवं सत्संग प्रेमी श्री महाराजकृष्ण कपूर वेद संस्थान नई दिल्ली के आजीवन सदस्य ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में ५००) रु०

५- पूज्य महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ के सुयोग्य शिष्य महात्मा चयनमुनि जी, तपोवन, देहरादून ने ५००) रु०

६- स्वर्गीय स्वामी विज्ञानानन्द जी सरस्वती वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक की सुयोग्या सुपुत्री माता वेदप्रभा डावर ने ५०१) रु०

७- वेद योग एवं संस्कृत के प्रति समर्पित साधक स्वामी श्रेयोनन्द ५००) रु०

८- धर्मपरायणा माता श्रीमती विद्यावती व्योत्रा ५००) रु०

९- सरलता की साक्षात् मूर्ति महात्मा मनुदेव जी आर्य भूतपूर्व व्यवस्थापक वेदसंस्थान नई दिल्ली तथा उनकी धर्मपरायणा भगिनी श्रीमती माता शान्तिदेवी आर्या दतिया निवासिनी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में ५०१) रु०

१०- समुदार सेठ श्री लक्ष्मणदास अरोड़ा नई दिल्ली ५००) रु०

११- आर्य श्रेष्ठी श्री पुष्करलाल आर्य, कलकत्ता निवासी ५००) रु०

इन सभी दानी महानुभावों की उदारता हेतु धन्यवाद। अन्य भी समस्त सहयोगियों के लिये हार्दिक शुभकामना।

आपका शुभचिन्तक
बलदेव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओ३म्

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। (यजु० २५.१९)

अष्टाध्यायी प्रवेश

प्रथमप्रकरणम्

सामान्यप्रकरणम्

प्रश्न– अष्टाध्यायी किसे कहते हैं ?

उत्तर– आठ अध्यायों वाली पुस्तक का नाम अष्टाध्यायी है ।

प्रश्न– अष्टाध्यायी में क्या है ?

उत्तर– व्याकरण के सूत्र ।

प्रश्न– व्याकरण किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिससे शब्द शुद्ध किये जायें उसे व्याकरण कहते हैं । व्याकरण के ज्ञान के बिना विद्यार्थी प्रकाशनादि की त्रुटि के कारण पुस्तक में लिखित अशुद्ध शब्द को भी घोट लेता है, तथा उस शब्द को पत्रादि में लिखकर अथवा विद्वानों के सम्मुख बोलकर उपहास का पात्र बनता है । अतः व्याकरण अवश्य पढ़ना चाहिये ।

प्रश्न– सूत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर– संक्षिप्त नियम को सूत्र कहते हैं । व्याकरण के सूक्ष्म नियम व्याकरण के सूत्र कहलाते हैं ।

प्रश्न– अष्टाध्यायी किसने बनाई है ?

उत्तर– परोपकारप्रिय एवं सकल शास्त्रों के ज्ञाता महर्षि पाणिनि ने ।

प्रश्न– अष्टाध्यायी के प्रत्येक अध्याय में कितने पाद हैं ?

उत्तर– प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं । इस प्रकार सब मिलकर पूरी अष्टाध्यायी में ३२ पाद हैं ।

प्रश्न– प्रत्येक पाद में कितने सूत्र हैं, एवं कुल मिलाकर सारे सूत्रों की संख्या कितनी है ?

उत्तर– इसे निम्न तालिका से जानो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टाध्यायी

अध्याय:	प्रथम: पाद:	द्वितीय: पाद:	तृतीय: पाद:	चतुर्थः पादः	सूत्र संख्या योग
प्रथमोऽध्याय:	७४	७३	९३	१०९	३४९
द्वितीयोऽध्याय:	७१	३८	७३	८५	२६७
तृतीयोऽध्याय:	१५०	१८८	१७६	११७	६३१
चतुर्थोऽध्याय:	१७६	१४४	१६६	१४४	६३०
पञ्चमोऽध्याय:	१३५	१४०	११९	१६०	५५४
षष्ठोऽध्याय:	२१८	१९८	१३८	१७५	७२९
सप्तमोऽध्याय:	१०३	११८	११९	९७	४३७
अष्टमोऽध्याय:	७४	१०८	११९	६७	३६८
	प्रतिज्ञासूत्र	१	प्रत्याहार सूत्राणि १४		१५

कुल योग ३९८०

तीन हजार नौ सौ अस्सी

प्रश्न- अध्याय पाद एवं सूत्र को संक्षेप में कैसे लिखें ?

उत्तर- इनको क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय संख्या से जानें। प्रथम संख्या अध्याय के लिए, द्वितीय पाद के लिए और तृतीय सूत्र के लिए जावें. जैसे किसी ने कहा '४।३।५३' सूत्र निकालो, तो हमें चौथे अध्याय के तीसरे पाद का तिरेपनवां सूत्र 'तत्र भवः" निकालना चाहिए। इसी प्रकार '१.१।१' कहने पर प्रथम अध्याय के प्रथम पाद का पहला सूत्र "वृद्धिरादैच्" को जानना चाहिये। एवमेव अन्यत्र भी समझना चाहिये।

प्रतिज्ञासूत्र– अथ शब्दानुशासनम्

प्रश्न- 'अथ' शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर- अथ शब्द अधिकार को सूचित करता है, अर्थात् शब्दानुशासन का अधिकार (विषय) इससे आगे जानें।

प्रश्न- शब्दानुशासन किसे कहते हैं ?

उत्तर- शब्दानुशासन व्याकरण को कहते हैं।

इति सामान्य प्रकरणम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीयप्रकरणम्

प्रत्याहार–प्रकरणम्

प्रत्याहारसूत्राणि

१- अ इ उ ण्।	६- ल ण्।	११ ख फ छ ठ थ च ट त व्
२- ऋ लृ क्।	७- ञ म ङ ण न म्।	१२- क प य्।
३- ए ओ ङ्।	८ झ भ ञ्।	१३- श ष स र्।
४- ऐ औ च्।	९- घ ढ ध ष्	१४- ह ल्।
५- ह य व र ट्	१० ज ब ग ड द श्।	

॥ इति चतुर्दश प्रत्याहारसूत्राणि ॥

इन चौदह सूत्रों को प्रत्याहार सूत्र कहते हैं।

प्रश्न- प्रत्याहार किसे कहते हैं ?

उत्तर- वर्ण आदि के सूक्ष्मरूप का नाम 'प्रत्याहार' है। जैसे "अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ" इन सभी स्वर-वर्णों का संक्षिप्त रूप अच् (प्रत्याहार) है। इसी प्रकार 'क' से लेकर 'म' तक के स्पर्श-व्यञ्जन, तथा 'य र ल व' अन्तस्थ व्यञ्जन एवं श ष स ह उष्म-व्यञ्जन ये सभी ३३ व्यञ्जन- वर्ण, हल् प्रत्याहार कहने से गृहीत हो जाते हैं। इसी प्रकार अल् प्रत्याहार से समस्त स्वरों तथा व्यञ्जनों का ग्रहण होता है।

जैसे लोक में सहस्रों मनुष्यों को (सेनादि में) अविलम्ब बुलाने के लिए आदि अन्त के द्वारा संकेत किया जाता है। इसी प्रकार वर्णों का, प्रत्याहार विधि से सूक्ष्म रूप बनाकर पाणिनि जी महाराज नें भाषा वैज्ञानिकों को दांतों तले उंगली दबाने के लिए बाधित किया है।

आवश्यक संकेत—निम्न चार प्रश्नोत्तरों को ध्यान से पढ़ें। आगे इसी विषय का पुनरवलोकन कराया है; वहां पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा।

प्रश्न-१ प्रत्याहार किस प्रकार बनाये जाते हैं ?

उत्तर- आदिरन्त्येन सहेता, अर्थात् आदि वर्ण अन्तिम इत् वर्ण के साथ मिलकर प्रत्याहार बनाता है।

प्रश्न-२ इत् किसे कहते हैं ?

उत्तर- इत् व्याकरण शास्त्र में वर्ण का एक नाम है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न-३ इत् संज्ञा का प्रयोजन क्या है ?

उत्तर- तस्य लोपः (१.३.९) अर्थात् जिस वर्ण का नाम इत् होता है उसका लोप हो जाता है।

प्रश्न-४ लोप किसे कहते हैं ?

उत्तर- अदर्शनं लोपः (१.१.५९) अर्थात् दिखाई न देने का नाम लोप है। जैसे 'अ इ उ ण्' इस प्रत्यहार सूत्र में 'ण्' की इत् संज्ञा होने से इस 'ण्' का लोप हो जाता है और अण् प्रत्याहार कहने से केवल अ इ उ का ही ग्रहण होता है।

ऊपर लिखित प्रक्रिया के अनुसार प्रत्याहार बनाने की विधि का पुनः अवलोकन—

'अ इ उ ण्' इस प्रत्याहार सूत्र में आदि वर्ण 'अ' अन्तिम इत् संज्ञक 'ण्' के साथ मिलकर अण् प्रत्याहार बनाता है।

प्रश्न- अण् प्रत्याहार में किन-किन वर्णों को लिया जाता है ?

उत्तर- 'अ इ उ' को। अर्थात् आदि 'अ' और बीच वाले 'इ उ' वर्णों का ग्रहण होगा। ण् का नहीं।

प्रत्याहार सूत्र—अ इ उ ण्

प्रत्याहार—अण्

वर्ण—अ, इ, उ

प्रश्न- अन्तिम ण् वर्ण का ग्रहण क्यों नहीं होता है ?

उत्तर- अन्तिम ण् का अदर्शन होने से।

प्रश्न- 'ऋ ऌ क्' इस प्रत्याहार सूत्र के द्वारा कौन से प्रत्याहार बनाये जाते हैं ?

उत्तर- "अक्, इक्, उक्," ये तीन।

प्रश्न- 'अ इ उ' ये वर्ण ऋ ऌ क् के आदि में नहीं आते ? पुनः इनके द्वारा उपरिलिखित प्रत्याहार कैसे बने ?

उत्तर- आदि का अभिप्राय इत् वर्ण से पहले से है चाहे वह उसी सूत्र में हो अथवा पूर्व आने वाले प्रत्याहार सूत्रों में से हो। इस नियम से उपरिलिखित प्रत्याहार एवं अन्य तालिका में प्रदर्शित प्रत्याहार बने।

प्रश्न- कुल कितने प्रत्याहार हैं ? तथा उनके क्या क्या उदाहरण हैं ?

उत्तर- इसे निम्न लिखित तालिका से जानो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्याहार तथा उनमें ग्रहण किये जाने वाले वर्णों का सूत्रोदाहरण सहित वर्णन;-

प्रत्याहार-सूत्र	प्रत्याहार	वर्ण	उदाहरण
१. अ इ उ ण्	१- अण्	अ इ उ	उरण् रपरः (१।१।५०)
२. ऋलक्	१- अक्	अ इ उ ऋ लृ	अकः सवर्णे दीर्घः (६।१।९७)
	२- इक्	इ उ ऋ लृ	इको यणचि (६।१।७५)
	३. उक्	उ ऋ लृ	उगितश्च (४।१।६)
३. एओङ्	१- एङ्	ए ओ	एङः पदान्तादति (६।१।१०६)
४. ऐ औच्	१- अच्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ	अचोऽन्त्यादि टि (१।१।६३)
	२- इच्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ	इच् एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (६।३।६७)
	३- एच्	ए ओ ऐ औ	एचोऽयवायावः (६।१।७६)
	४- ऐच्	ऐ औ	वृद्धिरादैच् (१।१।१)
५. हयवरट्	१- अट्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र	अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि (८।४।२)
६. लण्	१- अण्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल	अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः (१।१।६८)
	२- इण्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल	इण्कोः (८।३।५७)
	३- यण्	य व र ल	इको यणचि (६।१।७५)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्याहार-सूत्र	प्रत्याहार	वर्ण	उदाहरण
७. ञ म ङ ण न म्	१- अम्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न	पुमः खय्यम्परे (८।३।६)
	२- यम्	य व र ल ञ म ङ ण न	हलो यमां यमि लोपः (८।४।६३)
	३- ङम्	ङ ण न	ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् (८।३।३२)
	४- ञम्	ञ म ङ ण न	ञमन्ताड्डः (उणा० १।११४)
८. झ भ ञ्	१- यञ्	य व र ल ञ म ङ ण न झ भ	अतो दीर्घो यञि (७।३।१०१)
९. घ ढ ध ष्	१- झष्	झ भ घ ढ ध	झषस्तथोर्धोऽधः (८।२।४०)
	२- भष्	भ घ ढ ध	एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (८।२।३७)
१०- ज ब ग ड द श्	१- अश्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द	भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि (८।३।१७)
	२- हश्	ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द	हशि च (६।१।११४)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्याहार-सूत्र	प्रत्याहार	वर्ण	उदाहरण
	३- वश्	व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द	नेड्वशि कृति (७।२।८)
	४- झश्	झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द	झलां जश् झशि (८।४।५२)
	५- जश्	ज ब ग ड द	झलां जशोऽन्ते (२।१।३९)
	६- बश्	ब ग ड द	एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (८।२।३७)
११. खफछठथचटतव्	१- छव्	छ ठ थ च ट त	नश्छव्यप्रशान् (८।३।७)
१२- कपय्	१- यय्	य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (८।४।५७)
	२- मय्	म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प	मय उञो वो वा (८।३।३३)
	३- झय्	झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प	झयो होऽन्यतरस्याम् (८।४।६१)
	४- खय्	ख फ छ ठ थ च ट त क प	पुमः खय्यम्परे (८।३।६)
	५- चय्	च ट त क प	चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेः (वार्तिक सूत्र)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

प्रत्याहार-सूत्र	प्रत्याहार	वर्ण	उदाहरण
१३- श ष स र्	१- यर्	य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (८।४।४४)
	२- झर्	झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स	झरो झरि सवर्णे (८।३।६४)
	३- खर्	ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स	खरि च (८।४।५४)
	४- चर्	च ट त क प श ष स	अभ्यासे चर्च (८।४।५३)
	५- शर्	श ष स	शरोऽचि च (८।४।४८)
१४. हल्	१- अल्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह	अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (१।१।६४)
	२- हल्	ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श स ह	हलन्त्यम् (१।३।३)

ग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्याहार-सूत्र	प्रत्याहार	वर्ण	उदाहरण
	३- वल्	व र ल य म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह	लोपो व्योर्वलि (६।१।६४)
	४- रल्	र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह	रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च (१।२।२६)
	५- झल्	झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह	झलो झलि (८।२।२६)
	६- शल्	श ष स ह	शल इगुपधादनिटः क्सः (३।१।४५)

अष्टाध्यायी सूत्रों में प्रयुक्त प्रत्याहार = ४१
उणादि कोष में प्रयुक्त प्रत्याहार = १
वार्त्तिक कोष में प्रयुक्त प्रत्याहार = १
सर्वयोग ४३ प्रत्याहार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- क्या ४३ प्रत्याहार ही बन सकते हैं ?

उत्तर- प्रत्याहार तो अनेक बन सकते हैं, परन्तु जिन प्रत्याहारों की सूत्रों में आवश्यकता थी उतने ही बनाये हैं। जैसे एक मनुष्य के पास २००० मनुष्य कार्य करने वाले हैं, उसके पास १० कार्य हैं, तो वह उन मनुष्यों को १० भागों में कार्यानुसार बाँटेगा जबकि अनेक भाग बनाये जा सकते हैं।

प्रश्न- क्या अष्टाध्यायी में प्रत्याहार, प्रत्याहारसूत्रोक्त वर्णों के ही बनते हैं अथवा प्रत्यय आदि के भी ?

उत्तर- प्रत्यय आदि के भी बनते हैं जैसे-सुप्, तिङ् इत्यादि, इनको आगे विभक्ति प्रकरण में विस्तार से समझाया जायेगा।

संकेत:- किस प्रत्याहार सूत्र से कौन कौन से प्रत्याहार बनते हैं; तथा किन किन सूत्रों में उनका प्रयोग आता है। विद्यार्थी स्मरण करें।

अभ्यास

१- कपय्, लण्, हयवरट् सूत्रों से बने प्रत्याहार एवं उनके अन्तर्गत गृहीत होने वाले वर्णों को लिखो।

२- चय्, इण्, अण् प्रत्याहार किन सूत्रों से बनते हैं ?

३- अच्, हल् एवं अल् प्रत्याहारों में कितने वर्ण आते हैं ?

४- प्रत्याहार तथा प्रत्याहारसूत्रों में क्या अन्तर है ?

५- छव्, रल्, खय्, यञ् प्रत्याहारों के उदाहरणसूत्र लिखो।

इति प्रत्याहारप्रकरणम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयप्रकरणम्

अनुवृत्ति–पदच्छेद–विभक्तिप्रकरणम्

प्रत्याहार सूत्रों के पश्चात् "वृद्धिरादैच्" आदि सूत्रपाठ आरम्भ होता है। अतः अब सूत्र की व्याख्या के सम्बन्ध में वर्णन किया जाता है।

सूत्र की व्याख्या निम्न ७ प्रकार से की जाती है—

१- अनुवृत्ति, २- पदच्छेद ३- विभक्ति, ४-समास, ५–अर्थ, ६- उदाहरण, ७– सिद्धि।

इस प्रकरण में अनुवृत्ति पदच्छेद एवं विभक्ति के विषय में ही बताया जायेगा, शेष आगे।

१. अनुवृत्ति

प्रश्न- अनुवृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर- सूत्र में आने वाले शब्दों का आगे आने वाले सूत्र से सम्बन्ध हो जाना "अनुवृत्ति" कहलाता है।

जैसे– "वृद्धिरादैच्" सूत्र में प्रोक्त 'वृद्धिः' शब्द का तथा "अदेङ्गुणः" में उक्त 'गुणः' शब्द का सम्बन्ध "इको गुणवृद्धी' सूत्र में होना।

एवं "तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्" सूत्र के सब शब्दों का सम्बन्ध 'नाज्झलौ' में होना।

तथैव "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र में उच्चारित "प्रगृह्यम्' शब्द का सम्बन्ध 'अदसो मात्' से लेकर 'ईदूतौ च सप्तम्यर्थे' तक होता है। इसी प्रकार अनुवृत्ति के महत्त्व तथा कार्य को सर्वत्र समझें।

प्रश्न- अनुवृत्ति ज्ञान से क्या लाभ होता है?

उत्तर- पाणिनि जी की अष्टाध्यायी के अनुसार सूत्रार्थ करने में दो प्रकार के पद पाये जाते हैं। एक तो उसी सूत्र के; दूसरे ऊपर के सूत्रों से आये हुए। ऊपर से होने वाले अनुवृत्ति पद का ज्ञान होना अर्थ के लिए नितान्त आवश्यक है। उसके बिना वृत्ति रटने का भारी परिश्रम करना, पाणिनि महर्षि की तपस्या की हत्या, तथा अपने समय का अपव्यय करना है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- अधिकार तथा अनुवृत्ति में क्या भेद है ?

उत्तर-१ अधिकार सूत्र, अन्य सूत्रों में दूर तक जाता है। अनुवृत्ति कुछ ही सूत्रों में ।

२ अधिकार सूत्र अपने यहां कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं करता, अनुवृत्ति अपने यहां भी प्रयोजन सिद्ध करती है और अन्यत्र भी ।

३ अधिकारार्थ प्रोक्त सम्पूर्ण सूत्र, अगले सूत्रों में जाता है, परन्तु अनुवृत्ति अधिकतर सूत्र के किसी एक भाग की होती है और कहीं कहीं सम्पूर्ण की भी जैसे- 'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्' इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति नाज्झलौ में आती है ।

प्रसिद्ध अधिकार सूत्र

१- कारके	(१।४।२३)	इसका अधिकार (१।४।५५) तक जाता है ।
२- प्राक्कडारात् समासः	(२।१।३)	,, ,, (२।२।३८) ,, ,, ,,
३· सह सुपा	(२।१।४)	इसका भी अधिकार (२।२।३८) तक है ।
४- अव्ययीभावः	(२।१।५)	” ” (२।१।२०) ” ”
५- अनभिहिते	(२।३।१)	” ” २।३ की समाप्ति तक ।
६- आर्धधातुके	(२।४।३५)	” ” (२।४।५७) तक
७- प्रत्ययः	(३।१।१)	इन दोनों का अधिकार पांचवें अध्याय
८- परश्च	(३।१।२)	की समाप्ति तक जाता है ।
९- धातोः	(३।१।९१)	इसका अधिकार (३।४।११७) तक
१०- कृत्याः	(३।१।९५)	” ” (३।१।१३३) से पहले २
११ ङ्याप्प्रातिपदिकात्	(४।१।१)	” ” पांचवें अध्याय की समाप्ति तक
१२- तद्धिताः	(४।१।७६)	इसका भी (५।४।१६०) तक
१३· समासान्ताः	(५।४।६८)	” ” (५।४।१६०) तक
१४- संहितायाम्	(६।१।७०)	इसका अधिकार (६।१।१५२) तक
१५- अङ्गस्य	(६।४।१)	” ” सातवें की समाप्ति तक
१६- आर्धधातुके	(६।४।४६)	” ” (६।४।६९) तक
१७- पदस्य	(८।१।१६)	” ” (८।३।५४) ”
१८- पदात्	(८।१।१७)	” ” (८।१।६९) तक
१९ पूर्वत्रासिद्धम्	(८।२।१)	” ” अष्टाध्यायी समाप्ति (८।४।६७) तक
२०- अपदान्तस्य मूर्द्धन्यः	(८।३।५५)	” ” (८।३।११९) तक जाता है

इति संक्षिप्ताधिकार-सूत्र-निदर्शनम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यास अनुवृत्ति

सूत्र १- वृद्धिरादैच् ।
अनुवृत्ति- नहीं
सूत्र २- अदेङ्गुणः ।
अनु० नहीं
सू० ३- इको गुणवृद्धी ।
अनु० वृद्धिः, गुणः
सू० ४- न धातुलोप आर्धधातुके
अनु० इको गुणवृद्धी
सूत्र ५ क्ङिति च ।
अनु० न, इको गुणवृद्धी
सू० ६- दीधीवेवीटाम् ।
अनु० न, इको गुणवृद्धी
सू० ७- हलोऽनन्तराः संयोगः ।
अनु० नहीं
सू० ८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः
अनु० नहीं
सू० ९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ।
अनु० नहीं
सू० १० नाज्झलौ ।
अनु० तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
सू० ११ ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ।
अनु० नहीं
सू० १२ अदसो मात् ।
अनु० ईदूत्, प्रगृह्यम्
सू० १३ शे ।
अनु० प्रगृह्यम्
सू० १४ निपात एकाजनाङ्
अनु० प्रगृह्यम्
सू० १५ ओत् ।
अनु० प्रगृह्यम्, निपातः,

सू० १६ सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ।
अनु० प्रगृह्यम् , ओत्
सू० १७ उञ ऊँ ।
अनु० प्रगृह्यम् , शाकल्यस्येतावनार्षे,
सू० १८ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ।
अनु० प्रगृह्यम्
सू० १९ दाधा घ्वदाप् ।
अनु० नहीं
सू० २० आद्यन्तवदेकस्मिन् ।
अनु० नहीं
सू० २१ तरप्तमपौ घः ।
अनु० नहीं
सू० २२ बहुगणवतुडति संख्या ।
अनु० नहीं
सू० २३ ष्णान्ता षट् ।
अनु० संख्या
सू० २४ डति च ।
अनु० संख्या, षट्,
सू० २५ क्तक्तवतू निष्ठा ।
अनु० नहीं
सू० २६ सर्वादीनि सर्वनामानि ।
अनु० नहीं
सू० २७ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ।
अनु० सर्वादीनि सर्वनामानि
सू० २८ न बहुव्रीहौ ।
अनु० सर्वादीनि सर्वनामानि
सू० २९ तृतीयासमासे
अनु० सर्वादीनि सर्वनामानि, न,
सू० ३० द्वन्द्वे च
अनु० सर्वादीनि सर्वनामानि, न,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सू० ३१ विभाषा जसि ।
अनु० सर्वादीनि सर्वनामानि, न, द्वन्द्वे,
सू० ३२ प्रथमचरमतयाल्पार्द्धकतिपयनेमाश्च ।
अनु० सर्वनामानि, विभाषा जसि,
सू० ३३ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ।
अनु० सर्वनामानि, विभाषा जसि,
सू० ३४ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।
अनु० सर्वनामानि, विभाषा जसि,
सू० ३५ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः
अनु० सर्वनामानि विभाषा जसि,
सू० ३६ स्वरादिनिपातमव्ययम् ।
अनु० नहीं
सू० ३७ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ।
अनु० अव्ययम्
सू० ३८ कृन्मेजन्तः ।
अनु० अव्ययम्
सू० ३९ क्त्वातोसुन्कसुनः ।
अनु० अव्ययम्
सू० ४० अव्ययीभावश्च ।
अनु० अव्ययम्
सू० ४१ शि सर्वनामस्थानम् ।
अनु० नहीं
सू० ४२ सुडनपुंसकस्य ।
अनु० सर्वनामस्थानम्
सू० ४३ न वेति विभाषा ।
अनु० नहीं
सू० ४४ इग्यणः सम्प्रसारणम् ।
अनु० नहीं

सू० ४५ आद्यन्तौ टकितौ ।
अनु० षष्ठी
सू० ४६ मिदचोऽन्त्यात्परः ।
अनु० नहीं
सू० ४७ एच इग्घ्रस्वादेशे ।
अनु० नहीं
सू० ४८ षष्ठी स्थानेयोगा ।
अनु० नहीं
सू० ४९ स्थानेऽन्तरतमः ।
अनु० षष्ठी स्थाने
सू० ५० उरण् रपरः ।
अनु० षष्ठी, स्थाने
सू० ५१ अलोऽन्त्यस्य ।
अनु० षष्ठी, स्थाने ।
सू० ५२ ङिच्च ।
अनु० अलः, अन्त्यस्य. षष्ठी स्थाने ।
सू० ५३ आदेः परस्य ।
अनु० अलः, षष्ठी, स्थाने ।
सू० ५४ अनेकाल्शित्सर्वस्य ।
अनु० षष्ठी, स्थाने
सू० ५५ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।
अनु० नहीं
सू० ५६ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ।
अनु० स्थानिवदादेशः
सू० ५७ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ।
अनु० अचः परस्मिन्, स्थानिवत् आदेशः ।
सू० ५८ द्विर्वचनेऽचि ।
अनु० अचः स्थानिवदादेशः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सू० ५९ अदर्शनं लोपः।
अनु० इति
सू० ६० प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः।
अनु० अदर्शनम्, इति
सू० ६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्
अनु० नहीं
सू० ६२ न लुमताङ्गस्य।
अनु० प्रत्ययलोपे, प्रत्ययलक्षणम्
सू० ६३ अचोऽन्त्यादि टि।
अनु० नहीं
सू० ६४ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा।
अनु० नहीं
सू० ६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य।
अनु० नहीं
सू० ६६ तस्मादित्युत्तरस्य
अनु निर्दिष्टे

सूत्र ६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा
अनु० नहीं
सू० ६८ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
अनु० स्वं रूपम्
सू० ६९ तपरस्तत्कालस्य।
अनु० सवर्णस्य, स्वं रूपम्
सू० ७० आदिरन्त्येन सहेता।
अनु० स्वं, रूपम्
सू० ७१ येन विधिस्तदन्तस्य।
अनु० स्वं रूपम्
सू० ७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्।
अनु० नहीं
सू० ७३ त्यदादीनि च।
अनु० वृद्धम्
सू० ७४ एङ् प्राचां देशे।
अनु० यस्याचामादि, वृद्धम्।

अभ्यास

१. इको गुणवृद्धो, ष्णान्ता षट्, ओत्, द्विर्वचनेऽचि, त्यदादीनि च सूत्रों में अनुवृत्ति बताओ।

२. ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्, वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् सर्वादीनि सर्वनामानि सूत्रों से क्रमशः प्रगृह्यम्, वृद्धम्, सर्वनामानि पदों की अनुवृत्ति कहां तक जाती है लिखो।

३. अनुवृत्ति किसे कहते हैं ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२- पदच्छेद

प्रश्न- पदच्छेद किसे कहते हैं ?

उत्तर- सूत्र में आने वाले पदों को भिन्न २ करना पदच्छेद कहलाता है।

जैसे- सूत्र-वृद्धिरादैच्। पदच्छेद- वृद्धिः+आदैच्।

प्रश्न- वृद्धिः, यह पद सूत्र में 'वृद्धिर्' ऐसा रेफान्त है पदच्छेद होने पर विसर्गान्त कैसे हुआ ?

उत्तर- सन्धि नियम से।

सूत्र- अदेङ्गुणः। पदच्छेद- अदेङ्+गुणः।

सूत्र- इको गुणवृद्धी। पदच्छेद-इकः+गुणवृद्धी।

संकेत- सूत्र में 'इकः' के स्थान पर पूर्ववत् सन्धि नियम से 'इको' बना।

सूत्र- न धातुलोप आर्धधातुके।

पदच्छेद- न+धातुलोपे+आर्धधातुके। यहां पर भी पदच्छेद में प्रदर्शितधातुलोपे' शब्द को सूत्र में सन्धि नियम से 'धातुलोप' ऐसा हुआ।

सूत्र- क्ङिति च। पदच्छेद- क्ङिति+च।

सू० दीधीवेवीटाम्। पद० दीधीवेवीटाम् (सारा सूत्र ही एक पद है)

सू० हलोऽनन्तराः संयोगः। पदच्छेद- हलः+अनन्तराः+संयोगः। (सन्धि नियम से ही 'हलः+अनन्तराः' पदों को सूत्र में 'हलोऽनन्तराः' हो गया है)

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।

पदच्छेद- मुखनासिकावचनः+अनुनासिकः। पूर्ववत्- 'मुख··· नः + अनु ··क': को 'मुख···नोऽनुनासिकः' हुआ।

सूत्र- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्। पद० तुल्यास्यप्रयत्नम्+ सवर्णम्।

सूत्र- नाज्झलौ पदच्छेद- न+अज्झलौ।

[सन्धिसूत्र 'अकः सवर्णे दीर्घः (६।१।९८,) से न का अ तथा अज्झलौ का अ मिलकर 'आ' हो गया।

सूत्र- ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्।

पदच्छेद- ईदूदेत्+द्विवचनम्+प्रगृह्यम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र- अदसो मात् । पदच्छेद- अदसः+मात् ।
सू० शे । पद० शे एक ही पद है ।
सू० निपात एकाजनाङ् । पद० निपातः+एकाच्+अनाङ् ।
इसी प्रकार पदच्छेद के नियम को सर्वत्र समझना चाहिये ।

३- विभक्ति

प्रश्न- विभक्ति किसे कहते हैं ?
उत्तर- विभाग को विभक्ति कहते हैं। "विभक्तिश्च" सूत्र से सुप् को तीन-तीन करके ७ भागों में एवं तिङ् के तीन-२ को तीन पुरुषों में बांटा गया है । इनको विभक्ति कहते हैं ।
प्रश्न- सुप् किसे कहते हैं ?
उत्तर- सुप् प्रत्याहार को कहते हैं ।
प्रश्न- सुप् प्रत्याहार, कैसे बनता है ?
उत्तर- स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम् ....सुप् (अ० ४.१.२)=इस सूत्र का पूर्वदर्शित प्रत्याहार बनाने वाली विधि के अनुसार, आदि 'सु' अन्तिम इत्वर्ण 'प्' के साथ मिलकर सुप् प्रत्याहार बनता है ।
प्रश्न- सुप् में कौन २ से प्रत्यय हैं ?
उत्तर- सुप् की सात विभक्तियों एवं तीनों वचनों में निम्न प्रत्यय हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमाविभक्ति	सु	औ	जस्
द्वितीया ,,	अम्	औट्	शस्
तृतीया ,,	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी ,,	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी ,,	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी ,,	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी ,,	ङि	ओस्	सुप्

इस प्रकार सुप् प्रत्याहार में २१ प्रत्यय हैं ।
प्रश्न- वचन कितने और कौन कौन से हैं ?
उत्तर- जैसा कि ऊपर दिखाया जा चुका है वचन तीन होते हैं । एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१- एकवचन से एक का बोध होता है।
२- द्विवचन से दो का बोध होता है।
३- बहुवचन से वहुतों का बोध होता है।

प्रश्न- तिङ् किसे कहते हैं ?

उत्तर- तिप्तस्झिसिप्थस्थ............ महिङ् (३.४.७८) इस सूत्र का आदि 'ति' अन्तिम इत् वर्ण 'ङ्' के साथ मिलकर तिङ् प्रत्याहार बनता है।

प्रश्न- तिङ् की विभक्तियां अर्थात् पुरुष किस प्रकार हैं ?

उत्तर- तिङ् के पुरुष निम्न प्रदर्शित विधि के अनुसार बनते हैं।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	प्रथमपुरुष	तिप्	तस्	झि
परस्मैपद	मध्यमपुरुष	सिप्	थस्	थ
	उत्तमपुरुष	मिप्	वस्	मस्
	प्रथमपुरुष	त	आताम्	झ
आत्मनेपद	मध्यमपुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
	उत्तमपुरुष	इट्	वहिङ्	महिङ्

तिङ् प्रत्याहार में ये १८ प्रत्यय बनते हैं जिनको दो भागों में विभक्त करके, प्रथम ९ प्रत्ययों को 'परस्मैपद,' तथा शेष ९ प्रत्ययों को 'आत्मनेपद' नाम से पुकारा जाता है।

प्रश्न- सूत्रों के अन्तर्गत आने वाले पदों की विभक्तियों को जानने की क्या विधि है ?

उत्तर- सूत्रस्थ पदों की विभक्तियों को जानने के लिए निम्न शब्दों के रूप स्मरण करने चाहियें।

यथा वेद, हरि, सर्व, साधु, कर्तृ, गो, रै, लता, मति, वधू, नदी, वाच्; फल, दधि, मधु।

यद्यपि इन शब्दों के अतिरिक्त भिन्न शब्दरूपों के समान चलने वाले पद भी सूत्रों में दिखाई देते हैं; पुनरपि अधिकतर पदों की विभक्तियों को उपर्युक्त शब्दों के रूपानुसार जाना जा सकता है, अतः इन्हीं के रूप नीचे दिये जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप

अकारान्त 'वेद'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा विभक्ति	वेदः	वेदौ	वेदाः
द्वितीया ,,	वेदम्	वेदौ	वेदान्
तृतीया ,,	वेदेन	वेदाभ्याम्	वेदैः
चतुर्थी ,,	वेदाय	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
पञ्चमी ,,	वेदात्	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
षष्ठी ,,	वेदस्य	वेदयोः	वेदानाम्
सप्तमी ,,	वेदे	वेदयोः	वेदेषु
सम्बोधन	हे वेद !	हे वेदौ !	हे वेदाः !

इकारान्त 'हरि'

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
प०	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
ष०	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बो०	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

ऋकारान्त 'कर्त्तृ'

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
द्वि०	कर्त्तारम्	कर्त्तारौ	कर्त्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्त्तृभ्याम्	कर्त्तृभिः
च०	कर्त्रे	कर्त्तृभ्याम्	कर्त्तृभ्यः
प०	कर्त्तुः	कर्त्तृभ्याम्	कर्त्तृभ्यः
ष०	कर्त्तुः	कर्त्रोः	कर्त्तॄणाम्
स०	कर्त्तरि	कर्त्रोः	कर्त्तृषु
सम्बो०	हे कर्त्तः !	हे कर्त्तारौ !	हे कर्त्तारः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'सर्व' सर्वनाम

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	,,	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्व !	हे सर्वौ !	हे सर्वे !

उकारान्त 'साधु'

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	साधुम्	साधू	साधून्
तृ०	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
प०	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
ष०	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
स०	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बो०	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः !

ऐकारान्त 'रै'

	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०	राः	रायौ	रायः
द्वि०	रायम्	रायौ	रायः
तृ०	राया	राभ्याम्	राभिः
च०	राये	राभ्याम्	राभ्यः
प०	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
ष०	रायः	रायोः	रायाम्
स०	रायि	रायोः	रासु
सम्बो०	हे राः !	हे रायौ !	हे रायः !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दरूप स्त्रीलिङ्ग

आकारान्त 'लता'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	लता	लते	लताः
द्वि०	लताम्	लते	लताः
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
प०	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष०	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बो०	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

इकारान्त 'मति'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
प०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बो०	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

ऊकारान्त 'वधू'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
प०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बो०	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हलन्त 'वाच्'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
प०	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष०	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बो०	हे वाक् ! हे वाग्	हे वाचौ !	हे वाचः !

ओकारान्त 'गो'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम	गोभिः
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
प०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवाम्
स०	गवि	गवोः	गोषु
सम्बो०	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

अकारान्त 'फल' नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
प०	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बो०	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईकारान्त 'नदी' स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
प०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बो०	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

उकारान्त 'मधु' नपुंसक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
प०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
ष०	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बो०	हे मधो ! हे मधु	हे मधुनी !	हे मधूनि !

इकारान्त 'दधि' नपुंसक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
प०	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दधीनाम्
स०	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बो०	हे दधे ! हे दधि !	हे दधिनी !	हे दधीनि !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- प्रत्याहार सूत्रों में विभक्ति कैसे जानें ?
उत्तर- सभी प्रत्याहार सूत्रों के हलन्त होने के कारण वाच् के समान रूप समझने चाहियें। अतः सभी प्रथमा विभक्ति एकवचन में होते हैं।

जैसे—	अइउण्	१।१	वाच् के समान
	ऋलृक्	१।१	,, ,,
	एओङ्	१।१	,, ,,

प्रश्न- विभक्ति तथा वचनों को संक्षेप में लिखने की क्या विधि है ?
उत्तर- विभक्ति तथा वचनों को क्रमशः दो संख्याओं से प्रकट किया जाता है। प्रथम संख्या विभक्ति के लिए; दूसरी वचन के लिये समझनी चाहिये।

जैसे—यदि हमें द्वितीया विभक्ति का बहुवचन कहना हो तो उसे इस प्रकार लिखेंगे '२।३' इसके नमूने के लिए निम्न कुछ संकेतों को देखो:—

प्रथमा विभक्ति एकवचन	= १।१	इसी प्रकार सभी बिभक्ति एवं वचनों के संकेतों को जानो।
द्वितीया विभक्ति बहुवचन	= २।३	
सप्तमी विभक्ति द्विवचन	= ७।२	

प्रश्न- वृद्धिरादैच् सूत्र में बिभक्ति कैसे जानें ?
उत्तर- वृद्धि शब्द का रूप मति के सदृश होने से—वृद्धिः १।१ तथा आदैच् वाच् के समान होने से—आदैच् १।१

सूत्र—अदेङ् गुणः।
विभक्ति वचन—अदेङ् १।१ वाच् के समान
गुणः १।१ वेद के समान

सूत्र— इको गुणवृद्धी।
वि० व० इकः ६।१ वाच् के समान
गुणवृद्धी १।२ मति के समान

सूत्र— न धातुलोप आर्धधातुके।
वि० व० न अव्ययपद
धातुलोपे ७।१ फल के समान
आर्धधातुके ७।१ फल के समान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- 'न' शब्द को विभक्ति न लिखकर अव्यय लिखा। अव्यय किसे कहते हैं ?

उत्तर- अव्यय का स्वरूप:—
सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

अर्थात् जो तीनों लिङ्गों में समान हो और सभी विभक्तियों में समान रहे तथा सभी वचनों में भी समान रहे ऐसा जो कभी बदलता नहीं है उसे अव्यय कहते हैं। अतः 'न' को अव्यय लिखा है। अव्यय का चिह्न 'अ० प०' लिखना चाहिये। अ०=अव्यय, प०=पद। अ० प०=अव्यय पद।

प्रश्न- लिङ्ग कितने होते हैं ?

उत्तर- तीन—पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग; नपुंसकलिङ्ग।

प्रश्न- धातुलोप में विभक्ति करते समय ए अन्त में कैसे लिखा ? सूत्र में तो धातुलोपे शब्द नहीं था ?

उत्तर- यहां मूल शब्द 'धातुलोपे' ही था, परन्तु आगे आर्धधातुके का 'आ' समक्ष होने से 'ए' के स्थान पर सन्धि विषय में आने वाले सूत्रों से 'अय्' होकर 'य्' का लोप हो जाता है। जैसा कि पहले पदच्छेद-प्रकरण में भी दिखा चुके हैं।

सूत्र- क्ङिति च।

वि० व० क्ङिति ७।१ वाच् की तरह (क्ङित् से सप्तमी)
च अ० प०

सूत्र- दीधीवेवीटाम्।

वि० व० दीधीवेवीटाम् ६।३ वाच् की भांति।

प्रश्न- दीधीवेवीटाम् में 'दीधी' की भिन्न विभक्ति कैसे नहीं लिखी ?

उत्तर- दीधीवेवीटाम् में तीन शब्द हैं, दीधी, वेवी, इट्। तीनों मिलकर (समस्त होकर) एक शब्द के रूप में परिणत हो जाते हैं जिससे 'दीधीवेवीट्' ऐसा एक शब्द हो जाता है। अतः इसी दीधीवेवीट् से विभक्ति होगी केवल दीधी या वेवी से नहीं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः ।

वि० व० हलः १।३ वाच् की तरह ।

अनन्तराः १।३ देव की तरह ।

संयोगः १।१ देव की तरह ।

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।

वि० व० मुखनासिकावचनः १।१ देव के समान ।

अनुनासिकः १।१ देव के समान ।

इसी प्रकार अग्रिम सूत्रों की विभक्तियों को भी उपरि प्रदत्त वेदादि शब्दों के अनुसार मिलान करके समझ लेवें ।

विशेषः—देवादि अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप भी वेद के समान होते हैं । अतः विभक्ति दर्शाने में देववत् भी लिखा गया है ।

अभ्यास

१. वेद, लता, फल, वाच् शब्दों के षष्ठी विभक्ति द्विवचन और बहुवचन में रूप लिखो ।

२. कर्तृ, हरि, गो शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन व सप्तमी विभक्ति के एकवचन में रूप लिखो ।

३. मत्या, वाचि, गवाम्, वध्वाम् शब्दों की विभक्ति तथा वचनों को लिखो ।

४. क्ङिति, अदेङ्, संयोगः, ईदूदेद् द्विवचनम्, ईदूतौ शब्दों के रूप वेदादि शब्दों में से किन-किन के समान हैं ?

५. हलः, अनन्तराः, घः, विभक्ति तथा वचन बताओ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थं प्रकरणम्

समास-प्रकरणम्

प्रश्न- समास किसे कहते हैं ?

उत्तर- 'समर्थः पदविधिः' (अ० २।१।१) सम्बन्धित, विभक्ति रहित पदों के मेल को समास कहते हैं। अर्थात् संक्षेप को समास कहते हैं।

उदाहरण—देवदत्तस्य भृत्य। (देवदत्त का नौकर) यहां 'देवदत्तस्य' शब्द षष्ठी विभक्ति एकवचन तथा 'भृत्यः' प्रथमा विभक्ति एकवचन में है। समास होने पर विभक्ति रहित होकर 'देवदत्तभृत्यः' ऐसा एक शब्द बन जाता है।

प्रश्न- समर्थ अर्थात् सम्बन्धित का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- परस्पर सम्बन्ध वाले शब्दों का ही समास होता है; सम्बन्ध रहितों का नहीं। जैसे—यज्ञदत्तः देवदत्तस्य, भृत्यः रामस्य। इस वाक्य में देवदत्तस्य का सम्बन्ध यज्ञदत्त के साथ है तथा भृत्य का रामस्य के साथ। अतः 'देवत्तस्य' और 'भृत्यः' शब्दों का परस्पर सम्बन्ध न होने से समास नहीं होता है।

प्रश्नः समास होने पर शब्द का क्या नाम होता है ?

उत्तर- समस्त-पद। जैसे—'देवदत्तभृत्यः' यह समस्तपद कहलाता है।

प्रश्न- क्या संस्कृत भाषा में समस्तपदों का ही प्रयोग होता है अथवा समास रहितों का भी ?

उत्तर- दोनों प्रकार के पदों का प्रयोग होता है। जैसे—देवदत्तस्य भृत्यः, इसका भी प्रयोग होता है और 'देवदत्तभृत्यः' इसका भी।

प्रश्न- समास रहित पदों की अवस्था का क्या नाम है ?

उत्तर- विग्रह-अवस्था।

प्रश्न- समस्तपद में पूर्वापर शब्दों को किस नाम से जानते हैं ?

उत्तर- समस्तपद में पूर्व शब्द को पूर्वपद तथा उत्तर शब्द को उत्तरपद कहते हैं।

जैसेः—राज्ञः पुरुष = राजपुरुषः। यहां 'राजपुरुषः' समस्तपद में राज (राजन्) पूर्वपद और 'पुरुषः' उत्तरपद है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार 'राज्ञः पुरुषः' इस विग्रह अवस्था में भी 'राज्ञः' को पूर्वपद तथा 'पुरुषः' को उत्तरपद कहते हैं।

प्रश्न- समास कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर- मुख्यतया चार प्रकार के ।

प्रश्न- कौन-कौन से ?

उत्तर- (१) अव्ययीभावः (२) तत्पुरुषः (३) बहुव्रीहिः (४) द्वन्द्वः ।

(१) अव्ययीभाव

प्रश्न- अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिसमें पूर्वपद अव्यय हो तथा उसकी प्रधानता हो उस समास को अव्ययीभाव समास कहते हैं। यह समास नपुंसक लिङ्ग एकवचन में होता है।

उदाहरण—अग्नेः समीपम्=उप+अग्निः=उपाग्नि।
प्रत्यग्नि, उपकुम्भम्, प्रतिदिनम् इत्यादि ।

(२) तत्पुरुष समास

प्रश्न- तत्पुरुष समास की क्या पहचान है ?

उत्तर- 'उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः' जिस समास में उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं ।

तत्पुरुष समास में लिङ्ग उत्तरपद के लिङ्गानुसार होता है अर्थात् यदि उत्तरपद पुल्लिङ्ग में है तो समस्तपद भी पुल्लिङ्ग में होगा, एवं यदि उत्तरपद नपुंसकलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में हो तो समस्तपद भी नपुंसक तथा स्त्रीलिङ्ग में होगा ।

उदाहरण:—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः ।

'राजपुरुष को लाओ' ऐसा कहने पर, राजा से सम्बन्धित किसी पुरुष को लाया जाता है; राजा को नहीं। अतः पुरुष शब्द जो उत्तरपद में है उसकी प्रधानता हुई। ऐसे समास को तत्पुरुष समास कहा जाता है ।

तत्पुरुष समास के मुख्य दस भेद होते हैं

१- कर्मधारय तत्पुरुष
२- द्विगु तत्पुरुष
३- द्वितीया तत्पुरुष
४- तृतीया तत्पुरुष
५- चतुर्थी तत्पुरुष
६- पञ्चमी तत्पुरुष
७- षष्ठी तत्पुरुष
८- सप्तमी तत्पुरुष
९- एकाधिकरण तत्पुरुष
१०- नञ् तत्पुरुष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१- कर्मधारय तत्पुरुष समास

प्रश्न- कर्मधारय समास किसे कहते हैं ?

उत्तर- 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' (अ० १।२।४२)

जिस तत्पुरुष समास में आने वाले सारे पद एक ही वस्तु को कहें उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—कृष्णसर्पः=काला साँप। यहां 'कृष्णः' और 'सर्पः' दोनों पद एक ही द्रव्य (सर्प) को कहते हैं। इस समास में दोनों पद विग्रह अवस्था में प्रथमा विभक्ति में होते हैं।

२- द्विगु समास

प्रश्न- द्विगु समास किसे कहते हैं ?

उत्तर- संख्यापूर्वो द्विगुः (अ० २।२।११) जिसका पूर्वपद संख्यावाचक हो उसे द्विगु तत्पुरुष समास कहा जाता है।

जैसे—पञ्चपूली (पांच पूलियों का समूह)

तथैव दशपूली, पञ्चकपालः, पञ्चराजम् इत्यादि।

यहां सर्वत्र पूर्वपद में स्थित 'पञ्च' तथा 'दश' शब्द संख्या को कहने वाले हैं।

३- द्वितीया तत्पुरुष समास

जिसका पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो वह द्वितीया तत्पुरुष समास कहलाता है।

जैसे:—सुखं प्राप्तः=सुखप्राप्तः (सुख को प्राप्त)

दुःखं प्राप्तः=दुःखप्राप्तः (दुःख को प्राप्त)

यहां सुखं दुःखं ये दोनों पूर्वपदस्थ शब्द द्वितीया विभक्ति में हैं।

४- तृतीया तत्पुरुष समास

जिस समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति से युक्त हो वह तृतीया तत्पुरुष समास है। जैसे—

वाचा कलहः=वाक्कलहः (वाणी के द्वारा कलह)

अहिना हतः=अहिहतः (साँप के द्वारा मारा हुआ)

दण्डेन ताडितः=दण्डताडितः (लाठी के द्वारा ताडित)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ वाचा, अहिना, दण्डेन ये तीनों पूर्वपद तृतीया विभक्त्यन्त हैं।

५- चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिसका पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो वह चतुर्थी तत्पुरुष समास है।

जैसेः—यूपाय दारु=यूपदारु (खम्बे के लिए लकड़ी)

देवाय हविः=देवहविः (देव के लिए हवि)

यज्ञाय घृतम्=यज्ञघृतम् (यज्ञ के लिए घी)

उपर्युक्त तीनों समस्तशब्दों में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति से युक्त हैं।

६- पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, उसे पञ्चमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसेः—

वृकात् भयम्=वृकभयम् (भेड़िये से भय)

मृत्योः भयम्=मृत्युभयम् (मृत्यु से भय)

यहां वृकात्, मृत्योः ये दोनों पद पञ्चम्यन्त हैं।

७- षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो उसको षष्ठी तत्पुरुष समास कहा जाता है। जैसे—

रामस्य सेवकः=रामसेवकः (राम का सेवक)

राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः (राजा का आदमी)

लतायाः पत्रम्=लतापत्रम् (बेल का पत्ता)

यहां रामस्य, राज्ञः, लतायाः, ये तीनों पूर्वपद षष्ठ्यन्त हैं।

८- सप्तमी तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद सप्तमी विभक्ति से युक्त हो उसे सप्तमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे—

अक्षेषु धूर्तः=अक्षधूर्तः, पाशों में धूर्त

ग्रामे सिद्धः=ग्रामसिद्धः (ग्राम में बना)

यहां अक्षेषु, ग्रामे ये पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९- एकाधिकरण समास

जो तत्पुरुष समास किसी वस्तु के एकदेशस्थ अवयव आदि को प्रकट करे उसे एकाधिकरण समास कहते हैं।

जैसे—पूर्वं कायस्य=पूर्वकायम्। अर्धं पिप्पल्याः=अर्धपिप्पलि।

१०- नञ् तत्पुरुष समास

जिस समास का पूर्वपद 'न' ऐसा अव्यय शब्द हो वह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे—

न पुरुषः=अपुरुषः (पुरुष नहीं)

न पठितः=अपठितः (अनपढ़)

न आस्तिकः=नास्तिकः (ईश्वर को न मानने वाला)

यहाँ सर्वत्र 'न' पूर्वपद में है। इसके साथ ही तत्पुरुष के दश भेद समाप्त हो जाते हैं।

(३) बहुव्रीहि समास

अनेकमन्यपदार्थे (२-२-२४) अनेक पदों का वह समास; जो समास में आने वाले पदों से भिन्न पद के अर्थ को व्यक्त करे, उसे बहुव्रीहि कहते हैं। जैसेः—चित्रा गावो यस्य सः=चित्रगुः (चितकबरी हैं गाय जिसकी) यहां समस्तपद 'चित्रगुः' में 'चित्र' और 'गो' शब्द अपने से भिन्न वस्तु का अर्थ प्रकट करते हैं। दोनों से भिन्न मनुष्य को प्रकट किया है।

इस समास की विग्रह अवस्था प्रकट करने के लिए 'येन' 'यस्य' 'अनेन' 'अस्य' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे—चित्रा गावो यस्य।

(४) द्वन्द्व समास

प्रश्न- द्वन्द्व समास किसे कहते हैं ?

उत्तर- चार्थे द्वन्द्वः (२।२।२९) जिस समास में च (और) का अर्थ हो वह द्वन्द्व समास कहाता है।

जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च=रामलक्ष्मणौ (राम और लक्ष्मण)

प्रश्न- द्वन्द्व के कितने भेद हैं ?

उत्तर- दो भेद हैं। १- इतरेतरद्वन्द्व २- समाहारद्वन्द्व।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- इतरेतरद्वन्द्व समास की क्या पहचान है ?

उत्तर- (क) इतरेतरद्वन्द्व समास हमेशा द्विवचन अथवा बहुवचन में होता है। (ख) इतरेतरद्वन्द्व समास में भी तत्पुरुष के समान उत्तरपद के लिङ्गानुसार समस्तपद का लिङ्ग होता है।

जैसे:—देवदत्तश्च मोहनश्च=देवदत्तमोहनौ।

देवदत्तश्च मोहनश्च सोहनश्चेति=देवदत्तमोहनसोहनाः।

प्रश्न- समाहार द्वन्द्व की क्या पहचान है ?

उत्तर- समाहारद्वन्द्व समास नपुंसक लिङ्ग एकवचन में होता है।

जैसे—हस्तौ च पादौ चेति=हस्तपादम्।

उपरिलिखित समासों को अच्छी प्रकार स्मरण करें। इन्हीं के आधार पर सूत्रों में समास छांटना सरल हो जायेगा।

अभ्यास

१- समास किसे कहते हैं बताओ ?

२- तत्पुरुष समास के सभी भेदों को उदाहरण सहित लिखो।

३- दुःखप्राप्तः, उपाग्नि, वृकभयम्, चित्रगुः, हस्तपादम्, शब्दों में कौन-कौन से समास हैं ?

४- इतरेतरद्वन्द्व की क्या पहचान है ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्रों में समास की पहचान एवं विग्रह

सूत्र-१ वृद्धिरादैच्।

विग्रह—आच्च ऐच्चेति=आदैच् (आ और ऐच्) समाहार द्वन्द्व

यहां च के अर्थ में एकवचन नपुंसकलिङ्ग होने से समास का नाम समाहार द्वन्द्व है।

सूत्र-२ अदेङ्गुणः।

विग्रह—अच्च एङ् च=अदेङ् (अ और एङ्)

यहां भी च के अर्थ में समास तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन होने से समाहार द्वन्द्व समास जानना चाहिये।

सूत्र-३ इको गुणवृद्धी।

विग्रह—गुणश्च वृद्धिश्च=गुणवृद्धी (गुण और वृद्धि) इतरेतर द्वन्द्व

च का अर्थ होने से तथा द्विवचन होने से इतरेतर द्वन्द्व समास हुआ।

सूत्र-४ न धातुलोप आर्धधातुके।

समास—धातोः अवयवः=धातु-अवयवः (षष्ठीतत्पुरुष समास)

धातु-अवयवस्य लोपो यस्मिन् तत्=धातुलोपम् तस्मिन् धातुलोपे (उत्तरपदलोपी बहुव्रीहि समास)

संकेत—तस्मिन् का ग्रहण सप्तमी विभक्ति के निर्देश के लिए है।

सम्पूर्ण समास—(षष्ठी तत्पुरुष गर्भित बहुव्रीहि समास)

प्रश्न- उत्तरपदलोपी क्या है ?

उत्तर- उपरि प्रदर्शित बहुव्रीहि समास में 'धातु-अवयव+लोप' ये दो पद हैं पूर्वपद 'धाजु-अवयव' समस्त पद है जिसमें पूर्वपद 'धातु' है तथा उत्तरपद 'अवयव' है; सो यहां बहुव्रीहि समास करने पर पूर्वपद (धातु अवयव) के उत्तरपद (अवयव) का लोप होकर 'धातुलोप' रह गया। इसे उत्तरपदलोपी समास कहते हैं।

प्रश्न- गर्भित का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- गर्भित का अर्थ मध्य में होता है। समस्तपद में अन्तिम समास से पूर्व आनेवाले समास मध्य में आनेवाले अथवा गर्भित कहलाते हैं। अतः धातुलोपे शब्द में अन्तिम समास बहुव्रीहि से पूर्व होने वाला षष्ठी तत्पुरुष समास गर्भित कहलाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र-५ क्ङिति च।
समास—गश्च कश्च ङश्च=क्क्ङः (इतरेतरद्वन्द्व समास)
खरि च ८।४।५४ सूत्र से ग् को क् हुआ।
च का अर्थ होने एवं बहुवचन होने से इतरेतरद्वन्द्व समास हुआ।
इच्च इच्च इच्च=इतः (एकशेष)
क्क्ङः इतः यस्य स क्क्ङित् (अन्यपदार्थप्रधान होने से बहुव्रीहि)
तस्मिन् क्क्ङिति

सम्पूर्णसमास का नाम—इतरेतर द्वन्द्व गर्भित बहुव्रीहि समास।

प्रश्न- इच्च क्या है ?
उत्तर- इत् च=इच् च=इच्च।
त् को च् के सम्बन्ध से च् हो जाता है।
प्रश्न- एकशेष का क्या प्रयोजन है ?
उत्तर- "सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ" (१।२।६४) अर्थात् एकरूप वाले अनेक शब्दों का समान विभक्ति के परे रहते एकशेष रह जाता है। जैसे अनेक इत् (तीन) शब्दों का एकवचन परे रहते एक इत् शब्द शेष रहकर तीन शब्दों का एकशेष रहने से बहुवचन में लिखा जाता है। ऐसे हो अन्यत्र भी समझें। जैसे—वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः (एकरूप एकशेष बहुवचन)।

सूत्र-६ दीधीवेवीटाम्।
समास—दीधी च वेवी च इट् च=दीधीवेवीटः (इतरेतरद्वन्द्व)
तेषां=दीधीवेवीटाम् (षष्ठीबहुवचन में)

यहां च का अर्थ होने से द्वन्द्व तथा बहुवचन में होने से इतरेतरद्वन्द्व समास।

सूत्र-७ हलोऽनन्तराः संयोगः।
समास—हल् च हल् च हल् च=हलः (सरूप एकशेष बहुबचन का वाच् की तरह एक बहुवचन रूप बन गया)।
हल् च हल् च=हलौ (दो सरूप होने से एकशेष द्विवचन का रूप हुआ)।
हलश्च हलौ च=हलः (सरूप एकशेष अनेक होने से बहुवचन)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनन्तरा :-

न विद्यते अन्तरं येषां ते=अनन्तराः [जिन (हलों) में अच् का अन्तर (व्यवधान) नहीं। अन्यपदार्थ प्रधान होने से बहुव्रीहि समास]।

सूत्र-८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।

समास – मुखनासिकावचनः—मुखञ्च नासिका च=मुखनासिकम्।

यहां "मुखञ्च" में चकार के योग से 'म्' को 'ञ्' हो गया तथा चार्थ होने से द्वन्द्व तथा नपुंसकलिङ्ग होने से समाहारद्वन्द्व हुआ।

मुखनासिकम् आवचनं यस्य सः=मुखनासिकावचनः (अन्यपदार्थ होने से बहुव्रीहि समास बना।)

सम्पूर्णसमास—द्वन्द्वगर्भित बहुव्रीहि।

सूत्र-९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्।

समास—आस्ये प्रयत्नः=आस्यप्रयत्नः (पूर्वपद में सप्तमी विभक्ति होने से सप्तमी तत्पुरुषसमास)।

तुल्य आस्यप्रयत्नो यस्य तत्=तुल्यास्यप्रयत्नम् (अन्यपदार्थ-प्रधानत्वात् बहुव्रीहिसमासः)

सम्पूर्ण समास – सप्तमी तत्पुरुषगर्भितबहुव्रीहि।

सूत्र-१० नाज्झलौ।

अच्च हल् च=अज्झलौ (च और ह की सन्धि होने से ज्झ हो गया) यहां भी च का अर्थ एवं द्विवचन होने से इतरेतरद्वन्द्व समास हुआ।

इसी प्रकार आगे भी सूत्रों में समास का प्रयोग जान लें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चमप्रकरणम्

अर्थ प्रकरणम्

सूत्रार्थ करने के लिए निम्न संकेतों का ध्यान रखें।

१- सूत्रार्थ करने से पूर्व पदच्छेद, विभक्ति, अनुवृत्ति और समास के सम्बन्ध में विचार करें।

२- यदि सूत्र के सभी पद प्रथमा विभक्ति में हों तो प्रायः संज्ञा संज्ञो व विशेष्य विशेषण अर्थ होता है।

३- पञ्चमी विभक्ति का अर्थ अधिकतर 'से, परे' करना चाहिए।

४- षष्ठी विभक्ति का अर्थ अधिकतर स्थान में (पर) ऐसा जानें।

५- सप्तमी का अर्थ 'परे रहने पर' बहुधा विचारें।

उपरिलिखित नियमों का सूत्रों में प्रयोगः—

(१) पञ्चमी विभक्ति का उदाहरण

सूत्र- गुप्तिज्किद्भ्यः सन् (३।१।५)

अनुवृत्तिः—प्रत्ययः परश्च

पदच्छेदः, विभक्तिः—गुप्तिज्किद्भ्यः ५।३ सन् १।१

समासः—गुप् च तिज् च कित् च = गुप्तिज्कितः,
तेभ्यः—गुप्तिज्किद्भ्यः इतरेतरद्वन्द्वसमासः

अर्थः—गुप्तिज्किद्भ्यो धातुभ्यः परः सन् प्रत्ययो भवति।

आर्यभाषाः—गुपादि धातुओं से परे सन् प्रत्यय होता है।

सूत्र में पञ्चमी विभक्ति होने के कारण परे अर्थ हुआ।

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् १।२।१ से रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च १।२।२६ अनुदात्तङित आत्मनेपदम् १।३।१२ से लुटि च क्लृपः १।३।९३ तक।

तृतीयाध्याय, चतुर्थाध्याय, पञ्चमाध्याय तथा अन्यत्र जहां पञ्चमी दिखाई दे वहां 'से, परे' अर्थ करना चाहिए।

(२) षष्ठी विभक्ति का उदाहरण

सूत्र—अस्तेर्भूः (२।४।५२)

अनुवृति—आर्धधातुके

पदच्छेदः, विभक्तिः—अस्तेः ६।१, भूः १।१

समासः—नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः—अस्तेः स्थाने भूरादेशो भवति आर्धधातुकविषये।
आर्यभाषाः—अस् धातु के स्थान में (पर) भू आदेश होता है आर्धधातुक के विषय में।

सूत्र में षष्ठी विभक्ति होने के कारण स्थान में (पर) अर्थ हुआ। ब्रुवो वचिः २।४।५३, चक्षिङः ख्याञ् २।४।५४ इत्यादि अनेक सूत्रों के अर्थ इस प्रकार किये जा सकते हैं।

(३) सप्तमी विभक्ति का उदाहरण

सूत्र—लुङि च (२।४।४३)
अनुवृत्तिः—आर्धधातुके, हनो, वध
पदच्छेद, विभक्तिः—लुङि ७।१, च (अ० प०)
समासः—नहीं
अर्थः—हनः स्थाने 'वध' आदेशो भवति आर्धधातुके लुङि परतः।
आर्यभाषा—लुङ् आर्धधातुक परे रहते हन् के स्थान पर 'वध' आदेश होता है।

सूत्र में सप्तमी विभक्ति होने से 'परे रहने पर' अर्थ हुआ। सनि च २।४।४७, गाङ् लिटि २।४।४९, इत्यादि सूत्रों में सप्तमी विभक्ति होने से 'परे रहते पर' अर्थ जानना चाहिए।

प्रथमा विभक्ति के उदाहरण संज्ञा विषय में देखें।

इस प्रकार अभ्यास करने से विद्यार्थी स्वयं पर्याप्त सूत्रों के अर्थ करने में समर्थ होगा।

इससे आगे संज्ञा ज्ञान के विषय में उपरिलिखित नियम दर्शाए जायेंगे।

संज्ञा ज्ञान विषय

लौकिक व्यवहार की भांति व्याकरण में भी सर्वप्रथम संज्ञा का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। परमकारुणिक आचार्य ने इसीलिए प्रथमपाद में संज्ञाओं का उल्लेख किया है। अत एव प्रथमपाद का नाम संज्ञापाद है।

१- वृद्धि संज्ञा

प्रश्न- वृद्धि किसे कहते हैं?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर- 'वृद्धिरादैच्' (१।१।१) पदच्छेद-विभक्ति तथा समास पूर्ववत्।

अर्थ—आदैच् (संज्ञी) वृद्धिः (संज्ञा) अध्याहारः।

व्याख्या—आदैचां वृद्धिः संज्ञा भवति।

आर्यभाषा— आ ऐ औ का नाम वृद्धि होता है।

सूत्र के पद प्रथमाविभक्ति में होने से सूत्र का अर्थ संज्ञा संज्ञी में हुआ।

प्रश्न- अध्याहार किसे कहते हैं ?

उत्तर- अर्थ करते समय सूत्र के शब्द क्रमशः (अन्वय सहित) रखकर पश्चात् भवति, अस्ति, भवेत्, स्यात्; भवतु, भवेयुः, स्युः इत्यादि में से किसी एक को लगाया जाता है। इसे अध्याहार कहते हैं।

[सूत्रार्थ का यह विधान सर्वत्र स्मरण रखें]

प्रश्न- आदैच् का अर्थ आ, ऐ, औ कैसे लिया ?

उत्तर- आत्=आ, ऐच् (प्रत्याहार)=ऐ औ।

प्रश्न- संज्ञी किसे कहते हैं।

उत्तर- जिसका नाम हो उसे संज्ञी कहते हैं। जैसे 'आदैच्' का नाम 'वृद्धि' है। अतः आदैच् संज्ञी कहलाता है।

प्रश्न- सूत्र में (आने वाले) पूर्वपद को संज्ञा जानें या संज्ञी ?

उत्तर- सूत्र में पूर्व शब्द को संज्ञी जानें।

प्रश्न- 'वृद्धिरादैच्' सूत्र में पहले संज्ञापद (वृद्धि) को क्यों लिखा ?

उत्तर- मांगलिक आचार्य ने मंगलार्थ अर्थात् पढ़ने पढ़ाने वालों की सर्वत्र वृद्धि हो, समुन्नति हो, इसीलिए वृद्धि शब्द को पहले रखा है। अन्यत्र सब सूत्रों में पूर्वपद को संज्ञी समझें।

२- गुण संज्ञा

प्रश्न- गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर- अदेङ्गुणः (१।१।२) पदच्छेद विभक्ति समास पूर्ववत्।

अर्थ—अदेङ् (संज्ञी) गुणो (संज्ञा) भवति (अध्याहारः) अ, ए, ओ का नाम गुण होता है।

सूत्र के पद प्रथमा विभक्ति में हैं। अतः सूत्रार्थ संज्ञा संज्ञी में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ। पूर्वपद 'अदेङ्' संज्ञी तथा उत्तरपद 'गुणः' संज्ञा है। जैसा कि अर्थ में दर्शाया है। इसी प्रकार सर्वत्र संज्ञा प्रकरण में जानें।

प्रश्न- अदेङ् से अ ए ओ का कैसे ग्रहण हुआ ?

उत्तर- अत्=अ। एङ् (प्रत्याहार) ए, ओ।

३- संयोग

प्रश्न- संयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर- हलोऽनन्तराः संयोगः (१।१।७) अनुवृत्ति—नहीं
पदच्छेद—विभक्ति—समास पूर्ववत्।

अर्थ—हलोऽनन्तराः (संज्ञी) संयोगः (संज्ञा) अध्याहारः।

व्याख्या—अज्व्यवधानरहितानां द्वयोश्च बहूनां हलां संयोग संज्ञा भवति। यथा कुण्डा में ण् ड् का संयोग है।

शब्दार्थ—अनन्तराः=व्यवधान रहित।

आर्यभाषा—अच् के व्यवधान से रहित दो या बहुत हलों की संयोग संज्ञा होती है।

प्रश्न- अच् का ग्रहण कैसे हुआ ?

उत्तर- वर्ण दो प्रकार के होते हैं अच् और हल्। व्यवधान भिन्न जाति के द्वारा होता है। अतः अच् का ग्रहण है।

प्रश्न- अज्व्यवधानरहितानां को अच् व्यवधानरहितानां होना चाहिए ?

उत्तर- सन्धि के नियम से च् को ज् हो जाता है, अतः अज्व्यवधान-रहितानां हुआ। (सन्धिनियमों का प्रौढ़ ज्ञान पाणिनीय व्याकरण से ही पूर्ण होगा)

४- अनुनासिक

सूत्र—मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (१।१।८) अनुवृत्ति—नहीं
पदच्छेद—विभक्ति समास पूर्ववत्।

अर्थ—मुखनासिकावचनः (संज्ञी) अनुनासिकः (संज्ञा) अध्याहारः।

व्याख्या—किञ्चित् मुखेन किञ्चित् नासिकया यो वर्ण उच्चार्यते तस्य अनुनासिकसंज्ञा भवति (अध्याहारः)।

आर्यभाषा—जो वर्ण कुछ मुख के द्वारा एवं कुछ नासिका के द्वारा बोला जाता है उसे अनुनासिक कहते हैं।

प्रश्न- कुछ तथा बोला जाना किन शब्दों के अर्थ हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर- आ=कुछ। वचनम्=बोला जाना।
प्रश्न- वर्ण अर्थ कैसे लिया?
उत्तर- बहुव्रीहि समास (अन्यपदार्थ) होने से।

५- सवर्णम्

सूत्र—तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् (१।१।९) अनुवृत्ति—नहीं।
पदच्छेद—विभक्ति समास पूर्ववत्।
अर्थ— तुल्यास्यप्रयत्नं (संज्ञी) सवर्णम् (संज्ञा) अध्याहारः।
व्याख्या—येषां वर्णानां आस्ये तुल्यस्थानं प्रयत्नश्च भवति तेषां परस्परं स्वर्णसंज्ञा भवति।
आर्यभाषा—जिन वर्णों के मुख में स्थान एवं प्रयत्न तुल्य होते हैं उनकी परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है। जैसे—अ और आ का समान स्थान व प्रयत्न होने से इनकी परस्पर सवर्ण संज्ञा है।
प्रश्न- तुल्य तथा आस्यम् का क्या अर्थ है?
उत्तर- तुल्य का अर्थ है समान, आस्यम् का अर्थ है मुख में होने वाला स्थान और प्रयत्न।

६- प्रगृह्यम्

सूत्र— ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (१।१।११) अनुवृत्ति—नहीं
पदच्छेद-विभक्ति—ईदूदेत् १।१ द्विवचनम् १।१ प्रगृह्यम् १।१
समास— ईच्च ऊच्च एच्च=ईदूदेत् (समाहार द्वन्द्व समास)
अर्थ— ईदूदेद् द्विवचनं (संज्ञी) प्रगृह्यम् (संज्ञा) अध्याहारः।
व्याख्या— ईकारान्तम् ऊकारान्तम् एकारान्तम् द्विवचनं शब्दरूपं प्रगृह्यसंज्ञकं भवति।
आर्यभाषा—ईकारान्त ऊकारान्त एकारान्त द्विवचन शब्दरूप की प्रगृह्य संज्ञा होती है।
प्रश्न- प्रगृह्य संज्ञा का क्या फल है?
उत्तर- प्रकृति भाव होना।
प्रश्न- प्रकृति भाव क्या है?
उत्तर- सन्धि न होना। जैसे—अग्नी अत्र। इस उदाहरण में ई और अ की सन्धि होने से 'इको यणचि' सूत्र से ई को य् प्राप्त है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर ईकारान्त (अग्नी) द्विवचन होनें से इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होती है। प्रगृह्य संज्ञा का फल सन्धि निषेध है। इसी प्रकार वायू इति। फले इति में भी प्रगृह्य संज्ञा होनें से प्रकृति भाव (सन्धि निषेध) समझना चाहिये।

आगे इस सूत्र से लेकर ईदूतौ च सप्तम्यर्थे (१।१।१८) तक के सूत्र प्रगृह्य संज्ञा करने वाले जानें।

७- घु

प्रश्न- घु किसे कहते हैं ?

उत्तर- दाधा घ्वदाप् (१।१।१९) अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद विभक्ति—दाधाः १।३ घु १।१ अदाप् १।१

समास—दाश्च धौ च=दाधाः [चार्थ एवं बहुवचन होने से इतरेतरद्वन्द्व समास]

न दाप्=अदाप् [पूर्वपद में नञ् होने से नञ् तत्पुरुष समास]

अर्थ—अदाप् दाधाः (संज्ञी) घु (संज्ञा) अध्याहारः।

शब्दार्थ—अदाप्=दाप् धातु को छोड़कर।

दाधाः=दा रूप वाली चार धातु व धा रूप वाली दो।

व्याख्या—दारूपाः चत्वारो धातवो धारूपौ च द्वौ धातू दाप्दैपं वर्जयित्वा घुसंज्ञका भवन्ति।

आर्यभाषा—दारूप वाली चार धातु व धारूप वाली दो धातु दाप् और दैप् को छोड़कर घु नामक होती हैं।

प्रश्न- दारूप वाली चार धातुयें कौन कौन सी हैं ?

उत्तर- १. दा—डुदाञ् दानें
३. दा—देङ् रक्षणे
२. दा—दाण् दाने
४. दा—दो अवखण्डने

प्रश्न- धारूप वाली दो धातुयें कौन कौन सी हैं ?

उत्तर- १. धा—डुधाञ् धारणपोषणयोः
२. धा—धेट् पानें

प्रश्न- सूत्र में अदाप् है पर अर्थ में दाप् दैप को छोड़कर क्यों किया गया ?

उत्तर- दैप् का भी सूत्र से दाप् बन जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न- घु संज्ञा का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर- आगे आने वाले सूत्रों में जैसे "स्थाघ्वोरिच्च" (१।२।२७) आदि में (स्था+घु+इत्+च) घु के ग्रहण से दा रूप व धारूप को लिया जायेगा।

८- घ

सूत्र— तरप्तमपौ घः। अनुवृत्ति नहीं।

पदच्छेद विभक्ति—तरप्तमपौ १।२ घः १।१
(वाच् के समान) (देव के समान)

समास— तरप् च तमप् च=तरप्तमपौ (इतरेतर द्वन्द्व समास, चार्थ तथा द्विवचन होनें से।)

अर्थ— तरप्तमपौ संज्ञी) घ (संज्ञा) अध्याहारः।

व्याख्या:—तरप्तमपौ प्रत्ययौ घसंज्ञौ भवतः।

आर्यभाषा—तरप्तमप् प्रत्ययों का नाम घ होता है।

९- संख्या

सूत्र— बहुगणवतुडति संख्या (१।१।२२) अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद विभक्ति—बहुगणवतुडति १।१ (दधिवत्‌रूप) संख्या १।१ (लतावत्)

समास — बहुश्च गणश्च वतुश्च डति च=बहुगणवतुडति। (चार्थ एवं एकवचन होने से समाहार द्वन्द्व समास)

अर्थ— बहुगणवतुडति (संज्ञी) संख्या (संज्ञा) अध्याहारः।

व्याख्या— बहुगणशब्दौ वतुप्रत्यान्ताः डतिप्रत्यान्ताः च शब्दाः संख्या-संज्ञका भवन्ति।

आर्यभाषा—बहु और गण शब्द वतुप्रत्ययान्त तथा डतिप्रत्ययान्त शब्द संख्या संज्ञक होते हैं।

उदाहरण—(१) बहु—	बहुकः	बहुधा
(२) गण—	गणकः	गणधा
(३) वतु—	तावत्कः	तावद्धा
(४) डति—	कतिकः	कतिधा

१०- षट्

सूत्र— ष्णान्ता षट् (१।१।२३) अनुवृत्ति—नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदच्छेद विभक्ति—ष्णान्ता १।१ (लतावत्) षट् १।१ (वाच् के समान)
समास—षश्च नश्च=ष्णौ (चार्थं एवं द्विवचन होने से इतरेतर द्वन्द्व समास)
ष्णौ अन्ते यस्याः सा—ष्णान्ता (अन्यपदार्थ होने से बहुव्रीहि ।
अर्थ— ष्णान्ता (संज्ञी) षट् (संज्ञा) अध्याहारः ।
व्याख्या—षकारान्ता नकारान्ता च या संख्या सा षट्संज्ञिका भवति ।
आर्यभाषा—षकारान्त तथा नकारान्त जो संख्यावाची शब्द हैं, उनकी षट् संज्ञा होती है ।
प्रश्न- विग्रह में ष और न को अकारान्त क्यों लिखा है ? जब कि समास में हलन्त हैं ।
उत्तर- उच्चारण के लिये ।

११- निष्ठा

सूत्र— क्तक्तवतू निष्ठा (१।१।२५) अनुवृत्ति—नहीं ।
पदच्छेद विभक्ति—क्तक्तवतू १।२ (साधु के समान)
निष्ठा १।१ (लता के समान)
समास— क्तश्च क्तवतुश्च=क्तक्तवतू (चार्थं एवं द्विवचन होने से इतरेतरद्वन्द्व समास)
अर्थ— क्तक्तवतू (संज्ञी) निष्ठा (संज्ञा) अध्याहारः ।
व्याख्या— क्तक्तवतू प्रत्ययौ निष्ठासंज्ञकौ भवतः ।
आर्यभाषा—क्त और क्तवतु इन दो प्रत्ययों का नाम निष्ठा है ।

१२- सर्वनाम

सूत्र— सर्वादीनि सर्वनामानि (१।१।२६) अनुवृत्ति—नहीं
पदच्छेद विभक्ति—सर्वादीनि १।३ (फलवत्) सर्वनामानि (फलवत् रूप)
समास— सर्वः आदिर्येषां तानि=सर्वादीनि (अन्यपदार्थ होनें से बहुव्रीहि)
सर्वेषां नामानि=सर्वनामानि (पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में होने से षष्ठी तत्पुरुष समास)
अर्थ— सर्वादीनि (संज्ञी) सर्वनामानि (संज्ञा)अध्याहारः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दार्थ— सर्वादीनि=सर्वशब्द जिनके आदि में है ऐसे शब्दसमूह (गणपाठ में)
सर्वनामानि—सब के वाचक ।

व्याख्या—सर्वादीनि शब्दरूपाणि सर्वनामसंज्ञकानि भवन्ति ।

आर्यभाषा—सर्वादि शब्दों का नाम सर्वनाम होता है ।
"सर्वादीनि सर्वनामानि" से लेकर अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः (१-१-३५) तक के सूत्र सर्वनाम संज्ञा करने वाले हैं ।

प्रश्न- सर्वनाम संज्ञा का क्या लाभ है ?

उत्तर- जिनका नाम सर्वनाम है उनके रूप देव के सदृश न होकर सर्व शब्द के समान होंगे ।

प्रश्न- देव तथा सर्व शब्द के रूपों में कहां कहां भेद है ?

उत्तर-

विभक्ति वचन	देव	सर्व
१।३	देवा।	सर्वे
४।१	देवाय	सर्वस्मै
५।१	देवात्	सर्वस्मात्
६।३	देवानाम्	सर्वेषाम्
७।१	देवे	सर्वस्मिन्

१३- अव्यय

सूत्र— स्वरादिनिपातमव्ययम् (१।१।३६) अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद विभक्ति—स्वरादिनिपातम् १।१ अव्ययम् १।१ (दोनों फलवत्)

समास— स्वर् आदिर्येषां ते=स्वरादयः (अन्यपदार्थ होने से बहुव्रीहि)
स्वरादयश्च निपाताश्च=स्वरादिनिपातम्
(चार्थ एकवचन होने से समाहार द्वन्द्व)

सम्पूर्ण समास—बहुव्रीहिगर्भित समाहार द्वन्द्व समास ।

अर्थ— स्वरादिनिपातम् (संज्ञी) अव्ययम् (संज्ञा)
स्वरादयः=स्वर् शब्द जिस शब्दसमूह (गणपाठ) के आदि में हो वे शब्द स्वरादयः कहलाते हैं ।
निपाताः=प्राग्रीश्वरान्निपाताः (१।४।५६) सूत्र से लेकर अधिरीश्वरे (१।४।९५) तक आने वाले चादि शब्दों का नाम निपात है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— स्वरादयः शब्दाः निपातसंज्ञकाश्च अव्ययसंज्ञका भवन्ति।
आर्यभाषा—स्वर् आदि शब्द तथा निपातसंज्ञक शब्दों का नाम अव्यय है।

विशेष:—"स्वरादिनिपातमव्ययम्" इस सूत्र से लेकर "अव्ययीभावश्च" १।१।४० सूत्र तक अव्यय बनाने वाले सूत्र हैं।

१४- सर्वनामस्थान

सूत्र— शि सर्वनामस्थानम् (१।१।४१) अनुवृत्ति—नहीं
पदच्छेद विभक्ति—शि १।१ (दधिवत्) सर्वनामस्थानम् १।१ (फलवत्)
समास— नहीं।
अर्थ— शि (संज्ञी) सर्वनामस्थानम् (संज्ञा) अध्याहारः।
शब्दार्थ— शि जस् और शस् इन दो प्रत्ययों के स्थान में (जश्शसोः शि) ७।१।२० सूत्र से आने वाला।
व्याख्या— शि इत्येतस्य सर्वनामस्थानसंज्ञा भवति।
आर्यभाषा—जस् और शस् प्रत्ययों के स्थान पर आने वाले "शि" का नाम सर्वनामस्थान होता है।
सुडनपुंसकस्य १।१।४२ सूत्र से भी सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

प्रश्न- सुट् किसे कहते हैं?
उत्तर- स्वौजसमौट्छष्टा……सुप् (४।१।२) सूत्र से पूर्ववत् प्रत्याहार बनाने वाली विधि के अनुसार आदि वर्ण 'सु' आगे 'औट्' के अन्तिम 'ट्' इत् वर्ण के साथ मिलकर सुट् प्रत्याहार बनाता है।
प्रश्न- सुट् प्रत्याहार में कौन-कौन प्रत्यय आते हैं।
उत्तर- सु, औ, जस्, अम्, औट् ये पांच प्रत्यय।

१५- विभाषा

सूत्र— न वेति विभाषा (१।१।४३)। अनुवृत्ति—नहीं।
पदच्छेद विभक्ति—न अ० प०। वा अ० प०। इति अव्ययपदम्, विभाषा १।१।
समास— नहीं
अर्थ— न वा इति (संज्ञी) विभाषा (संज्ञा) अध्याहारः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दार्थ— न=निषेध, वा=विकल्प, इति=अर्थवाचक

व्याख्या— निषेधविकल्पार्थयोः विभाषा संज्ञा भवति।

आर्यभाषा—निषेध और विकल्प के अर्थ का नाम विभाषा है।

विशेष— घ आदि संज्ञाओं से कार्य प्राप्त होने पर उनके संज्ञी तरप्, तमप् आदि का ग्रहण होता है, परन्तु विभाषा कहने से न और वा का ग्रहण न होकर उनके अर्थ (निषेध विकल्प) का ज्ञान होता है।

१६- सम्प्रसारणम्

सूत्र— इग्यणः सम्प्रसारणम् (१।१।४४) अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद विभक्ति—इक् १।१ यणः ६।१ (दोनों वाच् की तरह)
सम्प्रसारणम् १।१ (फल की तरह रूप)। समास—नहीं

अर्थ – यणः इक् (संज्ञी) सम्प्रसारणम् (संज्ञा) अध्याहारः।

शब्दार्थ— यणः=यण् प्रत्याहार के स्थान पर। इक्=(इ उ ऋ लृ) इक् प्रत्याहार।

व्याख्या— यणः स्थाने इक् वर्णस्य तथा विधानस्य सम्प्रसारणसंज्ञा भवति।

आर्यभाषा—यण् के स्थान में आनेवाले इक् वर्ण का तथा विधान (यण् के स्थान में इक् करना) का नाम सम्प्रसारण है।

प्रश्न- सूत्र में सभी पद प्रथमा विभक्ति में नहीं हैं क्योंकि यणः ६।१ है फिर संज्ञा संज्ञी में अर्थ कैसे हुआ ?

उत्तर- यणः अर्थात् यण् के स्थान पर (इक्) संज्ञी, यणः के द्वारा प्रथमा विभक्ति वाले संज्ञी (इक्) को ही निर्दिष्ट करता है।

१७- लोपः

सूत्र— आदर्शनं लोपः (१।१।५६) अनुवृत्ति—इति

पदच्छेद विभक्ति—अदर्शनम् १।१ (फलवत्) लोपः १।१ (देववत्)।
समास—नहीं

अर्थ— अदर्शनम्—इति (संज्ञी) लोपः (संज्ञा) अध्याहारः।

शब्दार्थ— अदर्शनम्=न दिखाई देना, यहां अदर्शन शब्दरूप नहीं लिया जायेगा अपितु अर्थ का ही ग्रहण होगा (न दिखाई देना, पूर्व 'नवेति विभाषा' सूत्र में आए न वा की तरह)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— अदर्शनार्थस्य लोपसंज्ञा भवति ।

आर्यभाषा—दिखाई न देने का नाम लोप है ।

विशेषः—इस सूत्र में इति शब्द अर्थ का बोधक है ।

१८- लुक् १९- श्लु २०- लुप्

सूत्र— प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः १।१।६०

अनुवृत्ति— अदर्शनम्, इति ।

पदच्छेद विभक्ति—प्रत्ययस्य ६।१ वेदवत् । लुक्श्लुलुपः १।३ (वाच्वत्)

अर्थ— प्रत्ययस्य अदर्शनम् इति (संज्ञी) लुक्श्लुलुपः (संज्ञा) अध्याहारः ।

व्याख्या— प्रत्ययस्य अदर्शनस्य (अर्थस्य) लुक्श्लुलुपः संज्ञा भवन्ति ।

आर्यभाषा—प्रत्यय के अदर्शन की लुक्, श्लु, लुप् ये संज्ञायें होती हैं ।

लुक्—आदि कहकर प्रत्यय का अदर्शन होनें पर लुक्, श्लु, लुप् समझें ।

२१- टि

सूत्र— अचोऽन्त्यादि टि १।१।६३ अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद विभक्ति—अचः ६।१ (वाच्वत्) अन्त्यादि १।१ (दधिवत्) टि १।१ (दधिवत्)

समास— अन्त्य आदिर्यस्य तद्=अन्त्यादि (अन्यपदार्थत्वात् बहुव्रीहि)

अर्थ— अचः अन्त्यादि (संज्ञी) टी (संज्ञा) अध्याहारः ।

व्याख्या— शब्दस्य अचां (अचां मध्ये) यः अन्तिमोऽच् तस्य तथा तदादिशब्दरूपस्य टि संज्ञा भवति ।

आर्यभाषा—शब्द के अचों में जो अन्तिम अच्, उसकी तथा वह अच् यदि किसी हल् के आदि में हो तो उस हल् सहित अच् की टि संज्ञा होती है ।

जैसे—'राम' यहां अन्तिम अच् 'अ' है । अतः अ का नाम टि होगा ।

इसी प्रकार 'सोमसुत्' इस शब्द में अन्तिम अच् 'त्' के आदि में है अतः 'उत्' की टि संज्ञा होगी ।

२२- उपधा

सूत्र— अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा १।१।६४ । अनुवृत्ति—नहीं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदच्छेद विभक्ति—अल: ५।१ (वाचवत्) अन्त्यात् ५।१ (फलवत्) पूर्वः १।१ (देववत्) उपधा १।१ (लतावत्)

समास— नहीं।

अर्थ— अन्त्यात् अल: पूर्वः (संज्ञी) उपधा (संज्ञा) अध्याहारः।

शब्दार्थ— अन्त्यात्=अन्तिम (अल्-वर्ण) से पूर्व।

अल:— प्रत्याहार सूत्र 'अइउण्' के अ से लेकर 'हल्' के 'ल्' तक के सब वर्ण अल् प्रत्याहार से गृहीत होते हैं। अत: अल: का अर्थ अल् (वर्ण) से पूर्व।

व्याख्या— शब्दस्य अन्त्यात् अल: (वर्णात्) पूर्वस्य अल: (वर्णस्य) उपधा संज्ञा भवति।

आयभाषा—शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है॥ जैसे—'भिद्' इस शब्द में अन्तिम वर्ण 'द्' से पूर्व 'इ' वर्ण का नाम उपधा है।

२३- वृद्ध

सूत्र— वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् १।१।७२। अनुवृत्ति—नहीं

पदच्छेद-विभक्ति—

वृद्धि:	१।१	मतिवत्	यस्य	६।१	सर्ववत्
अचाम्	६।३	वाच्वत्	आदि:	१।१	हरिवत्
तत्	१।१	सर्ववत् (नपुं०)	वृद्धम्	१।१	फलवत्

समास— नहीं।

अर्थ— यस्याचामादि: वृद्धिस्तद् (संज्ञी) वृद्धम् (संज्ञा) अध्याहारः।

शब्दार्थ— यस्य=जिस (शब्द) के, अचाम्=अचों के बीच में, आदि:=आदि अच्, तद्=वह (शब्द), वृद्धि:=आ ऐ औ में से।

व्याख्या— यस्य शब्दस्य अचां मध्ये आदि: अच् वृद्धिसंज्ञको भवति स शब्दो वृद्धसंज्ञको भवति।

आर्यभाषा—जिस शब्द का आदि अच् वृद्धि होता है उस शब्द की वृद्ध संज्ञा होती है। जैसे—'ऐतिकायन:' इस शब्द में ऐ आदि अच् वृद्धि है अत: ऐतिकायन शब्द वृद्ध कहलाता है।

॥ इति प्रथम: पाद: ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगे आर्यभाषा में अर्थ लिखा जायेगा जिससे शीघ्र सिद्धि में प्रवेश हो सके। उपरि अभ्यास के फलस्वरूप समझने में कठिनता न होगी।

२४- ह्रस्व २५- दीर्घ २६- प्लुत

सूत्र— ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः। १।२।२७

अर्थ— उ, ऊ, उ३ के काल के समान काल वाले अच् क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत नामक होते हैं।

उ ऊ उ३ के काल के समान कालवाला—जैसे

	ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
अ (अच्) क्रमशः-	अ	आ	अ३
इ ,, ,,	इ	ई	इ३

इसी प्रकार सर्वत्र अचों में समझें।

ह्रस्व की एक मात्रा का परिमाण—जितने समय में अंगुष्ठ के मूल की नाड़ी एक बार धड़कती है, उतना समय माना जाता है।

दीर्घ की दुगनी होने से दो मात्रा।

प्लुत की तिगुनी होने से तीन मात्रा।

२७- उदात्त

सूत्र— उच्चैरुदात्तः। १।२।२६

अर्थ— कण्ठादि वर्णोत्पत्ति स्थानों में से ऊर्ध्व भाग से बोला जाने वाला अच् उदात्त कहलाता है।

विशेष— ऊँची ध्वनि से चिल्लाकर बोलना उदात्त नहीं।

पहचान— इसके बोलनें में कण्ठ का संकोच, शरीर में कठोरता तथा स्वर में रूक्षता होती है। (महाभाष्य)

अ इ उ आदि अक्षरों में उदात्त का कोई चिह्न नहीं होता है।

२८- अनुदात्त

सूत्र— नीचैरनुदात्तः। १।२।३०

अर्थ— कण्ठादि वर्णोत्पत्ति स्थानों में नीचे भाग से बोला जाने वाला अच् अनुदात्त कहलाता है।

विशेष— नीची ध्वनि से शनैः शनैः बोलना अनुदात्त नहीं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहचान— इसके बोलने में कण्ठ का खुलना, शरीर में शिथिलता तथा स्वर में मृदुता होती है। (महाभाष्य)

स्वर्ण वर्ण के नीचे पड़ी रेखा से अनुदात्त को प्रगट किया जाता है। जैसे— अ॒ । यहां अ के नीचे पड़ी रेखा (—) अनुदात्त स्वर का द्योतक है।

२९- स्वरित

सूत्र— समाहारः स्वरितः। १।२।३१

अर्थ— उदात्त और अनुदात्त का मेल जिस अच् में होता है वह स्वरित कहलाता है।

प्रश्न- स्वरित में कितना भाग उदात्त व कितना अनुदात्त होता है?

उत्तर- 'तस्यादित उदात्तमर्द्धह्रस्वम्' १.२.३२। =उस स्वरित के आदि में आधी मात्रा उदात्त, शेष अनुदात्त होता है।

जैसे— अ स्वरित में ½ मात्रा उदात्त शेष ½ मात्रा अनुदात्त
आ ,, ,, ½ ,, ,, १½ ,, ,,
आ३ ,, ,, ½ ,, ,, २½ ,, ,,

इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि स्वरित में पहले उदात्त तथा पश्चात् अनुदात्त बोला जाता है।

नोट--स्वरित का चिह्न वर्ण के ऊपर दिखाई देने वाली खड़ी रेखा है। जैसे— अ॑, इ॑, उ॑

ह्रस्वादि एवं उदात्तादि के अनुसार अच् के विभाग

	ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
उदात्त	अ	आ	अ३
अनुदात्त	अ॒	आ॒	अ॒३
स्वरित	अ॑	आ॑	अ॑३

इस प्रकार एक अच् के ९ भेद हुए; आगे प्रत्येक को अनुनासिक तथा निरनुनासिक भेद से विभाजित करने पर कुल मिलाकर १८ भेद हो जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	ह्रस्व		दीर्घ		प्लुत	
	सानुनासिक-	निरनुनासिक	सानु०	निर०	सानु०	निर०
उदात्त-	अँ	अ	आँ	आ	अँ३	अ३
अनुदात्त-	अँ॒	अ॒	आँ॒	आ॒	अँ॒३	अ॒३
स्वरित-	अँ॑	अ॑	आँ॑	आ॑	अँ॑३	अ॑३

इसी प्रकार अन्य अचों के भेद को भी समझें।

३०- अपृक्त

सूत्र— अपृक्त एकाल्प्रत्ययः १।२।४१

अर्थ— एक अल् अर्थात् एक वर्ण वाले प्रत्यय को अपृक्त कहते हैं। जैसे—सु का 'स्'। क्विप् का 'व्'।

३१- उपसर्जन

सूत्र— प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् १।२।४३

अर्थ— समास विधान करने वाले सूत्रों में जो प्रथमा विभक्ति वाला पद है, उसके द्वारा निर्दिष्ट (विग्रह में) पद उपसर्जन संज्ञक होता है।

जैसे:—	विग्रह	समास
	राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः

यहाँ प्रथमा विभक्त्यन्त 'षष्ठी' सूत्र से समास हुआ है अतः इसके द्वारा निर्दिष्ट 'राज्ञः' जो षष्ठ्यन्त है उसकी उपसर्जन संज्ञा हुई।

प्रश्न- उपसर्जन संज्ञा का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर- 'उपर्जनं पूर्वम्' समास में जो उपसर्जन संज्ञक पद है वह इस सूत्र से पहले बैठता है। जैसे—उपर्युक्त राजपुरुषः में पहले है।

विशेष—अधिकतर आरम्भ में पढ़ने वाला छात्र राज्ञः पुरुषः का समास करते समय 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र द्वारा 'पुरुषः' इस प्रथमान्त पद को उपसर्जन संज्ञक समझ लेता है अतः खोलकर बताया गया है। ध्यान से पढ़ें।

३२- प्रातिपदिक

सूत्र— अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् १।२।४५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— धातु और प्रत्यय को छोड़कर अर्थवान् शब्द का नाम प्रातिपदिक होता है। जैसे—वन, घन इत्यादि।

प्रश्न- धातु और प्रत्यय किनको कहते है ?

उत्तर- इन दोनों का उल्लेख, आगे ५८-५९ संख्या वाली संज्ञाओं पर किया है अतः वहीं पर देखें।

नोट—अगले सूत्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इसका अर्थ सिद्धि प्रकरण में लिखा जायेगा।

३३- परस्मैपद

सूत्र- लः परस्मैपदम् (१।४।९८)

अर्थ- लकार के स्थान पर आने वाले तिपादि प्रत्यय परस्मैपद संज्ञक होते हैं।

३४- आत्मनेपद

सूत्र— तङानावात्मनेपदम् (१।४।९९)

अर्थ— तङ् और आन प्रत्ययों का नाम आत्मनेपद है।

विशेष— यह सूत्र पूर्वसूत्र का अपवाद है; अतः तङ् और आन प्रत्यय लकार के स्थान पर आने वाले होते हुए भी आत्मनेपद संज्ञक होते हैं।

प्रश्न- तङ् किसे कहते हैं ?

उत्तर- तङ् एक प्रत्याहार है, 'तिप्तस्झि·········महिङ्' (३।४।७८) सूत्र के अन्तिम ९ प्रत्यय इससे गृहीत होते हैं।

प्रश्न- आन क्या है ?

उत्तर- शानच् और कानच् प्रत्ययों को यहां आन कहा है। इस प्रकार कुल आत्मनेपद संज्ञक प्रत्यय

त	आताम्	झ
थास्	आथाम्	ध्वम्
इट्	वहि	महिङ्
शानच्	कानच्	कुल ११

लकार के स्थान में आने वाले २२ प्रत्ययों में से उपर्युक्त ११ प्रत्ययों का नाम आत्मनेपद हो जाने पर शेष ११ परस्मैपद संज्ञक रह जाते हैं। इनको भी निम्न तालिका में देखें—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिप् तस् झि
सिप् थस् थ
मिप् वस् मस् (९) शतृ क्वसु २=११ प्रत्यय।

इसी प्रकार "तौ सत्" (३।२।१२७)=शतृ तथा शानच् प्रत्यय को सत् संज्ञक जानना चाहिए।

३५- नदी

सूत्र— यू स्त्र्याख्यौ नदी १।४।३

अर्थ— स्त्रीलिङ्ग, ईकारान्त तथा ऊकारान्त शब्दों का नाम नदी होता है।
जैसे—ईकारान्त-कुमारी, गौरी। ऊकारान्त-वधू।

नोट—"यू स्त्र्याख्यौ नदी" सूत्र से लेकर "ङिति ह्रस्वश्च" तक के सूत्र नदी संज्ञा करने वाले हैं।

३६- घि

सूत्र— शेषो घ्यसखि १।४।७

अर्थ— शेष ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्द, जिनकी नदी संज्ञा न हो वे घिसंज्ञक होते हैं सखि शब्द को छोड़कर।

जैसे—इकारान्त-मुनि, हरि। उकारान्त-गुरु, साधु इत्यादि।

नोट—'शेषो घ्यसखि' से लेकर 'पतिः समास एव' तक के सूत्र घि संज्ञा करने वाले हैं।

३७- लघु

सूत्र— ह्रस्वं लघु १।४।१०

अर्थ— ह्रस्व अक्षर का नाम लघु होता है। जैसे—अ इ उ इत्यादि ह्रस्व अक्षर लघु अक्षर कहाता है।

३८- गुरु

सूत्र— संयोगे गुरु १।४।११

अर्थ— संयोग के परे रहते ह्रस्व अक्षर का नाम गुरु होता है। जैसे—कुण्डा, इस उदाहरण में 'ण्ड्' संयोग से परे रहते ह्रस्व 'उ' का नाम गुरु होता है। दीर्घं च १।४।१२ सूत्र से दीर्घ का भी नाम गुरु होता है। जैसे—ई, ऊ, ॠ इत्यादि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९- अङ्ग

सूत्र— यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् १।४।१३

अर्थ— जिस धातु या प्रातिपदिक से प्रत्यय का विधान किया जाता है उसी विहित प्रत्यय के परे रहते उससे पूर्व का नाम अङ्ग होता है।

जैसे—भू धातु से परे क्त प्रत्यय विधान भू+क्त यहां क्त के परे रहते भू का नाम अङ्ग है।

४०- पद

सूत्र— सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१४

अर्थ— सुप् और तिङ् अन्त वाले शब्दरूप को पदसंज्ञा होती है। जैसे—राम सु=रामः, हन् तिप्=हन्ति सम्पूर्ण शब्द पद संज्ञक।

सुप्तिङन्तं पदम् से लेकर स्वादिष्वसर्वनामस्थाने १।४।१७ तक के सूत्र पदसंज्ञा करने वाले हैं।

४१- भ

सूत्र— यचि भम् १।४।१८

अर्थ— स्वौजसमौट्छष्टा·········४।१।१ से लेकर उरः प्रभृतिभ्यः कप् ५।४।१५१ तक के सारे प्रत्यय स्वादि कहलाते हैं क्योंकि सबके आदि में सु प्रत्यय है इनमें से यदि यकारादि अथवा अच् आदि प्रत्यय किसी शब्द से परे विहित हों तो वह शब्द भसंज्ञक होता है। जैसे—गर्ग+यञ् स्वादि में यकारादि है अतः गर्ग का नाम भ है।

नोटः—'यचि भम्' सूत्र से लेकर अयस्मयादीनिच्छन्दसि १।४।२० तक के सूत्र भ संज्ञा बनाने वाले हैं।

४२- कारक

क्रिया के निमित्त (आश्रय) को कारक कहते हैं। जैसे—रामः गच्छति। रामः कर्तृकारक के बिना जाने की क्रिया नहीं हो सकती। इसी प्रकार 'सोहनः पठति' यहां सोहन कर्त्ता कारक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारक के छह भेद

(१) अपादान (२) सम्प्रदान (३) करण (४) अधिकरण (५) कर्म (६) कर्त्ता।

४३- अपादान कारक

सूत्र— ध्रुवमपायेऽपादानम् १।४।२४

अर्थ— जिस स्थिर पदार्थ से किसी का पृथक् होना पाया जाये उस स्थिर पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है। जैसे— वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। यहां वृक्ष से पत्तों का अलग होना अर्थ है अतः स्थिर वृक्ष की अपादान संज्ञा होगी।

'ध्रुवमपायेऽपादानम्' से लेकर 'भुवः प्रभवः' १।४।३१ तक के सूत्र अपादान संज्ञा करने वाले हैं।

४४- सम्प्रदान

सूत्र— कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् १।४।३२

अर्थ— कर्म के द्वारा जिसको लक्षित किया जाये उस कारक का नाम सम्प्रदान होता है। जैसे—रामः ब्राह्मणाय गां यच्छति=राम ब्राह्मण को गौ देता है। यहां 'गाम्' कर्म ब्राह्मण को लक्षित करता है अतः ब्राह्मण की सम्प्रदान संज्ञा हुई।

४५- करण

सूत्र— साधकतमं करणम् १।४।४२

अर्थ— क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त साधक को करण कहते हैं। जैसे—स कुदालेन खनति=वह कुदाल से खोदता है।

यहां कुदाल खुदाई क्रिया में अत्यन्त आवश्यक साधन है सो उसकी करण संज्ञा है।

४६- अधिकरण

सूत्र— आधारोऽधिकरणम् १।४।४५

अर्थ— आधार का नाम अधिकरण होता है। जैसे—कटे शेते= चटाई पर सोता है। यहां चटाई आधार है। अतः उसकी अधिकरण संज्ञा हुई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७- कर्म

सूत्र— कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म १।४।४६

अर्थ— जो कर्त्ता को अत्यन्त इष्ट (प्रिय) है उसको कर्म संज्ञा होती है। जैसे—रामः फलं खादति=राम फल खाता है। मोहनः पुस्तकं पठति=मोहन पुस्तक पढ़ता है।

यहां फल और पुस्तक कर्त्ता को अत्यन्त प्रिय हैं अतः इनको कर्म संज्ञा हुई।

४८- कर्त्ता

सूत्र— स्वतन्त्रः कर्त्ता १।४।२४

अर्थ— क्रिया की सिद्धि में जो स्वतन्त्र है उस कारक का नाम 'कर्त्ता' है। जैसे—देवदत्तः पठति। यहां देवदत्त कर्ता है।

४९- हेतु

सूत्र— तत्प्रयोजको हेतुश्च १।४।५५

अर्थ— कर्त्ता के प्रेरक की हेतु व कर्त्ता संज्ञा होती हैं।

जैसे—देवदत्तः पाचयति=देवदत्त पकवाता है। यहां देवदत्त प्रेरक होने से हेतु संज्ञक है।

५०- निपात

सूत्र— प्राग्रीश्वरान्निपाताः १।४।५६

अर्थ— इस सूत्र से लेकर आगे 'अधिरीश्वरे' १।४।९६ में ईश्वर शब्द पढ़ा है; उससे पूर्व प्र, च, इत्यादि शब्दों का नाम निपात होता है।

५१- उपसर्ग

सूत्र— . प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे १।४।५८

अर्थ— प्रादि शब्दों को क्रिया के सम्बन्ध में निपात होते हुए उपसर्ग संज्ञा भी होती है।

प्रश्न- प्रादि कौन कौन से शब्द हैं ?

उत्तर- गणपाठ में पठित वे शब्द जिनके आदि में प्र है प्रादि कहलाते हैं। जैसे—प्रचलति। यहां प्र निपात चलति के सम्बन्ध में उपसर्ग संज्ञक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५२- गति

सूत्र— गतिश्च १।४।५६

अर्थ— प्रादि शब्द एवं 'कर्मप्रवचनीयाः' सूत्र के पहले आने वाले ऊरी आदि शब्दों का नाम गति होता है।

५३- कर्मप्रवचनीय

सूत्र— कर्मप्रवचनीयाः १।४।८२

अर्थ— 'अधिरीश्वरे' सूत्र के ईश्वर शब्द तक अनु आदि शब्दों का नाम कर्मवचनीय है।

प्रश्न— कर्मप्रवचनीय का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर— कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया २।३।८ अर्थात् कर्मप्रवचनीय-संज्ञक शब्द से युक्त (सम्बन्धित) शब्द से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—अनु अर्जुनं योद्धारः।

यहां 'अनु' कर्मवचनीय का सम्बन्ध अर्जुन शब्द के साथ होने से अर्जुन शब्द से परे द्वितीया विभक्ति होती है, इत्यादि कर्मप्रवचनीय संज्ञा के प्रयोजन हैं,

५४- संहिता

सूत्र— परः सन्निकर्षः संहिता १।४।१०८

अर्थ— वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं। अथवा वर्णों का मेल संहिता अथवा सन्धि कहलाता है। जैसे—दधि+अत्र=दध्यत्र।

५५- अवसान

सूत्र— विरामोऽवसानम् १।४।१०९

अर्थ— विराम की अवसान संज्ञा होती है। यथा—रामस्। यहां स् की अवसान संज्ञा है।

५६- आमन्त्रित

सूत्र— सामन्त्रितम् २।३।४८

अर्थ— सम्बोधन का दूसरा नाम आमन्त्रित भी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५७- सम्बुद्धि

सूत्र— एकवचनं सम्बुद्धिः २।३।४६

अर्थ— सम्बोधन के एकवचन को सम्बुद्धि कहते हैं।

५८- प्रत्यय

धातु और प्रातिपदिक से परे आनें वाले शब्दों को प्रत्यय कहते हैं। जैसे—'भू' से परे तिप् तथा 'राम' से परे सु इत्यादि आते हैं। अतः तिप् सु इत्यादि का नाम प्रत्यय है।

५६- धातु

सूत्र— भूवादयो धातवः (१।३।१)

अर्थ— भू आदि शब्दों का नाम धातु है। (यहां भू आदि शब्दों से अभिप्राय, धातु पाठ में संकलित भू, एध आदि से है।)

६०- उपपद

सूत्र— तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ३।१।६२

अर्थ— धातोः ३।१।६१ इस सूत्र से आगे सप्तमी विभक्ति वाला पद उपपद कहाता है। जैसे—कर्मण्यण्=कर्मणि ७।१ अण् १।१ यहां कर्म उपपद ऐसा जानना चाहिए।

६१- कृत्य

सूत्र— कृत्याः ३।१।६५

अर्थ— 'धातो.' से आगे ण्वुल्तृचौ ३।१।१३३ सूत्र से पहले पहले के सभी प्रत्यय कृत्यसंज्ञक होते हैं। जैसे—यत्; तव्यत्, तव्य, अनीयर् इत्यादि।

६२- कृत्

सूत्र— कृदतिङ् ३।१।६३

अर्थ— 'धातोः' सूत्र के अधिकार में अर्थात् तीसरे अध्याय की समाप्ति तक आने वाले तिङ् को छोड़कर शेष प्रत्यय कृत् संज्ञक होते हैं। जैसे—यत्, तृच्, अण् इत्यादि।

प्रश्न— कृत् और कृत्य में क्या अन्तर है ?

उत्तर— कृत् संज्ञक प्रत्ययों के अन्तर्गत आने वाले कुछ प्रत्ययों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाम कृत्य है। सारे कृत्य प्रत्यय कृत् भी हैं परन्तु सारे कृत् प्रत्यय कृत्य नहीं हैं।

६३- सार्वधातुक

सूत्र— तिङ्शित् सार्वधातुकम् । ३।१।११३
अर्थ— धातोः के अधिकार में आनेवाले तिङ् शित् प्रत्ययों का नाम सार्वधातुक है। तिङ् प्रत्याहार-तिप् से लेकर महिङ् तक, शित्-श् जिसका इत् हो। जैसे—शप्, श इत्यादि।

६४- आर्धधातुक

सूत्र— आर्धधातुकं शेषः ३।४।११४
अर्थ— जिस अवधि तक सार्वधातुक संज्ञा को है, उसमें तिङ् और शित् को छोड़कर शेष प्रत्ययों का नाम आर्धधातुक है। जैसे—यत्, ण्वुल्, तृच् इत्यादि।

६५- तद्धित

सूत्र— तद्धिताः ४।१।७६
अर्थ— तद्धिताः सूत्र से लेकर पांचवें अध्याय के समाप्ति तक के प्रत्ययों का नाम तद्धित है। जैसे—अण्, फिञ्, चफञ् इत्यादि।

६६- अभ्यास

सूत्र— पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४
अर्थ— धातु के प्रथम एकाच् अथवा द्वितीय एकाच् शब्द रूप के दो होवें पर पूर्व का नाम अभ्यास होता है।

अच्=प्रत्याहार (स्वर वर्ण)। एकाच्=एक अच् है जिसमें। जैसे—जागृ धातु के प्रथम एकाच् का दो हो जाना—जाग् जागृ। यहां पूर्व जाग् का नाम अभ्यास है।

६७- अभ्यस्त

सूत्र— उभे अभ्यस्तम् ६।१।५।
अर्थ— एकाचो द्वे प्रथमस्य इत्यादि के जो दो रूप हुए हैं उन दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का नाम अभ्यस्त होता है। जैसे—जाग्-जागृ। इन दोनों का नाम अभ्यस्त है।

६८- आम्रेडित

सूत्र— तस्य परमाम्रेडितम् ८।१।२।

अर्थ— सारे शब्दरूप के दो होनें पर, पर का नाम आम्रेडित होता है।

जैसे—पचति पचति। ग्रामः ग्रामः।
आम्रेडित। आम्रेडित।

६९- उत्तम

शब्द में यदि कम से कम तीन अच् हों तो अन्तिम अच् का नाम उत्तम है। जैसे—पञ्चभ्यः। यहां य में जो अ है उसका नाम उत्तम है।

७०- उपोत्तम

उत्तम के समीप वाले अच् को उपोत्तम कहा जाता है। जैसे—पञ्चभ्यः में च के अ का नाम उपोत्तम है।

विशेष—सभी संज्ञाओं को हृदयङ्गम कर लें। इनका अर्थों एवं सिद्धियों में प्रचुर प्रयोग होता है।

अभ्यास

१- टि तथा उपधा में क्या भेद है?

२- रामदत्त, भिद्, सोमसुत्, रामचन्द्र, देवदत्त, शब्दों की टि तथा उपधा संज्ञा लिखो।

३- अभ्यास, गति, भ, अङ्ग, पद, किसे कहते हैं। उदाहरण सहित लिखो।

४- घु, घि, नदी, उपसर्जन, अपृक्त संज्ञाओं का क्या प्रयोजन है?

५- संज्ञा व संज्ञी किसे कहते हैं?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ-प्रकरणम्
(सिद्धिप्रकरणम्)
प्रथमो भागः

(सिद्धि में उपयोगी कुछ विशेष सूत्रों के अर्थ एवं सामान्य नाम)

सूत्र-१ उपदेशेऽजनुनासिक इत् १।३।२।

अर्थ— उपदेश में अनुनासिक अच् की इत् संज्ञा होती है।

उपदेश=महर्षि पाणिनि जी की पाँच पुस्तकों में व्याख्यात अर्थात् लिखित शब्दसमूह। पाँच उपदेश—अष्टाध्यायी, उणादि-कोष, लिङ्गानुशासन, धातुपाठ, गणपाठ। अनुनासिक (ँ)

जैसे—एधँ धातु में इसी सूत्र से अँ' की इत् संज्ञा होकर 'तस्य-लोपः' १-३-९ से लोप होकर 'एध्' बन जाता है।

प्रश्न— एध में अ धातुपाठ में अनुनासिक नहीं है?

उत्तर— पूर्व एधादि धातुओं में अनुनासिक अच् पढ़े थे। अब अनु-नासिक चिह्न न दिखाई देने पर भी जिन एधादि धातुओं के अच् का सिद्ध शब्द में लोप दिखाई देता है उन अचों की 'उपदेशे...इत्' से इत् संज्ञा कर दो।

सूत्र-२ हलन्त्यम् १।३।३।

अर्थ— उपदेश में अन्तिम हल् की इत् संज्ञा होती है। हल्= प्रत्याहार।

जैसे—डुकृञ्; लूञ् में हलन्त्यम् सूत्र से ञ् इत् होकर 'तस्य लोपः' से लुप्त हो जायेगा अतः डुकृ, लू ऐसा रह जाता है।

सूत्र-३ न विभक्तौ तुस्माः १।३।४।

अर्थ— उपदेश के अन्तर्गत विभक्ति में वर्तमान तवर्ग, सकार व मकार की इत् संज्ञा नहीं होती।

तु=तवर्ग, स्=सकार, म्=मकार

उदाहरण—आत्=पञ्चमी विभक्ति के स्थान पर आदेश।

आत् { हलन्त्यम् सूत्र से इत् संज्ञा प्राप्त।
न विभक्तौ तुस्माः सूत्र से निषेध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकार इत् निषेध का उदाहरण :—

जस्—सु, औ, जस्, १।३ (जस् प्रथमा का बहुवचन है)

जस् { हलन्त्यम् से स् की इत् संज्ञा प्राप्त।
न विभक्तौ तुस्माः से निषेध।

अम्=अम् औट् शस् (अम् द्वितीया विभक्ति का एकवचन है।)

अम् { हलन्त्यम् सूत्र से म् की इत् संज्ञा प्राप्त।
न विभक्तौ तुस्माः से निषेध।

सूत्र-४ आदिर्ञिटुडवः १।३।५।

अर्थ— उपदेश में आदि ञि, टु, डु, शब्दरूप की इत् संज्ञा होती है।

उदाहरण—ञिमिदाँ धातु (धातुपाठ उपदेश में)

मिदाँ=आदिर्ञिटुडवः=ञि की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः=ञि इत् का लोप।

मिद्—उपदेशेऽजनुनासिक इत्—आँ की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः—आँ इत् का लोप।

टु इत् का उदाहरण—टुओँश्वि

टुओँश्वि { आदिर्ञिटुडवः—टु की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः—टु इत् का लोप।

श्वि { उपदेशेऽजनुनासिक इत्—ओँ की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः—ओँ इत् का लोप।

डु इत् का उदाहरण—डुकृञ्

कृञ् { आदिर्ञिटुडवः —डु की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः —डु इत् का लोप।

कृ { हलन्त्यम् —ञ् की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः —ञ् इत् का लोप।

सूत्र-५ षः प्रत्ययस्य १।३।६।

अर्थ— उपदेश में प्रत्यय के आदि में स्थित ष् की इत् संज्ञा होती है।

जैसे—ष्वुन्=शिल्पिनि ष्वुन् ३।१।१४५।

वुन् { षः प्रत्ययस्य —इत् संज्ञा
तस्य लोपः —लोप

वु { हलन्त्यम् —न् की इत् संज्ञा
तस्य लोपः —लोप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र-६ चुटू १।३।७।

अर्थ— उपदेश में प्रत्यय के आदि में स्थित चवर्ग और टवर्ग की इत् संज्ञा होती है। चु (च, छ, ज, झ, ञ)। टु=टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण)। जैसे—चवर्ग का उदाहरण—जस्

अस् { चुटू —ज् की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः —ज का लोप।

टवर्ग का उदाहरण—टा (तृतीया विभक्ति का एकवचन)

आ { चुटू —ट् की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः —उस ट् इत् का लोप।

१ ङी

प्रश्न— ङी किसे कहते हैं?

उत्तर— ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों का नाम सामान्यतया ङी होता है। ये प्रत्यय 'स्त्रियाम्' ४।१।३ के अधिकार में आते हैं। ङीप्—ऋन्नेभ्यो ङीप् (४।१।१५)
ङीष्—अन्यतो ङीष् (४।१।४)
ङीन्—शार्ङ्गरवाद्यो ङीन् (४।१।७३)

२ आप्

प्रश्न— आप् किसे कहते हैं?

उत्तर— टाप्, डाप्, चाप्, का नाम आप् है। ये तीनों प्रत्यय भी स्त्रियां (४।१।३) में आते हैं।

टाप्—अजाद्यतष्टाप् ४।१।४।
डाप्—डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ४।१।१३
चाप्—यङश्चाप् ४।१।७४

३ क्य

प्रश्न— क्य किसे कहते हैं?

उत्तर— क्यच्, क्यङ्, क्यष् का सामान्य नाम क्य है?

क्यच्—सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८
क्यङ्—कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च ३।१।११।
क्यष्—लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ३।१।१३।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकार इत् निषेध का उदाहरण :—

जस्—सु, औ, जस्, १।३ (जस् प्रथमा का बहुवचन है)

जस् { हलन्त्यम् से स् की इत् संज्ञा प्राप्त । न विभक्तौ तुस्माः से निषेध ।

अम्=अम् औट् शस् (अम् द्वितीया विभक्ति का एकवचन है ।)

अम् { हलन्त्यम् सूत्र से म् की इत् संज्ञा प्राप्त । न विभक्तौ तुस्माः से निषेध ।

सूत्र-४ आदिर्ञिटुडवः १।३।५।

अर्थ— उपदेश में आदि ञि, टु, डु, शब्दरूप की इत् संज्ञा होती है ।

उदाहरण—ञिमिदाँ धातु (धातुपाठ उपदेश में)

मिदाँ=आदिर्ञिटुडवः=ञि की इत् संज्ञा ।

तस्य लोपः=ञि इत् का लोप ।

मिद्—उपदेशेऽजनुनासिक इत्—आँ की इत् संज्ञा ।

तस्य लोपः—आँ इत् का लोप ।

टु इत् का उदाहरण—टुओँश्वि

टुओँश्वि { आदिर्ञिटुडवः—टु की इत् संज्ञा । तस्य लोपः—टु इत् का लोप ।

श्वि { उपदेशेऽजनुनासिक इत्—ओँ की इत् संज्ञा । तस्य लोपः—ओँ इत् का लोप ।

डु इत् का उदाहरण—डुकृञ्

कृञ् { आदिर्ञिटुडवः —डु की इत् संज्ञा । तस्य लोपः —डु इत् का लोप ।

कृ { हलन्त्यम् —ञ् की इत् संज्ञा । तस्य लोपः —ञ् इत् का लोप ।

सूत्र-५ षः प्रत्ययस्य १।३।६।

अर्थ— उपदेश में प्रत्यय के आदि में स्थित ष् की इत् संज्ञा होती है ।

जैसे—ष्वुन्=शिल्पिनि ष्वुन् ३।१।१४५।

वुन् { षः प्रत्ययस्य —इत् संज्ञा तस्य लोपः —लोप

वु { हलन्त्यम् —न् की इत् संज्ञा तस्य लोपः —लोप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र-६ चुटू १।३।७।

अर्थ— उपदेश में प्रत्यय के आदि में स्थित चवर्ग और टवर्ग की इत् संज्ञा होती है। चु (च, छ, ज, झ, ञ)। टु=टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण)। जैसे—चवर्ग का उदाहरण—जस्

अस् { चुटू —ज् की इत् संज्ञा। तस्य लोपः —ज का लोप।

टवर्ग का उदाहरण—टा (तृतीया विभक्ति का एकवचन)

आ { चुटू —ट् की इत् संज्ञा। तस्य लोपः —उस ट् इत् का लोप।

१ ङी

प्रश्न— ङी किसे कहते हैं ?

उत्तर— ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों का नाम सामान्यतया ङी होता है। ये प्रत्यय 'स्त्रियाम्' ४।१।३ के अधिकार में आते हैं।

ङीप्—ऋन्नेभ्यो ङीप् (४।१।१५)
ङीष्—अन्यतो ङीष् (४।१।४)
ङीन्—शार्ङ्गरवाद्यो ङीन् (४।१।७३)

२ आप्

प्रश्न— आप् किसे कहते हैं ?

उत्तर— टाप्, डाप्, चाप्, का नाम आप् है। ये तीनों प्रत्यय भी स्त्रियां (४।१।३) में आते हैं।

टाप्—अजाद्यतष्टाप् ४।१।४।
डाप्—डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ४।१।१३
चाप्—यङश्चाप् ४।१।७४

३ क्य

प्रश्न— क्य किसे कहते हैं ?

उत्तर— क्यच्, क्यङ्, क्यष् का सामान्य नाम क्य है ?

क्यच्—सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८
क्यङ्—कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च ३।१।११।
क्यष्—लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ३।१।१३।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ णि

प्रश्न— णि क्या है ?

उत्तर— णिच् और णिङ् का एक नाम णि है।

णिच्—सत्यापपाशरूपवीणा…णिच् ३।१।२५।

णिङ—कमेर्णिङ् ३।१।३०।

५ औङ्

प्रश्न— औङ् किसे कहते हैं ?

उत्तर— स्वौजसमौट्…सूत्र में आने वाले औ औट् प्रत्ययों का नाम औङ् है।

६ आङ्

प्रश्न— आङ् किसे कहते हैं ?

उत्तर— तृतीया विभक्ति के एक वचन 'टा' को आङ् कहते हैं।

द्वितीयो भागः

अब तक आपने सिद्धिविषयक कुछ सामान्य नियमों की जानकारी प्राप्त की। अब आगे सिद्धिविषयक विशेष कार्यों का व्याख्यान किया जायेगा।

सिद्धि दो भागों में की जायेगी।

१ सुबन्त   २ तिङन्त

आवश्यकतानुसार सिद्धियों के अन्तर्गत आनेवाले सूत्रों का अर्थ, सिद्धि से पूर्व अथवा पश्चात् किया जायेगा।

सुबन्त

[कृष्णः शब्द की सिद्धि करने की विधि]

(१) संज्ञा प्रकरण में बताये गये 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' १।२।४५। इस सूत्र से 'कृष्ण' शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा हुई।

(२) ङ्याप्प्रातिपदिकात् ४।१।१ इस सूत्र ने बताया कि आगे कहे जाने वाले प्रत्यय ङ्यन्त, आबन्त और प्रातिपादक से परे हों।

ङ्यन्त-ङी-अन्त वाला। आबन्त=आप्-अन्तवाला। इस सूत्र से 'कृष्ण' प्रातिपदिक से परे प्रत्यय के विधान का अधिकार प्राप्त हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३- स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्…सुप् ४।१।२

अनुवृत्ति—ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च ।

अर्थ— ङ्यन्त और प्रातिपदिक से सु आदि २१ प्रत्यय होते हैं। 'विभक्तिश्च' १।४।१०३। के सुप्त्रिक को सात विभक्तियों से बांटा जाता है।
त्रिक=तीन प्रत्ययों का एक जुट
जैसे—सु-औ-जस्। एकत्रिक

इस प्रकार पूर्व प्रदर्शित सात विभागों (विभक्तियों) को पुनः देखें।

प्रथमा विभक्ति	सु	औ	जस्
द्वितीया वि०	अम्	औट्	शस्
तृतीया वि०	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी वि०	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी वि०	ङसि	भ्याम्	भ्यस
षष्ठी वि०	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी वि०	ङि	ओस्	सुप्

प्रश्न— प्रथमा विभक्ति, द्वितोया विभक्ति आदि नाम कैसे पड़े ?

उत्तर— लोक के अनुसार पहले त्रिक भाग को प्रथमा विभक्ति दूसरे त्रिक को द्वितीया विभक्ति। इस प्रकार सब का नामकरण है किसी सूत्र से नहीं।

कृष्ण शब्द से सभी २१ प्रत्यय प्राप्त हुए। प्रत्ययः; परश्च ३।१।१-२ से ये शब्द परे होते हैं।

सूत्र— प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा २-३-४६।

अर्थ— प्रातिपदिक अर्थमात्र में लिङ्गमात्र में, तथा परिमाणमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिक अर्थमात्र में 'कृष्ण' शब्द होने से प्रथमा विभक्ति प्राप्त हुई। प्रथमा विभक्ति-सु-औ-जस्।

सूत्र— सुपः १।४।१०२।

अर्थ— सुप् का प्रत्येक त्रिक क्रमशः एकवचन, द्विवचन तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुवचन संज्ञक होता है। ऊपर से त्रीणि त्रीणि…१।४।१००
की अनुवृत्ति आ रही है। अतः एकवचन द्विवचन बहुवचन
सु औ जस्

सूत्र— द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने १।४।२२

अर्थ— दो को कहना हो तो द्विवचन एक को कहना हो तो एकवचन होता है।

कृष्ण शब्द को एकत्व में कहना है सो कृष्ण से परे 'सु' एकवचन आकर 'कृष्ण सु' बन जाता है।

'कृष्ण सु' से उपदेशेऽजनुनासिक इत् १.३.२ सूत्र से सु 'उ' की इत् संज्ञा होगी तथा 'तस्य लोपः' से इत् का लोप। शेष रहा 'कृष्ण स्'।

सूत्र— ससजुषो रुः ८।२।६६। अनुवृत्ति—पदस्य २।१।१६

अर्थ— पद के अन्त में स्थित स् के स्थान पर तथा सजुष् शब्द के अन्तिम अक्षर के स्थान पर 'रुँ' आदेश होता है।

आदेश=पूर्व स्थानी स् के स्थान पर आने वाला रुँ।
अतः 'कृष्ण रुँ' बना।

'उ' की उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इत् संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से इत् का लोप। शेष रहा—'कृष्ण र्'।

सूत्र— खरवसानयोर्विसर्जनीयः ८।३।१५।

अर्थ— खर् प्रत्याहार परे रहते व अवसान में र् के स्थान पर विसर्ग हो जाता है। जिस अक्षर पर रुकते हैं उसकी अवसान संज्ञा होती है। विसर्ग : (चिह्न) इस प्रकार अवसान रेफ के स्थान पर विसर्ग होकर कृष्णः शब्द सिद्ध हो जाता है।

सूत्र सम्मुख लिखकर कृष्णः की सिद्धि

कृष्ण=	अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (१।२।४५)	इस सूत्र से कृष्ण शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा।
कृष्ण=	ङ्याप् प्रातिपदिकात् ४।१।१	कृष्ण प्रातिपदिक से प्रत्यय प्राप्ति का अधिकार उपलब्ध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण सुप् (प्रत्याहार)=स्वौजसमौ…… (४।१।२) { कृष्ण शब्द से २१ सुंप् प्रत्यय प्राप्त

=विभक्तिश्च (१।४।१०३) { सुप् का सात विभक्तियों में विभाग

कृष्ण सुँ—औ जस् =प्रातिपदि……प्रथमा (२।३।४६) [प्रथमा विभक्ति प्राप्त ।

सुपः (१।४।१०२) (इस सूत्र से सुप् का वचनों में विभाग)

कृष्ण सुँ=द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने (१।४।२२) { एकत्व में एकवचन

=उपदेशेऽजनुनासिक इत् १।३।२) उँ की इत् संज्ञा ।

कृष्ण स्=तस्य लोपः (१।३।९) ऊँ का लोप ।

=सुप्तिङन्तं पदम् (१।४।१४) { इस सूत्र से 'कृष्ण स् की पद संज्ञा ।

=पदस्य (८।१।१६) पद के अधिकार में

कृष्ण रुँ=ससजुषो रुः (८।२।६६) स् के स्थान में रुँ आदेश ।

उपदेशेऽजनुनासिक इत (१।३।२) [रुँ के उँ की इत् संज्ञा ।

कृष्ण र्=तस्य लोपः (१।३।९) [उँ का लोप ।
=पदस्य (८।१।१६) पद के अधिकार में

कृष्ण=खरवसानयोर्विसर्जनीयः (८।३।१५) { अवसान में र् के स्थान पर विसर्ग आदेश ।

=विरामोऽवसानम् (१।४।१०९) { विराम का नाम अवसान है ।

कृष्णो

सूत्र सम्मुख लिखकर सिद्धि ।

कृष्ण=अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् १।२।४५ { इस सूत्र से कृष्ण शब्द को प्रातिपदिक संज्ञा

कृष्ण=ङ्याप्प्रातिपदिकात् (४।१।१) (कृष्ण प्रातिपदिक से प्रत्यय का अधिकार

कृष्ण सुप् (प्रत्याहार)=स्वौजसमौट्छष्टाभ्या सुप् (४।१।२) सु आदि २१ प्रत्यय प्राप्त ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण सु औ जस्=प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण—वचनमात्रे प्रथमा (२।३।४६) { इससे प्रथमा विभक्ति के तीन प्रत्यय प्राप्त

सुपः (१।४।१०२)={सूत्र द्वारा सुप् को वचनों में विभक्त करना।

कृष्ण औ=द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने (१।४।२२){दो के कहने में द्विवचन।

=संहितायाम् (६।१।७०) { संहिता के अधिकार में

=वृद्धिरेचि (६।१।८५)
=वृद्धिरादैच् (१।१।१) { कृष्ण के अ और औ दोनों के स्थान पर वृद्धि आ, ऐ, औ, तीन प्राप्त आगे 'स्थानेऽन्तरतमः' सूत्र से अ और औ का सदृशतम (अन्तरतम) औ हो गया।

इस प्रकार 'कृष्णौ' शब्द सिद्ध हुआ।

उक्त सिद्धि में प्रयुक्त सूत्रों के अर्थ :—

सूत्रः— संहितायाम् ६।१।७०।

अर्थ— इस सूत्र से आगे 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ६।१।१५२ सूत्र तक संहिता अर्थात् सन्धि का अधिकार (विषय) समझना चाहिए।

सूत्र— वृद्धिरेचि ६।१।८५।

अनुवृत्ति— आत्, एकः, पूर्वपरयोः, संहितायाम्।

अर्थ— सन्धि विषय में अवर्ण से परे 'एच्' प्रत्याहार के वर्ण हों तो दोनों पूर्व अ और पर एच् के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

जैसे कृष्ण औ=कृष्णौ। कृष्ण के अ से परे एच् प्रत्याहार में आनेवाला औ। अतः दोनों के स्थान पर वृद्धि औ हो गया।

कृष्णाः

कृष्ण=अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (१।२।४५) { सूत्र द्वारा कृष्ण शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा प्राप्त।

ङ्याप्प्रातिपदिकात् (४।१।१) प्रातिपदिक कृष्ण से प्रत्ययविधानार्थ अधिकार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण सुप्=स्वौजसमौट्……सुप् (४।१।२) { प्रातिपदिक कृष्ण से २१ प्रत्यय की प्राप्ति

=विभक्तिश्च (१।४।१०३) { से सुप् (२१) की विभक्तियों में विभक्त करना।

कृष्ण सु और जस् (प्रथमाविभक्ति)—प्रातिप्रदिकार्थलिङ्गपरिमाण वचनपात्रे प्रथमा (२।३।४६) सूत्र से कृष्ण शब्द प्रातिपदिक होनें से प्रथमा विभक्ति की प्राप्ति।

= सुपः (१।४।१०२) से सुप्त्रिक (प्रत्येक विभक्ति) को क्रमशः एक वचन द्विवचन बहुवचन में विभक्त करना।

कृष्ण जस्=बहुषु बहुवचनम् (१।४।२१) { कृष्ण शब्द को बहुत्व में कहने से बहुवचन की प्राप्ति।

=चुटू (१।३।७) जस् का 'ज्' इत्।

कृष्ण अस्=तस्य लोपः (१।३।६) ज् की इत् संज्ञात्वात् लोप।

संहितायाम् { कृष्ण का अन्त अ एवं अस् का आदि अ समीप होने से संहिता होगी।

कृष्णा स्=प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६।१।९८) { अक् (प्रत्याहार) से परे प्रथमा का अच् होवे पर दोनों के स्थान पर दीर्घ।

=पदस्य (८।१।१६) पद के अधिकार में।

कृष्णा रु=ससजुषो रुः (८।२।६६) पदान्त स् के स्थान पर रु आदेश।
उपदेशेऽजनुनासिक इत् रु के उ की इत् संज्ञा। (१।३।२)

कृष्णा र् तस्य लोपः (१।३।९) उ इत् का लोप।
पदस्य (८।१।१६) पुनः पद के अधिकार में।

कृष्णाः= खरवसानयोर्विसर्जनीयः (८।३।१५) र् अवसान में होने से विसर्ग।

सूत्रार्थ

सूत्र— बहुषु बहुवचनम् (१।४।२१)
अर्थ— बहुत्व के कहने में बहुवचन के प्रत्यय होते है।
सूत्र— प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६।१।९८)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुवृत्ति— संहितायाम्, अकः, एकः पूर्वपरयोः, दीर्घः, अचि ।
शब्दार्थ— प्रथमयोः=प्रथमा और द्वितीया विभक्ति परे रहते ।
अकः=अक् प्रत्याहार से परे ।
अर्थ— अक् से परे प्रथमा और द्वितीया विभक्ति का अच् होने पर पूर्व और पर दोनों के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश हो जाता है ।

कृष्णम्

कृष्ण= अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् {कृष्ण की प्रातिपदिक संज्ञा
ङ्याप्प्रातिपदिकात् (४।१।१) { प्रातिपदिक कृष्ण से प्रत्यय विधान अधिकार

कृष्ण सुप् (प्रत्याहार)=स्वौजमौट्...कृष्ण शब्द से २१ प्रत्यय प्राप्त
=विभक्तिश्च सुप् सात विभक्तियों में बांटा ।

कृष्ण अम् औट् शस्=कर्मणि द्वितीया २।३।२ { कर्म संज्ञा होने से कृष्ण से द्वितीया विभक्ति प्राप्त ।
=सुपः सुप् को वचनों में बांटा ।

कृष्ण अम्=द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने—एकत्व को कहने में एकवचन ।
संहितायाम्—संहिता के अधिकार में ।

कृष्णम्=अमि पूर्वः (६।१।१०३) अम् के परे रहते अम् के अ और कृष्ण के अ दोनों के स्थान पर पूर्व कृष्ण का अ हो जाता है ।

सूत्रार्थ

सूत्र— कर्मणि द्वितीया (२।३।२) । अनुवृत्ति—अनभिहिते (२।३।१)
शब्दार्थ— अनभिहिते=न कहा हुआ । जिसके अनुसार क्रियादि में परिवर्तन नहीं होता है । जैसे—रामः गच्छति । यहां राम एकवचन में है और गच्छति भी एकवचन में । रामौ ग्रामं गच्छतः । यहां राम में द्विवचन होने से तदनुसार 'गच्छतः' क्रिया में भी परिवर्तन होकर द्विवचन हो गया । परन्तु 'ग्रामं' कर्म के अनुसार परिवर्त्तन नहीं होता । अतः ग्राम कर्म अनभिहित कहलाता है ।
अर्थ— (कर्मणि) अनभिहित कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र— अमि पूर्वः (६।१।१०३)
अनुवृत्ति— संहितायाम्, एकः पूर्वपरयोः, अकः
शब्दार्थ— अमि=अम् के परे रहते ।
अर्थ— अम् प्रत्यय के परे रहते पूर्व और पर दोनों के स्थान पर पूर्व वर्ण ही आदेश हो जाता है ।

कृष्णौ

कृष्ण औट्—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात् स्वौजसमौ......सुप्, विभक्तिश्च, कर्मणि द्वितीया, सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।

कृष्ण औ हलन्त्यम् (इस सूत्र से ट् की इत् संज्ञा । तस्य लोपः; अदर्शनं लोपः ।

कृष्णौ संहितायाम्, वृद्धिरेचि; वृद्धिरादैच्, स्थानेऽन्तरतमः

सूत्रार्थ

स्थानेऽन्तरतमः (१।१।४९)=अर्थ—स्थान पर प्राप्त होने वाले आदेश अन्तरतम (सदृशतम) होते हैं ।

कृष्णान्

कृष्ण शस्—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात् स्वौजसमौट्...सुप्, विभक्तिश्च, कर्मणि द्वितीया, सुपः, बहुषु बहुवचनम्, प्रत्ययः, परश्च ।

कृष्ण अस्—लशक्वतद्धिते (१।३।८) श् की इत् संज्ञा ।
तस्य लोपः श् इत् का लोप ।
संहितायाम्—संहिता के अधिकार में ।

कृष्णास् प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६।१।९८) पूर्व अ का दीर्घ ।

कृष्णान् तस्माच्छसो नः पुंसि (६।१।९९)—दीर्घ से परे स् को न् ।

सूत्रार्थ

सूत्र— तस्माच्छसो नः पुंसि (६।१।९९)
अनुवृत्ति— पूर्वसवर्णः, दीर्घः; संहितायाम्
अर्थ— पूर्वसवर्ण दीर्घ से परे पुल्लिङ्ग में शस् के अन्तिम वर्ण स् के स्थान पर न् हो जाता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णेन

कृष्ण टा— अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौ...सुप्, विभक्तिश्च, कर्त्तृकरणयोस्तृतीया (२।३।१८) से तृतीया विभक्ति, सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च ।

कृष्ण इन—यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् (१।४।१३)
अङ्गस्य (६।४।१) अङ्ग के अधिकार में ।
टाङसिङसामिनात्स्याः (७।१।१२) } टा के स्थान पर
यथासंख्यमनुदेशः समानाम् (१।३।१०) } इन आदेश

कृष्णेन— परः सन्निकर्षः संहिता, संहितायाम्
आद्गुणः (६।१।८४) } अ और इ के स्थान पर
अदेङ्गुणः (१।१।२) } ए गुणादेश
स्थानेऽन्तरतमः

सूत्रार्थ

सूत्र— कर्त्तृकरणयोस्तृतीया (२।३।१८)

अर्थ – अनभिहित कर्त्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है ।

सूत्र – टाङसिङसामिनात्स्याः (७।१।१२)

अनुवृत्ति— अङ्गस्य, अतः

अर्थ— अकारान्त अङ्ग से परे टा, ङसि, ङस् के स्थान पर क्रमशः इन, आत्, स्य आदेश हो जाते हैं ।
अतः कृष्ण अकारान्त अङ्ग से परे टा के स्थान पर इन हुआ ।

सूत्र— यथासंख्यमनुदेशः समानाम् (१।३।१०)

शब्दार्थ— यथासंख्यम्=क्रम के अनुसार
अनुदेशः=पश्चात् आना । समानाम्=समान संख्या वालों का ।

अर्थ—समान संख्या वाले शब्दों के स्थान पर अर्थात् स्थानी और आदेशों की संख्या समान हो तो आने वाले शब्दों का क्रमशः आना होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। पहले के स्थान पर पहला, दूसरे पर दूसरा, इसी प्रकार सर्वत्र।

जैसे—टा के स्थान पर इन। ङसि के स्थान पर आत्। ङस् के स्थान पर तीसरा स्य।

कृष्णाभ्याम्

कृष्ण भ्याम्—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट्……सुप्, विभक्तिश्च, कर्त्तृकरणयोस्तृतीया, सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्णाभ्याम्—अङ्गस्य, सुपि च (७।३।१०२), ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः।

सूत्रार्थं

सूत्र— सुपि च (७।३।१०२)। अनुवृत्ति—अङ्गस्य, अतः, यञि, दीर्घः।

अर्थं— यञादि सुप् के परे रहते अदन्त (अकारान्त अङ्ग को दीर्घ होता है। यञ्=प्रत्याहार। सुप्=प्रत्याहार। भ्याम् का आदि वर्ण भ् यञ् प्रत्याहार में आता है तथा स्वौजस…… सूत्र के अन्तर्गत होनें से भ्याम् सुप् भी है। अतः इसके परे रहने पर अकारान्त कृष्ण के अन्तिम अ के स्थान पर दीर्घ हो जाता है; जैसा कि सिद्धि में दिखाया जा चुका है।

कृष्णैः

कृष्ण भिस्=अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट्…सुप्, विभक्तिश्च, कर्त्तृकरणयोस्तृतीया, सुपः, बहुषु बहुवचनम्, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्ण ऐस्=यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् (इस सूत्र से अङ्ग संज्ञा)

अङ्गस्य=अङ्ग के अधिकार में।

=अतो भिस ऐस्=भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश।

अनेकाल्शित्सर्वस्य=अनेक वर्ण वाला आदेश होने से सम्पूर्ण भिस् के स्थान पर हुआ।

कृष्णैस्=संहितायाम्, सन्धि के अधिकार में।

वृद्धिरेचि=अ से परे ऐ होने से दोनों के स्थान पर वृद्धि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानेऽन्तरतमः—सदृशतम आदेश दोनों के स्थान पर ऐ वृद्धि संज्ञक।

कृष्णैः—स् के स्थान पर विसर्ग। कृष्णाः के स् के समान।

सूत्रार्थ

सूत्र— अतो भिस ऐस् (७।१।९)। अनुवृत्ति—अङ्गस्य।
अर्थ— अकारान्त अङ्ग से परे भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश होता है।

कृष्णाय

कृष्ण ङे= अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट्··· सुप्, विभक्तिश्च, कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने, (२।३।१३) सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति। सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्ण= अङ्गस्य—अङ्ग के अधिकार में।
ङेर्यः (७।१।१२) ङे के स्थान पर य आदेश।
अनेकाल्शित् सर्वस्य (यहां य आदेश अन्त्य अल् के स्थान में नहीं अपितु सम्पूर्ण के स्थान पर)

कृष्णाय—अङ्ग के अधिकार में ही सुपि च (७।३।१०२) से सुप् परे रहते अदन्त के अ को दीर्घ।
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुप्तः से दीर्घ की परिभाषा।

सूत्रार्थ

सूत्र— ङेर्यः (६।१।1३) – अनुवृत्ति—अङ्गस्य, अतः
अर्थ— अकारान्त अङ्ग से परे ङे के स्थान पर य आदेश होता है।

कृष्णाभ्याम्

कृष्ण भ्याम्=यहां सब कार्य पूर्व प्रदर्शित कृष्णाभ्याम् ३।२ के समान होंगे, केवल 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' के स्थान पर
कृष्णाभ्याम्='चतुर्थी सम्प्रदाने' विशेष लगेगा।

कृष्णेभ्यः

कृष्ण भ्यस्=अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वौजसमौट् ·····सुप्, विभक्तिश्च, चतुर्थी सम्प्रदाने, सुपः, बहुषु बहुवचनम्, प्रत्ययः, परश्च ।

कृष्णेभ्यस्—अङ्गस्य=अङ्ग के अधिकार में ।
बहुवचने झल्येत् (७।३।१०३)=झलादि बहुवचन 'भ्यस्' के परे रहते कृष्ण के अन्तिम अ के स्थान पर 'ए' आदेश हो गया ।
सुप्तिङन्तं पदम् (१।४।१४)= सम्पूर्ण शब्द 'कृष्णेभ्यस्' की पद संज्ञा ।

कृष्णेभ्य रु—पदस्य=पद के अधिकार में ससजुषो रुः (८।२।६६) से स् को रु ।

कृष्णेभ्यर्—उपदेशेऽजनुनासिक इत् (१।३।२) उ की इत् संज्ञा ।
तस्य लोपः (१।३।९) । लोप ।
विरामोऽवसानम् (१।४।१०९) सूत्र से र् की

कृष्णेभ्यः— अवसान संज्ञा । खरवसानयोर्विसर्जनीयः (८।३।१५)

सूत्रार्थ

सूत्र— बहुवचने झल्येत् (७।३।१०३)

अनुवृत्ति—अङ्गस्य, सुपि, अतः । शब्दार्थ—एत्-एवर्ण । झलि-झल् प्रत्याहार के परे रहते ।

अर्थ— झलादि सुपि बहुवचन के परे रहते अकारान्त अङ्ग के अन्तिम वर्ण के स्थान पर एकारादेश हो जाता है ।

कृष्णात्

कृष्ण ङसि—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्,ङ्याप्प्रातिपदिकात्; स्वौजसमौट्······सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च । (२।३।२८)

सुपः; द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च ।

कृष्ण आत्—अङ्गस्य के अधिकार में—टाङसिङसामिनात्स्याः (७।१।१२) से ङसि के स्थान पर यथासंख्यमनुदेशः समानाम् के क्रम से आत् आदेश ।
संहितायाम् –संहिता के अधिकार में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णात्—अकः सवर्णे दीर्घः (६।१।९७) — अक् प्रत्याहार से परे आ (सवर्ण) परे होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ आदेश।
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः (१।२।२७) दीर्घ की परिभाषा।

सूत्रार्थ

सू०— अकः सवर्णे दीर्घः (६।१।९७)

अनुवृत्ति— अचि, एकः पूर्वपरयोः, संहितायाम्।

शब्दार्थ—सवर्णे=सवर्णीय अक्षर परे होने पर।

अर्थ— अक् प्रत्याहार से उत्तर सवर्ण अच् परे हो तो पूर्व और पर के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है।

कृष्णाभ्याम्

३।२ के समान केवल 'कर्त्तृकरणयोस्तृतीया' के स्थान पर 'अपादाने पञ्चमी' विशेष लगेगी।

कृष्णेभ्यः

कृष्णेभ्यः ४।३ की तरह केवल 'चतुर्थी सम्प्रदाने' के स्थान पर 'अपादाने पञ्चमी' विशेष लगेगा।

कृष्णस्य

कृष्ण ङस्—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट् ·· सुप्, विभक्तिश्च, षष्ठी शेषे (२।३।५०)
=कर्मादि कारकों से शेष में षष्ठी विभक्ति।
सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्णस्य =अङ्गस्य, टाङसिङसामिनात्स्याः (७।१।१२)
यथासंख्यमनुदेशः समानाम्—से ङस् के स्थान पर स्य।

कृष्णयोः

कृष्ण ओस्—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट्.........सुप्, विभक्तिश्च, षष्ठी शेषे, सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्णे ओस्—अङ्गस्य, अङ्ग के अधिकार में ओसि च (७।३।१०४) ओस् के परे रहते कृष्ण के अन्त्य अ के स्थान पर ए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण अय् ओस्—संहितायाम् संहिता के अधिकार में। एचोऽयवायावः-
एच् प्रत्याहार के स्थान पर अय् आदि आदेश हो जाते हैं।
यथासंख्यमनुदेशः समानाम् से एच्=(ए, ओ, ऐ, औ) के
स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् ये चार आते हैं।
अतः यहां ए के स्थान पर अय् आया।

कृष्णयोस्—स् को सु के स् के समान पहले रु पुनः
कृष्णयोः रु के र् को विसर्ग।

कृष्णानाम्

कृष्ण आम्—सब सूत्र ६।२ के समान लगकर केवल—'बहुषु बहुवचनम्'
भिन्न से यहां 'आम्' आता है।

कृष्ण नुट् आम्—अङ्गस्य—अङ्ग के अधिकार में।
ह्रस्वनद्यापो नुट् (७।१।५४) कृष्ण शब्द ह्रस्व अन्त वाला
होनें से आम् को नुट् आगम हुआ। आद्यन्तौ टकितौ १।१।४५
से आगम टित् आम् के आदि में आया।

कृष्ण नाम्—हलन्त्यम् से नुट् के ट् की इत् संज्ञा, उपदेशेऽजनुनासिक
इत्—उ की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः—इत् संज्ञक ट् और उ का लोप।

कृष्णानाम्—अङ्गस्य—पुनः अङ्ग के अधिकार में।
नामि—नाम् के परे रहने पर कृष्ण के अन्त्य अ के स्थान
पर दीर्घ।
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः=दीर्घ की परिभाषा।

सूत्रार्थ

सूत्र—(१) ह्रस्वनद्यापो नुट् (७।१।५४)
(नदी=दीर्घ ईकारान्त तथा दीर्घ ऊकारान्त शब्द।
आप्=टाप्, डाप्, चाप्)

अर्थ— ह्रस्वान्त, नदीसंज्ञक और आबन्त (आप् अन्त, अङ्गसंज्ञक
शब्दों से परे आम् को नुट् का आगम होता है।

सूत्र—(२) आद्यन्तौ टकितौ (१।१।४५)
(टित् ट् वर्ण जिसका इत् हो जैसे नुट्।)
(कित्—क् जिसका इत् हो जैसे वुक्।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— षष्ठी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट को टित् आगम आदि में तथा कित् आगम अन्त में होता है।

सूत्र—(३) नामि ६।१ ३

अर्थ— नाम् के परे रहते अच् प्रत्याहार जिसके अन्त में है ऐसे अङ्ग को दीर्घ हो जाता है।

जैसे—'कृष्ण' में अन्तिम 'अ' अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत है।

प्रश्न— अच् का ग्रहण कैसे किया? सूत्र व अनुवृत्ति में तो नहीं है?

उत्तर— अचश्च (१।२।२८) इस परिभाषा सूत्र से ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत शब्दों के द्वारा जहां ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत का विधान हो, वह अच् के स्थान पर होता है, ऐसा समझना चाहिये।

कृष्णे

कृष्ण ङि =अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौट्.........सुप्, विभक्तिश्च, सप्तम्यधिकरणे च (७।३।३६)
आधारोऽधिकरणम्, सुपः, द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने, प्रत्ययः, परश्च।

कृष्ण इ =लशक्वतद्धिते, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः।
=संहितायाम्, संहिता के अधिकार में।
=आद्गुणः (६।१।८४) कृष्ण के अन्तिम सवर्ण से परे इ अच् होने पर दोनों के स्थान पर गुण (अ, ए, ओ) तीनों

कृष्णे स्थानेऽन्तरतमः (१।१।४९) से सदृशतम आदेश की प्राप्ति होने से 'अ, इ' दोनों के स्थान पर 'ए' गुण आया।

कृष्णयोः

सब सूत्र ६।२ के समान लगेंगे केवल 'आधारोऽधिकरणम्' तथा 'सप्तम्यधिकरणे च' विशेष होंगे। षष्ठी शेषे के स्थान पर।

कृष्णेषु

कृष्ण सुप् =अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, स्वौजसमौ.........सुप्, विभक्तिश्च, आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च, सुपः, बहुषु बहुवचनम्, प्रत्ययः, परश्च।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्ण सु =हलन्त्यम् प् की इत् संज्ञा ।
तस्य लोपः प् इत् का लोप ।

कृष्णे सु =अङ्गस्य, अङ्ग के अधिकार में ।
बहुवचने झल्येत्, अलोऽन्त्यस्य, कृष्ण के अन्त्य 'अ' के स्थान पर 'ए'

कृष्णेषु पदस्य, इण्कोः (८।३।५७)=इण् प्रत्याहार में आने वाले 'ए' से परे आदेशप्रत्यययोः ८।३।५९ सूत्र से स् के स्थान पर ष् आदेश हुआ ।

सूत्रार्थ

सूत्र—१ इण्कोः (८।३।५७)
(इण्=प्रत्याहार । कु=कवर्ग)

अर्थ— इण् और कवर्ग से परे आगे आने वाले सूत्रों का कार्य होगा । यह अधिकार सूत्र है ।

सूक्ष—२ आदेशप्रत्यययोः (८।३।५९)

अनुवृत्ति— संहितायाम्, इण्कोः, सः, अपदान्तस्य मूर्द्धन्यः, नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ।
(आदेश—धातुपाठ में षकारादि धातुओं के आदि ष के स्थान पर 'धात्वादेः षः सः' से स् होना आदेश है ।)

अर्थ— इण् और कवर्ग से परे नुमादि का व्यवधान हो अथवा न हो तो भी आदेश के 'स्' तथा प्रत्यय के 'स्' को मूर्द्धन्य (ष्) आदेश हो जाता है ।

हे कृष्ण

कृष्ण सु सब कार्य ११ के समान केवल 'प्रातिपदि··· ··प्रथमा' के स्थान पर 'सम्बोधने च' से एकवचन में सु आया । एकवचनं सम्बुद्धिः से सु की

कृष्ण सम्बुद्धि संज्ञा 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' से सु के स् का लोप । 'अदर्शनं लोपः' लोप की परिभाषा ।

सूत्रार्थ

सूत्र— एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः (६।१।६७) । अनुवृत्ति-हल्, लोपः,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एङ्—प्रत्याहार । (सम्बुद्धि—सम्बोधन का एकवचन ६।१ में सम्बुद्धेः ।

अर्थ— एङन्त और ह्रस्वान्त से परे सम्बुद्धि के हल् का लोप हो जाता है ।

हे कृष्णौ

सब कार्य प्रथमाविभक्ति के द्विवचन के समान, केवल 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' के स्थान पर 'सम्बोधने च' विशेष लगेगा ।

हे कृष्णाः

प्रथमा विभक्ति बहुवचन की तरह 'सब कुछ, केवल 'प्रातिपदि…… प्रथमा की बजाय सम्बोधने च' विशेष लगेगा ।

कृष्ण शब्द के सब रूपों की सिद्धि के समान अकारान्त पुलिङ्ग पुरुष, राम, मोहन, देवदत्त आदि हजारों शब्दों के सभी रूपों को सिद्ध कर सकते हैं । यही पाणिनीय व्याकरण का वैशिष्ट्य है ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग फल शब्द

फलम् १।१

फल सु= कृष्ण १।१ की सिद्धि के समान सब सूत्र लगकर 'फल सु' यह बना ।

फल अम्= अङ्गस्य ६।४।१ अङ्ग के अधिकार में
अतोऽम् ७।१।२४ अकारान्त नपुंसकलिङ्ग अङ्ग से परे सु के स्थान पर 'अम्' आदेश ।

फलम्— संहितायाम्, संहिता के अधिकार में, अमि पूर्वः ६।१।१०३ । अम् के परे रहते अम् का अ व फल का अन्तिम 'अ' दोनों के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश ।

सूत्रार्थं

सूत्र— अतोऽम् (७।१।८४) । अनुवृत्ति—अङ्गस्य स्वमोर्नपुंसकात् ।

अर्थ— अकारान्त नपुंसकलिङ्ग से परे सु और अम् को अम् आदेश हो जाता है ।

सूत्र— अमि पूर्वः (६।१।१०३)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— अक् के परे आम् हो तो पूर्व पर दोनों के स्थान पर एका- देश हो जाता है।

फले १।२

फल औ—कृष्ण शब्द की प्रथमाविभक्ति द्विवचन में लगने वाले सब सूत्र लगाकर 'फल औ' बना।

फल शी—अङ्गस्य, अङ्ग के अधिकार में, नपुंसकाच्च (७।१।१९) सूत्र से औ के स्थान पर शी प्राप्त।

फल ई— लशक्वतद्धिते, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः, से श् का लोप।

फले— संहिता के अधिकार में, आद्गुणः, से अ और ई के स्थान पर गुण प्राप्त।

अदेङ्गुणः, गुण की परिभाषा।
स्थानेऽन्तरतमः से 'अ' 'ई' दोनों के स्थान पर सदृशतम गुण 'ए' प्राप्त होकर फले बना।

सूत्रार्थं

सूत्र— नपुंसकाच्च (७।१।१९)। अनुवृत्ति—औङः, शी, अङ्गस्य।

शब्दार्थ— औङः,=औ और औट् के स्थान पर

अर्थ— नपुंसक अङ्ग से परे औङ् (औ, औट्) के स्थान पर शी आदेश होता है।

फलानि १।३

फल जस्— कृष्ण शब्द प्रथमाविभक्ति बहुवचन के समान सभी सूत्र लगकर 'फल जस्'।

फल शि —अङ्गस्य—अङ्ग के अधिकार में
=जश्शसोः शिः (७।१।२०) शि आदेश शित् होने से सारे जस् के स्थान पर हुआ। 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' से।

फल नुम् शि—शि सर्वनामस्थानम् (१।१।४१) शि का नाम सर्वनामस्थान अङ्गस्य पुनः अङ्ग के अधिकार में, नपुंसकस्य झलचः (७।१।२२)
=नपुंसक लिङ्ग अजन्त को सर्वनामस्थान के परे रहते नुम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का आगम, मिदचोऽन्त्यात्परः १।१।४६ से मित् नुम् फल के अन्तिम अच् से परे बैठा।

फल न् इ =उपदेशेऽजनुनासिक इत्—नुम् के उ की इत् संज्ञा।
हलन्त्यम्—म् की इत् संज्ञा।
लशक्वतद्धिते—शि के श् की इत् संज्ञा।
तस्य लोपः—उ, म्, श् का लोप।

फलानि =अङ्ग के ही अधिकार में सर्वनामस्थान शि का इ परे रहते 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' ६।४।८ से न की उपधा फल के अन्त्य अ को दीर्घ।

सूत्रार्थ

सूत्र—१ नपुंसकस्य झलचः ७।१।७२

अनुवृत्ति— अङ्गस्य, नुम्, सर्वनामस्थाने।
(झल्=प्रत्याहार। अच्=प्रत्याहार)

अर्थ— सर्वनामस्थान के परे रहते झलन्त तथा अजन्त नपुंसक लिङ्ग अङ्ग को नुम् का आगम हो जाता है।

सूत्र—२ मिदचोऽन्त्यात्परः १।१।४६

शब्दार्थ— मित्—म् जिसका इत् है। जैसे नुम्।
अन्त्यात्—अचः=अन्तिम अच् प्रत्याहार से परे।

अर्थ— मित् आगम अन्तिम अच् से परे होता है। अतः फल के अन्त्य वर्ण 'ल' के अ से परे नुम् आया था।

प्रश्न— आगम शब्द न सूत्र में है न अनुवृत्ति में पुनः अर्थ करते समय कहां से लिया गया?

उत्तर— व्याकरण शास्त्र में टित्, कित् तथा मित् को आगम कहते हैं। यहां नुम् मित् है अतः अर्थ में इसे आगम कहा गया।

सूत्र—३ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ६।४।८

अनुवृत्ति— अङ्गस्य, नोपधायाः, दीर्घः।
सर्वनामस्थाने=शि व सुट् प्रत्याहार परे हो तो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असम्बुद्धौ=सम्बोधन का एकवचन परे न हो।
नोपधायाः=न की उपधा को।

अर्थ— सर्वनामस्थान के परे रहते नकारान्त अङ्ग की उपधा को दीर्घ हो जाता है।

आगे 'फलम् २।१ फले २।२ फलानि २।३' की सिद्धि भी प्रथमा विभक्ति के तुल्य ही है। केवल 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' के स्थान पर 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र लगेगा। तृतीया एकवचन से लेकर आगे रूपों की सिद्धि कृष्ण शब्द के समान जानें।

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग वन, धन इत्यादि अनेक शब्दों के रूपों की सिद्धि फल शब्द के समान जानें।

तिङन्तसिद्धि

[पठ धातु लट् लकार में]

पठति (प्र० ए०) प्रथमपुरुष एकवचन

सर्वप्रथम पठँ शब्द की भूवादयो धातवः (१।३।१) सूत्र से धातु संज्ञा बना लो। पुनः उपदेशेऽजनुनासिक इत्, सूत्र से उँ के अँ की इत् संज्ञा करके 'तस्य लोपः' (१।३।९) से लोप कर दो 'पठ्' यह रूप बन गया।

सूत्र— धातोः (३।१।९१) प्रत्ययः (३।१।१), परश्च (३।१।२)

अर्थ— धातु से परे प्रत्यय होता है।
इससे पठ् धातु से परे प्रत्यय विधान करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

सूत्र— वर्त्तमाने लट् (३।२।१२३)

अनुवृत्ति— धातोः, प्रत्ययः, परश्च।

अर्थ— वर्त्तमानकाल में धातु से परे लट् प्रत्यय होता है।
इससे पठ् धातु से लट् प्रत्यय आया। अतः 'पठ् लट्' यह रूप बना।
हलन्त्यम् (१।३।३) से लट् के अन्तिम ट् की इत् संज्ञा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर दोनों अ ट् का 'तस्य लोपः' १।३।९ से लोप हो गया। शेष रहा—पठ् ल्

सूत्र— लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः (३।४।६९)

अनुवृत्ति— कर्त्तरि, धातोः।

अर्थ— लकार सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य व कर्तृ वाच्य में होते हैं तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य व कर्तृरिवाच्य में होते हैं।

नोट— कर्तृ वाच्यादि तीन वाच्यों के सम्बन्ध में सातवें प्रकरण में देखें।

इस प्रकार पठ् धातु से ल् अर्थात् लकार कर्तृ वाच्य में हुआ।

प्रश्न— लकार किसे कहते हैं ?

उत्तर— लट्, लिट्, लुट् लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ् (विधि व आशीः) लुङ्, लृङ् इन दश प्रत्ययों के अन्तिम ट् और ङ् 'हलन्त्यम् (१।३।३) से तथा अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ उपदेशेऽजनुनासिक इत् (१।३।२) से इत् संज्ञक होकर 'तस्य लोपः' से लोप हो जाने पर दश (ल्) लकार रह जाते हैं। अतः इनको लकार कहते हैं।

सूत्र— लस्य (३।४।७७)। अनुवृत्ति—धातोः

अर्थ— धातु से परे विद्यमान ल् के स्थान पर आगे आने वाले तिपादि १८ प्रत्यय आदेश होते हैं।

सूत्र— तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् (३।४।७८)

अनुवृत्ति— धातोः, लस्य।

अर्थ— धातु से परे ल् के स्थान में तिप् तस् झि आदि अठारह प्रत्यय होते हैं।

९ परस्मैपद के तथा ९ आत्मनेपद के। इनकी विशेष व्याख्या पञ्चम प्रकरण (अर्थप्रकरण) में देखें।

सूत्रः— लः परस्मैपदम् (१।४।९८)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— लकार के स्थान पर आने वाले तिपादि प्रत्यय परस्मैपद संज्ञक होते हैं।

सूत्र— तङानावात्मनेपदम् (१।४।९९)

अर्थ— तङ् और आन (पूर्वप्रदर्शित) आत्मनेपद संज्ञक होते हैं।

इस प्रकार तङ् प्रत्याहार के ९ आत्मनेपद प्रत्ययों को छोड़कर शेष ९ प्रत्यय परस्मैपद संज्ञक होते हैं।

अब यहां पठ् धातु के ल् के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय हो अथवा परस्मैपद, इसका निर्णायक निम्न सूत्र है।

सूत्र—शेषात् कर्त्तरि परस्मैपदम् (१।३।७८)। अनुवृत्ति—कर्त्तरि।

अर्थ— शेष धातुओं से शुद्ध कर्त्तृ वाच्य में परस्मैपद के प्रत्यय होते हैं।

प्रश्न— शेष का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर— आत्मनेपद जिन धातुओं से किया है उनसे शेष धातुयें। पठ् धातु आत्मनेपद में नहीं है, अतः इससे परस्मैपदसंज्ञक प्रत्यय आयेंगे जो निम्न तालिका में दिखाये हैं।

पठ परस्मैपद ९

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि।	प्रथम त्रिक
मध्यम ,,	सिप्	थस्	थ।	द्वितीय ,,
उत्तम ,,	मिप्	वस्	मस्।	तृतीय ,,

सूत्र— तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः (१।४।१००)

अर्थ— तिङ् के सभी तीन तीन प्रत्ययों के एक एक जुट क्रमशः प्रथम, मध्यम, उत्तम संज्ञक होते हैं।
इससे तिङ् को प्रथमादि तीन पुरुषों में बांटा गया।

सूत्र— शेषे प्रथमः (१।४।१०७)

अर्थ— जिसके उपपद में युष्मद् अस्मद् शब्द न हो ऐसे शेष उपपद के रहने पर या न रहने पर प्रथम पुरुष होता है।

प्रश्न— उपपद किसे कहते हैं ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर— पद के समीपस्थ दूसरे पद को उपपद कहते हैं। जैसे— रामः पठति। यहां पठति के समीप वर्त्तमान 'रामः' शब्द उपपद है। एवं पठ् से परे तीन प्रथम पुरुष के प्रत्यय प्राप्त हो गए। पठ्+तिप्, तस्, झि (प्रथम पुरुष)

सूत्र— तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः (१।४।१०१)।

अनुवृत्ति—तिङः त्रीणि त्रीणि।

अर्थ— तिङ् के सभी त्रिक एक एक करने पर क्रमशः एकवचन, द्विवचन, बहुवचन संज्ञक होते हैं।

तदनुसार तिप्—एकवचन, तस् द्विवचन, और झि बहुवचन।

अब तिप् एकवचन ही धातु से परे आये इसके लिए निम्न सूत्र है।

सूत्र— द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने (१।४।२२)।

अर्थ— द्वित्व के कहने में द्विवचन एवं एकत्व के कहने में एकवचन होता है।

क्योंकि 'पठति' शब्द एकवचन में है अतः पठ् धातु से परे ल् के स्थान पर एकवचन का तिप् आयेगा।

'पठ् तिप्' यह रूप बना।

सूत्र— कर्त्तरि शप् (३।१।६८)। अनुवृत्ति—धातोः, सार्वधातुके।

अर्थ— धातु से कर्त्तृ वाच्य में सार्वधातुक के परे रहते शप् प्रत्यय होता है। अतः रूप बना—पठ्, शप्, तिप्।

तिप् सार्वधातुक प्रत्यय है। सार्वधातुक संज्ञा के विषय में संज्ञा प्रकरण में बता चुके हैं।

हलन्त्यम् (१।३।३) से 'शप्' 'तिप्' के अन्त्य प् की इत् संज्ञा 'लशक्वतद्धिते' से शप् के श् की भी इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से तीनों प् प् श् का लोप हो गया।

पठ् अ ति। शेष

इनको मिला दो बन गया पठति।

इस सिद्धि को ध्यान से पढ़कर स्मरण कर लें तथा सूत्रों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ भी समझ लें। क्योंकि इसी के आधार पर आगे तिङन्त सिद्धियों को लिखा जायेगा।

सम्मुख सूत्र लिखकर सिद्धि
पठति

पठ्— उपदेशेऽजनुनासिक इत्, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः।

पठ्— भूवादयो धातवः से पठ की धातु संज्ञा।
धातोः—धातु के अधिकार में।

पठ् लट्— वर्त्तमाने लट् (३।२।१२३) धातु से वर्त्तमान काल में लट्।
प्रत्ययः (३।१।१) लट् की प्रत्यय संज्ञा।
परश्च (३।१।२) पठ से परे प्रत्यय विधान।

पठ् ल हलन्त्यम्—ट् की इत् संज्ञा
तस्य लोपः—इत् ट् का लोप।
पठ् ल् उपदेशेऽजनुनासिक इत् ल के अ की इत् ल के अ की इत् संज्ञा तस्य लोपः श का लोप।
अदर्शनं लोपः—लोप की परिभाषा (दिखाई न देना)।

पठ् तिप्—लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ३।४।६९ से कर्त्तरि में ल्।
लस्य—ल के स्थान पर।
तिप्तस्झिसि······महिङ् (३।४।७८) ल् के स्थान पर १८ प्रत्यय। लः परस्मैपदम् (१।४।९८) १८ लादेशों का परस्मैपद नाम तङानावात्मने पदम् (१।४।९९) उक्त १८ प्रत्ययों में अन्तिम ९ प्रत्ययों का नाम आत्मनेपद। इस प्रकार पहले ९ प्रत्ययों की परस्मैपद संज्ञा रही शेषात्कर्त्तरि परस्मैपदम् (१।३।७८) शेष पठ् से परस्मैपद प्राप्त। तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्योत्तमाः (१।४।१००) तिङ् का पुरुषों में त्रिभाग। शेषे प्रथमः (१।४।१०७) सूत्र से प्रथमपुरुष=तिप्-तस्-झि प्राप्त तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः (१।४।१०१)। तीन-तीन में से एक-एक की क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन संज्ञा द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने (१।४।२२)—एकत्व में एकवचन प्रत्ययः, परश्च, प्रत्यय परे आया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पठ् शप् तिप्—तिङ्शित्सार्वधातुकम् (३।४।१४३) तिप् का नाम सार्व-
घातुक कर्त्तृरि शप् (३।१।६८) पठ् से परे शप् हुआ तिप्
सार्वधातुक के परे रहने पर।

पठ अ ति—हलन्त्यम् (१।३।३) से तिप् तथा शप् के 'प्' की एवं
लशक्वतद्धिते (१।५।८) से शप् के 'श्' की इत् संज्ञा होकर
तस्य लोप: (१।३।९) से लोप हो गया।

अदर्शनं लोप: (१।१।५९) न दिखाई देने का नाम लोप।

पठति— मिला दो। रूप सिद्ध हुआ।

पठत:

पठ् भूवादयो धातव:- पठ् की धातु संज्ञा
उपदेशेऽजनुनासिक इत्, तस्य लोप:, अदर्शनं लोप:।
से पठ के अन्तिम अ का लोप।

पठ् लट् धातो:—धातु के अधिकार में।
वर्त्तमाने लट्, प्रत्यय:, परश्च, लट् प्रत्यय आया

पठ् ल् हलन्त्यम्, उपदेशेऽजनुनासिक इत्, तस्य लोप:=से लट् के
ट् और अ का लोप।

पठ् तस् ल: कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्य:, लस्य, तिप्तस्झि·········
महिङ्, ल: परस्मैपदम्, तङानावात्मनेपदम्, शेषात् कर्त्तरि
परस्मैपदम्।
तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमा:, शेषे प्रथम:,
तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकश:,
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने=से ल् के स्थान पर द्विवचन 'तस्'
आया।

पठ् शप् तस्=तिङ्शित्सार्वधातुकम्, कर्त्तरि शप्,
से तस् सार्वधातुक के परे रहते धातु से शप् प्रत्यय आया।

पठ् अ तस्=हलन्त्यम्, लशक्वतद्धिते, तस्य लोप:,
से शप् के श् और प् का लोप हो गया।
यद्यपि 'तस्' का स् भी हलन्त्य है परन्तु 'न विभक्तौ तुस्मा:'
से उसकी इत् संज्ञा नहीं होती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पठतस्   पदस्य—पद के अधिकार में ।

पठत रु   'ससजुषो रुः' से स् के स्थान में रु आदेश ।

पठत र्   उपदेशेऽजनुनासिक इत्, तस्य लोपः से रु के उ का लोप ।

पठतः   पदस्य पुनः पद के अधिकार में सुप्तिङन्तं पदम् । पद की परिभाषा खरवसानयोर्विसर्जनीयः ८।३।१५ से अवसान र् के स्थान पर विसर्ग आदेश 'विरामोऽवसानम्' । अवसान की परिभाषा ।

इस प्रकार यह पठतः रूप सिद्ध हुआ ।

पठन्ति

पठ् शप् झि=पठति के समान सभी सूत्र लगाकर केवल द्वेयकयोर्द्विवचनैकवचने' के स्थान पर 'बहुषु बहुवचनम्' विशेष सूत्र लगाओ ।

पठ् अ झि=शप् के श् एवं प् का लोप पूर्ववत् कर लें ।

पठ् अ अन्त् इ=यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्, अङ्गस्य के अधिकार में झोऽन्तः (७।१।३) से झि के झ् को अन्त आदेश ।

पठ् अन्ति=संहितायाम् संहिता के अधिकार में

पठन्ति=   अतो गुणे—से शप् के अ और अन्ति के अ के स्थान में एक अन्ति का अ गुणादेश हुआ ।

सूत्रार्थ

सूत्र—१   झोऽन्तः (७।१।३) । अनुवृत्ति—अङ्गस्य, प्रत्ययस्य

शब्दार्थ—झः=झि परस्मैपद तथा झ आत्मनेपद के 'झ्' के स्थान पर ।

अर्थ—   अङ्ग से परे झ् के स्थान पर अन्त् आदेश होता है ।

सूत्र—२   अतो गुणे ६।१।६४

अनुवृत्ति—संहितायाम्, एकः पूर्वपरयोः, अपदान्तात्, पररूपम् ।

अर्थ—   अकार अपदान्त से परे गुण हो तो दोनों के स्थान पर पररूप गुण एकादेश हो जाता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पठसि

पठति के समान सब सूत्र लगाकर पठसि रूप सिद्ध कर लें। केवल 'शेषे प्रथमः' के स्थान पर, युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः (१।४।१०४) सूत्र भिन्न लगकर तिप् के स्थान पर सिप् आयेगा।

सूत्रार्थ

सूत्र— युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः (१।४।१०४)

अर्थ— युष्मद् शब्द उपपद में हो तथा एक अधिकरण होने पर चाहे युष्मद् का प्रयोग हो अथवा न हो, मध्यमपुरुष होता है।

जैसे—त्वं पचसि—युष्मद् उपपद का प्रयोग।
पचसि—युष्मद् उपपद का प्रयोग नहीं।

पठथः

पठ् शप् थस्—पठसि के समान सभी सूत्र लगाकर पठ् शप् थस् बना लेवें।

पठ् अ थस्—लशक्वतद्धिते, हलन्त्यम्, तस्य लोपः
अदर्शनं लोपः—से श् तथा प् का लोप

पठथः स् के स्थान पर पूर्ववत् विसर्ग करके मिला दें।

पठथ

यह मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है अतः सब कार्य पूर्ववत् होंगे केवल 'द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने' के स्थान पर 'बहुषु बहुवचनम्' लगाकर 'थ' ले आवें।

पठामि (उत्तमपुरुष एकवचन)

पठ् अ मिप् –पठति के समान सभी सूत्र लगाकर, 'शेषे प्रथमः' के स्थान पर 'अस्मद्युत्तमः' सूत्र से मिप् ले आवें।

पठ् अ मि—हलन्त्यम्, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः, से मिप् के प् का लोप हुआ।

पठ मि – पठ् में अ मिला दें।

पठामि – अङ्गस्य अङ्ग के अधिकार में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतो दीर्घो यञि (७।३।१०१) से पठ् अङ्ग के अन्तिम अकार को दीर्घ आदेश ।
अलोऽन्त्यस्य परिभाषानुसार ।
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः । दीर्घ की परिभाषा ।

सूत्रार्थ

सूत्र— अतो दीर्घो यञि (७।३।१०१)
अनुवृत्ति— अङ्गस्य, सार्वधातुके ।
अर्थ— अदन्त अङ्ग के अन्त्य अकार के स्थान पर दीर्घ हो जाता है यञादि सार्वधातुक परे रहते ।

पठावः

पठा वस्—पठामि के समान सब सूत्र लगाकर पठावस् बना लो ।
पठावः— स् को पूर्ववत् विसर्ग करो ।

पठामः

पठामः— पठावस् के समान सब सूत्रों से पठामः बनेगा केवल 'द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने' के स्थान पर 'बहुषु बहुवचनम्' से 'मस्' लाना विशेष है ।
पठ् धातु के समान वस, तप, त्यज, वद धातुओं की सिद्धि स्वयं लिखकर करें ।

इस प्रकार आपने कृष्ण तथा फल सुबन्त रूप एवं पठ् धातु के तिङन्त लट् लकार के रूपों की सिद्धि देखी । इन सिद्धियों को मस्तिष्क में सभी प्रकार से सुदृढ़ कर लेवें । इनके उपस्थित रहने से आगे की सिद्धियां कठिन नहीं पड़ेंगी ।

सुबन्त

शालीयः (शाला में होने वाला)

सर्वप्रथम

शालायां भवः=शालीयः

शालीय शब्द में छ प्रत्यय तद्धित है अतः ङ्याप्प्रातिपदिकात् (४।१।१) सूत्र से प्रत्यय प्राप्ति का अधिकार प्राप्त हुआ ।

पुनः यह निर्णय करने के लिए कि प्रत्यय 'शाला' शब्द से आये वा 'भव' से आयें—सूत्र—समर्थानां प्रथमाद्वा (४।१।८२)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— सम्बद्ध अर्थ वाले शब्दों में प्रथम सम्बन्धित शब्द से तद्धित प्रत्यय होते हैं।

इससे प्रथम 'शालायां' से परे प्रत्यय होना निश्चित हुआ। 'शालायां' शब्द सप्तमी विभक्ति एकवचन में है. अतः विभक्ति भिन्न अवस्था में इस प्रकार रखें—शाला ङि

सूत्र— तत्र भवः (४।३।५३)

अर्थ— तत्र अर्थात् सप्तमी सम्बन्धित प्रातिपदिक से भव (होने) अर्थ में यथाप्राप्त प्रत्यय होते हैं। यहां 'शाला ङि' सप्तमी सम्बन्धित भव (होने) अर्थ में है। तथा

सूत्र— वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् (१।१।७२) इस सूत्र के संज्ञा प्रकरण में किये गये अर्थानुसार 'शाला' शब्द में आदि अच् 'आ' वृद्धि होने के कारण शाला शब्द वृद्धसंज्ञक है। 'आ' का नाम वृद्धि कैसे है यह 'वृद्धिरादैच् १।१।१ सूत्र के द्वारा संज्ञाप्रकरण में बताया जा चुका है।

शाला शब्द वृद्धसंज्ञक होने से आगे निम्न कार्य होगा:—

सूत्र— वृद्धाच्छः (४।२।११३)

अर्थ— प्रथमसमर्थवृद्धसंज्ञक प्रातिपदिक से शैषिक 'तत्र जातः' आदि अर्थों में छ प्रत्यय होता है। 'तत्र भवः' सूत्र शैषिक तत्र जातादि में ही है। अतः भव अर्थ में निम्न रूप बना:—

शाला ङि छ

प्रश्न— छ परे कैसे आया ?

उत्तर— 'तद्धिताः' सूत्र का अधिकार ५।४ को समाप्ति तक होने से छ तद्धित है। तथा प्रत्ययः (३।१।१) का अधिकार भी ५।४ की समाप्ति तक होने से तद्धित कहलाने वाले शब्द प्रत्यय हुए। अतः उन्हें तद्धित प्रत्यय कहना चाहिए।

सूत्र— परश्च (३।१।२)

अर्थ— प्रत्यय परे होता है। अतः उपरिलिखित छ प्रत्यय परे आकर—शाला ङि छ रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र— कृत्तद्धितसमासाश्च (१।२।४६)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ— कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त और समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

इससे इस छ (तद्धित) प्रत्ययान्त 'शाला ङि छ' शब्द रूप की प्रातिपदिक संज्ञा हुई।

सूत्र— सुपो धातुप्रातिपदिकयोः (२।४।७१)

अर्थ— धातु और प्रातिपदिक के अवयव सुप् का लुक् हो जाता है। इससे 'शाला ङि छ' प्रातिपदिक के अवयवभूत ङि (सुप्) का लुक् हो जाता है।

सूत्र— प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः (१।१।६०)

इस सूत्र से ङि प्रत्यय के अदर्शन की लुक् संज्ञा हुई। अतः आगे शेष रहा–शाला छ–

सूत्र— अङ्गस्य (६।४।१)=अङ्ग के अधिकार में।

सूत्र— आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् (७।१।२)

अर्थ— प्रत्यय के आदि में स्थित फ आदि के स्थान पर आयनादि पाँच आदेश हो जाते हैं।

सूत्र— यथासंख्यमनुदेशः समानाम् (१।३।१०)

इस सूत्र से समानसंख्य छ् के स्थान पर इय् आदेश हो जाता है। अतः शाला ईय् अ यह रूप बना।

सूत्रार्थ

सूत्र— यचि भम् (१।४।१८) इससे शाला शब्द की भ संज्ञा हुई। जिससे सूत्र—यस्येति च (६।४।१४८)

शब्दार्थ— यस्य—इ, अ इन दो वर्णों का

ईति=अर्थात् ई (ङीपादि) परे रहते

अनुवृत्ति— अङ्गस्य (६।४।१) भस्य, लोपः, तद्धिते।

अर्थ— भ संज्ञक अङ्ग के अन्त में स्थित इवर्ण और अवर्ण का लोप हो जाता है ईकार प्रत्यय तथा तद्धित के परे रहते। अतः आगे रूप बना—शाल् ईय् अ मिला देने पर—शालीय बना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत्र— कृत्तद्धितसमासाश्च (१।२।४६) से तद्धित प्रत्ययान्त शालीय शब्द को प्रातिपदिक संज्ञा हुई ।

प्रातिपदिक संज्ञा होने पर शालीय शब्द से पूर्वप्रदर्शित कृष्ण के समान 'सु' आकर विसर्ग बना । इस प्रकार 'शालीयः' सिद्ध होता है ।

सूत्रों को सामने लिखकर 'शालीयः' की सिद्धि

शालीयः

संस्कृत में अर्थ—शालायां भवः=शालीयः ।

शाला ङि भव सु=ऊपर अर्थ में 'शालायां' शब्द सप्तम्यन्त तथा भवः शब्द प्रथमान्त है अतः यहां विग्रहावस्था में शाला से ङि, तथा भव से सु को दिखाया है ।

शाला ङि छ=अब 'ङ्याप्प्रातिपदिकात् (४।१।१) के अधिकार में प्रत्ययोत्पत्ति होगी, सो प्रत्यय 'भव' से हो वा 'शाला' से हो । इसका निर्णय तद्धिताः (४।१।७६) से अधिकृत प्रत्ययों के लिए 'समर्थानां प्रथमाद्वा' (४।१।८२) ने दिया सो प्रथम शाला शब्द से प्रत्यय प्राप्त हुआ ।

शाला ङि छ—शेषे (४।२।९१) शैषिक, तत्र भवः (४।३।५३) के अर्थ में वृद्धाच्छः (४।२।११३) से छ प्रत्यय आया, वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् (१।१।७२) वृद्धसंज्ञक की परिभाषा बताई । प्रत्ययः (३।१।१) परश्च (३।१।२) से प्रत्यय परे आया ।

शाला छ—कृत्तद्धितसमासाश्च (१।२।४६) से 'शाला ङि छ' की प्रातिपदिक संज्ञा हुई । 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः (२।४।७१) सूत्र से प्रातिपदिक के अंशभूत सुप् 'ङि' को लुक् प्राप्त हुआ । प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः (१।१।६१) से प्रत्यय के अदर्शन की लुक् संज्ञा ।

शाला ईय् अ—यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् (१।४।१३) से छ प्रत्यय के परे रहते 'शाला' की अङ्ग संज्ञा । अङ्गस्य (६।४।१) अधिकार सूत्र, आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् (७।१।२) से फ आदि प्रत्ययों के स्थान में आयन् इत्यादि आदेश, 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' (१।३।१०) ने बताया कि समसंख्यक स्थानियों की जगह समसंख्यक आदेश, क्रमशः होते हैं, सो छ को ईय् प्राप्त ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शाल् ईय् अ—'अङ्गस्य' पुनः अङ्ग के अधिकार में यचि भम् १।४।१८ से ईय से परे रहते 'शाला' को भ संज्ञा यस्येति च (६।४।१४८) से भ संज्ञक 'शाला' के अन्तिम आ का लोप अदर्शनं लोपः (१।१।५९) लोप की परिभाषा।

शालीय— मिला देनें पर 'शालीय' बना।

शालीयः—शेष कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक तो है ही अतः 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से अधिकृत सु लाकर पूर्वदर्शित कृष्ण सु के सदृश विसर्ग बना लेवें। एवं 'माला' से 'मालीय' बनावें।

नोट— इस सिद्धि को सम्यक्तया मस्तिष्क में जमा लेवें; क्योंकि समस्त तद्धितान्त शब्दों की सिद्धियां प्रायः इसी प्रकार होंगी।

तिङन्त सिद्धि—अचैषीत् (उसने चयन किया)।

धातु— चिञ् चयने।

चि— भूवादयो धातवः, हलन्त्यम्, तस्य लोपः; अदर्शनं लोपः—से चिञ् की इत् संज्ञा तथा उसका लोप।

चि लुङ्— धातोः (३।१।९१)—धातु के अधिकार में।
भूते (३।२।८४)—भूतकाल में।
लुङ् (३।२।११०)—चिञ् धातु से लुङ् प्रत्यय।
प्रत्ययः। (३।१।१) परश्च (३।१।२) प्रत्यय धातु से परे आया। लः कर्मणि च भावे च चाकर्मकेभ्यः (३।४।६९) सूत्र से कर्तृवाच्य में लुङ् लकार।

चि च्लि लुङ्—च्लि लुङि (३।१।४३)— लुङ् के परे रहते च्लि प्रत्यय।

चि सिच् लुङ्—च्लेः सिच् (३।१।४४) च्लि के स्थान में सिच् आदेश। अनेकाल्शित्सर्वस्य (१ १।५४) सारे च्लि को हुआ।

चि स् ल्— हलन्त्यम्, उपदेशेऽजनुनासिक इत्, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः—सिच् और लुङ् के अनुबन्धों का लोप।

चि स् तिप्—लस्य (३।४।७७) तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् (३।४।७८) से ल् के स्थान में तिपादि १८ प्रत्यय प्राप्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लः परस्मैदम् (१।४।९८) तङ् ल् के स्थान में आनेवाले उक्त सभी प्रत्ययों की परस्मैपद संज्ञा। इसका अपवाद तङानावात्मनेपदम् (१।४।९९) तङ् और आन की आत्मनेपद संज्ञा। इस प्रकार सूत्रस्थ १८ प्रत्ययों में पहले ९ प्रत्ययों का नाम परस्मैपद हुआ। शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् (१।३।७८) चिञ् शेष धातु से ल् के स्थान पर परस्मैपद संज्ञक प्रत्यय प्राप्त।

तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः (१।४।१००) तिङ् का पुरुषों में विभाग। शेषे प्रथमः (१।४।१०७) प्रथम पुरुष प्राप्त। तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः (१।४।१०१) तीन प्रत्ययों की एकवचन द्विवचन बहुवचन क्रमशः संज्ञायें। द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने (१।४।२२) एक के कहने में एकवचन। प्रत्ययः, परश्च, प्रत्यय परे आया।

अट् चि स् सिप्—यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् (१।४।१३) अङ्गस्य (६।४।१) अङ्ग के अधिकार में लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः (६।४।७१) आद्यन्तौ टकितौ (१।१।४५) अङ्ग को अट् का आगम आदि में हुआ।

अ चि स् ति—हलन्त्यम्, तस्य लोपः, अदर्शनं लोपः=अट् और तिप् के अन्त्य हल् ट् और प् का लोप।

अचि स् त—इतश्च (३।४।१००) ति के इ का भी लोप।

अ चि स् ईट् त्—आर्धधातुकं शेषः (३।४।११४) सिच् (स्) की आर्धधातुक संज्ञा, आर्धधातुकस्येड्वलादेः ७।२।३५ से स् को इट् आगम प्राप्त। परन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् (७।२।१०) से निषेध हुआ।

तिङ्शित् सार्वधातुकम् (३।४।११३) त् का नाम सार्वधातुक अपृक्त एकाल्प्रत्ययः (१।२।४१) से त् का नाम अपृक्त भी अस्तिसिचोऽपृक्ते (७।३।९६) आद्यन्तौ टकितौ (१।१।४५) से त् को ईट् आगम प्राप्त आदि में बैठा।

अ चि स् ई त्—हलन्त्यम्, तस्य लोपः—ईट् के ट् का लोप।

अ चै स् ई त्—पुनः अङ्गस्य, अङ्ग के अधिकार में, सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु (७।२।१) से वृद्धि प्राप्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इको गुणावृद्धी (१।१।३) इक् के स्थान में गुण वृद्धि हों। स्थानेऽन्तरतम: (१।१।४६) सदृशतम आदेश हो। वृद्धिरादैच् (१।१।१) आ ऐ औ इनका नाम वृद्धि है।

अचैषीत्—आदेश प्रत्यययो: ८।३।५९ इण्को: ८।३।५७—इण् और कवर्ग से परे प्रत्यय और आदेश के स् को ष् हो। सो यह मिला देने पर 'अचैषीत्' रूप सिद्ध हुआ।

सूत्रार्थं

सूत्र— च्लि लुङि (३।१।४३)

अर्थं— लुङ् परे रहते धातु मात्र से परे च्लि प्रत्यय होता है।

सूत्र— च्लेः सिच् (३।१।४४)

अर्थं— च्लि प्रत्यय के स्थान पर सिच् आदेश होता है।

सूत्र— लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः (६।४।७१)

अर्थं— लुङादि परे रहते अङ्ग को अट् का आगम होता है और वह उदात्त स्वर वाला होता है।

सूत्र— इतश्च (३।४।१००)

अर्थं— ङित् लकार सम्बन्धी इकार का नित्य लोप होता है। जैसे यहाँ लुङ् लकार ङित् है। उससे सम्बन्धित 'ति' के इ का लोप होगा।

सूत्र— अस्तिसिचोऽपृक्ते (७।३।९६)

अर्थं— अस् और सिजन्त अङ्ग से परे हलादि अपृक्त सार्वधातुक को ईट् का आगम होता है।

सूत्र— सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु (७।२।१)

अर्थं— परस्मैपद परे जिसके ऐसा सिच् परे हो तो इगन्त अङ्ग को वृद्धि होती है।

अनैषीत्, अजैषीत् की सिद्धि इसी प्रकार है। स्वयं लिखकर करें।

इन सिद्धियों के करने से अन्य तिङन्त रूपों की सिद्धि करने में कठिनता न होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तमप्रकरणम्

वाच्य-प्रकरणम्

संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं।

(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

१. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में कर्त्ता के अनुसार क्रिया होती है। यदि कर्त्ता एकवचन में होता है तो क्रिया भी एकवचन में होगी। कर्त्ता द्विवचन में हो तो क्रिया भी द्विवचन में तथा कर्त्ता बहुवचन है तो क्रिया बहुवचन की ही होगी।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
जैसे:—	रामः	पुस्तकं	पठति।
	रामौ	पुस्तकं	पठतः।
	रामाः	पुस्तकं	पठन्ति।

यहां कर्त्ता राम में परिवर्तन से पठति आदि क्रिया में भी परिवर्तन है।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया
रामः	पुस्तकं	पठति।
रामः	पुस्तके	पठति।
रामः	पुस्तकानि	पठति।

इन वाक्यों में कर्म परिवर्तन होने पर भी क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। ऐसे वाक्यों का नाम कर्तृरिवाच्य है।

कर्तृवाच्य में कर्त्ता की प्रधानता होती है। तदनुसार क्रिया होती है।

अभ्यास

१- कर्तृवाच्य किसे कहते हैं?

२- कर्तृवाच्य में कर्त्ता एकवचन में तथा कर्म बहुवचन में हो तो क्रिया एकवचन में होगी या बहुवचन में?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है। इस अवस्था में कर्म परिवर्तित होकर कर्त्ता बन जाता है। नये कर्त्ता (कर्म से बने कर्त्ता) में एकवचन हो तो क्रिया में भी एकवचन। नवीन कर्त्ता में द्विवचन में हो तो क्रिया भी द्विवचन में होगी एवं बहुवचन में कर्त्ता हो तो क्रिया में भी बहुवचन होगा। ऐसा सर्वत्र जानें। जैसे —

रामेण पुस्तकं पठ्यते
रामेण पुस्तके पठ्येते
रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते

(१) इन उदाहरणों में नये कर्त्ता के परिवर्त्तन से क्रिया में परिवर्त्तन स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

(२) पुरानें कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(३) क्रिया में यक् और आत्मनेपद के प्रत्यय होते हैं।

(४) नये कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

३- भाववाच्य

भाववाच्य में क्रिया न कर्त्ता के अनुसार होगी न कर्म के अनुसार, अपितु सदैव क्रिया एकवचन में होती है।

जैसे— रामेण आस्यते
रामैः आस्यते
रामाभ्याम् आस्यते

(१) भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। तदर्थ क्रिया सदा एकवचन में होती है।

(२) क्रिया में यक् और आत्मनेपद के प्रत्यय होते हैं।

(३) कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

अभ्यास

कर्त्तृवाच्य, कर्मवाच्य दोनों में अनुवाद

१- मैं पुस्तक पढ़ता हूं { अहं पुस्तकं पठामि (कर्त्तृवाच्य)
मया पुस्तकं पठ्यते (कर्मवाच्य)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२- वह ग्राम को जाता है { स ग्रामं गच्छति (कर्त्तृवाच्य) / तेन ग्रामः गम्यते (कर्मवाच्य)

३- वे सब भोजन खाते हैं { ते भोजनं खादन्ति (कर्त्तृवाच्य) / तैः भोजनं खाद्यते (कर्मवाच्य)

कर्त्तृवाच्य और भाववाच्य

कर्त्तृवाच्य— स आस्ते
भाववाच्य— तेन आस्यते } वह बैठता है।

कर्त्तृवाच्य— रामः हसति
भाववाच्य— रामेण हस्यते } राम हंसता है।

कर्त्तृवाच्य— सः स्वपिति
भाववाच्य— तेन सुप्यते } वह सोता है।

उपरि लिखित नियमों को अभ्यास में प्रदत्त वाक्यों को देखकर दृढ़ करें।

शुद्ध करें

१- मोहनः पुस्तकं पठ्यते।
२- ते विद्यालयं गम्यते।
३- रामः भोजनं क्रियते।
४- बालकः आस्यते।
५- मया कार्यं करोमि।
६- तेन ओदनं खादति।

अष्टमप्रकरणम्

स्वरप्रकरणम्

वर्णों के उच्चारण का धर्म स्वर कहलाता है। उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वर तीन होते हैं।

(१) उदात्त स्वर का कोई चिह्न नहीं होता है। जैसे—'कर्त्तव्यम्' में त का अ उदात्त है। अतः उसमें कोई चिह्न नहीं है।

(२) अनुदात्त का चिह्न नीचे पड़ी लकीर है। यथा— 'कर्त्तव्यम्' शब्द के क' के अ में नीचे अनुदात्त की लकीर विद्यमान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) स्वरित का चिह्न ऊपर खड़ी लकीर है। जैसे—कर्त्तव्यम् शब्द में य के अ के ऊपर खड़ी लकीर स्वरित चिह्नार्थ है।

किसी भी शब्द में स्वर लगाने के लिए सर्वप्रथम उदात्त या स्वरित का ज्ञान कर लें।

उदात्त या स्वरित स्वर को निम्न प्रकार से जानें—

नोट—उदात्तों को छांटने के लिए आगे उदात्त स्वरों पर (×) ऐसा चिह्न लगाया जायेगा, क्योंकि उदात्त का कोई चिह्न नहीं होता, सो केवल सरलता से ज्ञान हो एतदर्थ ही हम इसको लगायेंगे।

जैसे—कर्त्तव्यम् में त के अ के नीचे है।

सूत्र— धातोः (६।१।१५७)

अर्थ— धातु का अन्त्य अच् उदात्त होता है। यथा—पच् में अ

धातु—पच्
प्रत्यय—अति } पचति में प का अन्तिम अच् अ उदात्त है।

प्रश्न— पच् के प में स्थित अ अन्तिम अच् कैसे हुआ? पच् में तो केवल एक ही अच् है।

उत्तर— आद्यन्तवदेकस्मिन् (१।१।२०)। अर्थ—एक में भी आदि और अन्त के समान कार्य होता है। जैसे—किसी का एक ही पुत्र हो, और उससे कोई पूछे कि आपका ज्येष्ठ पुत्र कौन सा है? तो उसका यही उत्तर होगा—हमारा तो एक ही पुत्र है अतः बड़ा भी यही है और छोटा कहो तो भी यही है। इसी प्रकार यहां भी समझें। यहां पच् धातु में भी एक अच् है अतः प्रकृत सूत्र से कार्य आने पर आदिवत् भी माना जायेगा और अन्तवत् भी। चूंकि 'धातोः' सूत्र से धातु के अन्त्य अच् को उदात्त होता है। इसलिए यहां पच् में अ अन्तवत् माना गया।

सूत्र— आद्युदात्तश्च (३।१।३)।

अर्थ— प्रत्यय का आदि अच् उदात्त होता है। जैसे कर्त्तव्यम् में स्थित तव्य प्रत्यय का आदि अच् त में अ उदात्त है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु

सूत्र— अनुदात्तौ सुप्पितौ (३।१।४)। अर्थ—सुप् और पित् प्रत्यय अनुदात्त होते हैं। अतः उपर्युक्त पचति में शप् का अ और तिप् का इ अनुदात्त हैं।

सूत्र— तित्स्वरितम् (६।१।१७९)।

अर्थ— त् जिसका इत् है, उस प्रत्यय का अच् स्वरित होता है। कार्यम् में ण्यत् प्रत्यय है। सो त् इत् होने से य में अ स्वरित होगा। कार्यम्।

सूत्र— ञ्नित्यादिर्नित्यम् (६।१।१९१)।

अर्थ— ञ् और न् जिन प्रत्ययों में इत् हों ऐसे प्रत्ययों के परे रहते सम्पूर्ण शब्द का आदि (अच्) उदात्त होता है। जैसे औपमन्यवः शब्द में अञ् प्रत्यय है। ञ् इत् प्रत्यय होने से सम्पूर्ण शब्द का आदि औ (अच्) उदात्त है। औपमन्यवः।
×

इस प्रकार अष्टाध्यायी के स्वर प्रकरणस्थ सूत्रों के द्वारा एवं फिट्सूत्रपाठादि के द्वारा सर्वप्रथम उदात्त एवं स्वरित छांट लेवें। पुनः—

सूत्र— अनुदात्तं पदमेकवर्जम् (६।१।१५३)।

अर्थ— पद में एक (उदात्त या स्वरित) को छोड़कर शेष अच् अनुदात्त होते हैं। जैसे—कर्त्तव्यम्, पचति, कार्यम्, औपमन्यवः।
—×— ×—— — ×— ———

ऊपर उदाहरणार्थ प्रदर्शित शब्दों में एक उदात्त (×) व स्वरित (।) को छोड़कर शेष सब (——) पड़ी लकीर वाले अच् अनुदात्त हैं।

उदात्त से परे अनुदात्त को स्वरित होना

सूत्र— उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः (८।४।६५)

अर्थ— उदात्त से परे अनुदात्त को स्वरित हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे: —कर्त्तव्यम्, पचति, औपमन्यवः एवं इन में ऊपर प्रदर्शित अनुदात्त न रहकर स्वरित आदेश हो गया।

स्वरित से परे अनुदात्त को एकश्रुति होना

सूत्र स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम् (१।२।३९)।

अर्थ— संहिता में स्वरित से परे अनुदात्तों को एकश्रुति हो जाती है। अर्थात् स्वरित से परे अनुदात्त नहीं बोला जाता प्रत्युत स्वर भेद के बिना सब अच् बोले जाते हैं। जैसे— औपमन्यवः में म य व के अकार स्वरित से परे होने से अनुदात्त नहीं रहते।

अभ्यास

१- आद्युदात्तश्च, अनुदात्तौ सुप्पितौ, तित्स्वरितम् सूत्रों के अर्थ लिखो।

२- तीनों स्वरों के चिह्न बताओ।

३- उदात्त से परे अनुदात्त के स्थान पर क्या स्वर होता है।

४- स्वर किसे कहते हैं ?

५- स्वर कितने होते हैं हैं ?

ओ३म् शम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

संज्ञा (नाम) सूचीपत्र

संज्ञा	क्रम सं०	पृष्ठसं०
वृद्धि	१	३७
अध्याहार	१	३८
संज्ञी	१	३८
गुण	२	३८
संयोग	३	३९
अनुनासिक	४	३९
सवर्ण	५	४०
प्रगृह्यम्	६	४०
प्रकृतिभाव	६	४०
घु	७	४१
घ	८	४२
संख्या	९	४२
षट्	१०	४२
निष्ठा	११	४३
सर्वनाम	१२	४३
अव्यय	१३	४४
सर्वनाम स्थान	१४	४५
सुट्	१४	४५
विभाषा	१५	४५
सम्प्रसारण	१६	४६
लोप	१७	४६
लुक्	१८	४७
श्लु	१९	४७
लुप्	२०	४७
टि	२१	४७
उपधा	२२	४७
वृद्ध	२३	४८
ह्रस्व	२४	४९
दीर्घ	२५	४९
प्लुत	२६	४९
उदात्त	२७	४९
अनुदात्त	२८	४९
स्वरित	२९	५०
अपृक्त	३०	५१
उपसर्जन	३१	५१
प्रातिपदिक	३२	५१
परस्मैपद	३३	५२
आत्मनेपद	३४	५२
तङ्	३४	५२
आन	३४	५२
सत्	३४	५३
नदी	३५	५३
घि	३६	५३
लघु	३७	५३
गुरु	३८	५३
अङ्ग	३९	५४
पद	४०	५४
भ	४१	५४
कारक	४२	५४
उपादान	४३	५५
सम्प्रदान	४४	५५
करण	४५	५५
अधिकरण	४६	५५
कर्म	४७	५६
कर्त्ता	४८	५६
हेतु	४९	५६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

संज्ञा	क्रम सं०	पृष्ठ सं०	संज्ञा	क्रम सं०	पृष्ठ सं०
निपात	५०	५६	कृत्य	६१	५८
उपसर्ग	५१	५६	कृत्	६२	५८
प्रादि	५१	५६	सार्वधातुक	६३	५९
गति	५२	५७	आर्धधातुक	६४	५९
कर्मप्रवचनीय	५३	५७	तद्धित	६५	५९
संहिता	५४	५७	अभ्यास	६६	५९
अवसान	५५	५७	एकाच्	६६	५९
आमन्त्रित	५६	५७	अभ्यस्त	६७	५९
सम्बुद्धि	५७	५८	आम्रेडित	६८	६०
प्रत्यय	५८	५८	उत्तम	६९	६०
धातु	५९	५८	उपोत्तम	७०	६०
उपपद	६०	५८			

सिद्धि प्रथमभाग के प्रकरण में देखें

संज्ञा	क्रम सं०	पृष्ठ सं०	संज्ञा	क्रम सं०	पृष्ठ सं०
ङी	१	६३	णि	४	६४
आप्	२	६३	ओङ्	५	६४
क्य	३	६३	आङ्	६	६४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्धिपत्रम्

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०
अदशन	अदर्शनं	३	५
एङ	एङ्	५	७
वण	वर्ण	६	१
झर	झर्	८	५
ईदूदे	ईदूदेद्	१३	२२
पूर्वपरावर दक्षिोत्तर	पूर्वपरावरदक्षिणोत्तर	१४	६
त आताम्	त—आताम्	१८	१४
कत्तृभ्यः	कर्त्तृभ्यः	१९	२७
बिभक्ति	विभक्ति	२४	१५-१९
घातुलोप	धातुलोप	३३	१६
ग्रण	गुण	३८	२५
स्वर्ण संज्ञा	सवर्ण	४०	९
इतिप्रत्ययान्त	डतिप्रत्ययान्त	४२	२२
घ	घः	४२	१०
शार्ङ्गरवाद्यो ङीन्	शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्	६३	१६
अर्वंवदधातुर	अर्थवदधातु	६३	२५
स्वौजमोट्	स्वौजसमौट्	७०	११
ऊकाल···प्लुप्तः	ऊकाल···प्लुतः	७४	२१
सुपः द्वये···प्रत्ययः	पुनरुक्ति को काट दें		
परश्च		७५	२५
कर्त्तरिवाच्य	कर्त्तं वाच्य	८४	६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

S. S. Pandey

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh